तकनीकी विशेषांक

अंक : 80

जनवरी-मार्च, 1998

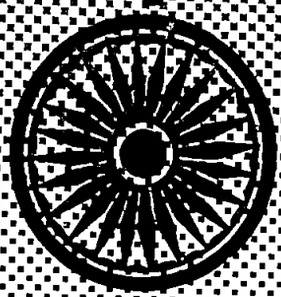

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

(31 जुलाई, 1943 को बैंकाक में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के आगमन पर स्वागत-स्वरूप आज़ाद आर्केस्ट्रा पर 'दिल्ली चलो' का गीत)

दिल्ली चलें।...दिल्ली चलें।।
दिल्ली चलें।...दिल्ली चलें।।

हिन्दुस्तां के नौजवां
कब तक रहें बेजुबां,
है आरजू उनकी अयां,
आज़ादिए हिन्दुस्तां।

वह आ गया, वह आ गया।
वह इन्कलाबी बा खुदा।

वह कांग्रेस का रहनुमा,
वह हिन्दियों का हमनवां।

वह आ गया सुभाष है,
वह हिन्दियों की आस है,
दुश्मन का अब तो नाश है,
वह आ गया सुभाष है।

आया वह पश्चिम ओर से,
गूंजा है उसने जोर से,

आगे बढ़ें ऐ नौजवां
अब समीपे हिन्दुस्तां,

आगे बढ़ें, आगे चलें,
बढ़ते चलें, बढ़ते चलें,
दुश्मन का घर उजाड़ दें,
दिल्ली पै झंडा गाड़ दें।

होगी हमारी नौजवां
आज़ादिए हिन्दुस्तां।

(" लोकशक्ति पुरूष नेता जी " पुस्तक से साभार)

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे —निराला

राजभाषा भारती

राजभाषा की त्रैमासिकी

वर्ष : 20: तकनीकी विशेषांक
अंक : 80

माघ-चैत्र, 1990 जनवरी-मार्च, 1998

□ **संपादक :**

प्रेम कृष्ण गोरावारा
निदेशक (अनुसंधान)
फोनः 4617807

□ **उप संपादक :**

नेत्र सिंह रावत
फोन : 4698054

सुरेन्द्र लाल मल्होत्रा
फोन : 4698054

□ **संपादन सहायक :**

शांति कुमार स्याल
फोन : 4698054

निःशुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

□ **पत्र-व्यवहार का पता :**

संपादक, राजभाषा भारती
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन, द्वितीय तल
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

अनुक्रम	पृष्ठ
□ संपादकीय	3
□ लेख	
1. टैक्नोलॉजी, विकास और हिंदी —डा॰ ओम विकास	5
2. तकनीकी शब्दावली विकासः मानकीकरण और प्रवर्तन —प्रो॰ सूरजभान सिंह	9
3. नागरीः एक वैज्ञानिक लिपि —डा॰ (श्रीमती) स्वर्णप्रभा अग्रहरि	13
4. कला और विज्ञान की कसौटी पर अनुवाद की परख —डा॰ अमर सिंह वधान	24
5. दूरसंचार के माध्यमों में दूरदर्शन का योगदान और हिंदी शिक्षण —डा॰ हीरालाल गुप्त	27
6. हिंदी कोश निर्माण में विदेशी विद्वानों की भूमिका —डा॰ पूरन चन्द टण्डन	30
7. पशुरोगों एवं रोगाणुओं के तकनीकी हिंदी नाम एवं उनके संक्षिप्त स्वरूप में एक रूपता की पहल —डा॰ शिव चन्द दुबे	34
8. प्रशासन की सुविधा और राजभाषा हिंदी —श्रीमती डी॰ लवण्य लवली	42
9. राष्ट्रलिपि के रूप में देवनागरी लिपि —डा॰ एस॰ जे॰ दिवाकर	45
10. राजभाषा विभाग में तकनीकी कक्ष की भूमिका —डा॰ विजय गोयल / सुरेन्द्र कुमार	48

11. वर्तमान स्थिति में अनुवाद की आवश्यकता और व्यावहारिक अनुवाद —डा॰ पुरुषोत्तम छंगाणी	51
12. तकनीकी शिक्षा में हिंदी का प्रयोग —नरेश कुमार	58
13. विज्ञान एवं तकनीकी विषयों पर हिंदी में मूल लेखन —डा॰ अशोक दत्ता	60
भाषा संगम उडिया कविता —उसका करो स्मरण भाई —मायाधर मान सिंह —विश्व के बापू —बैकुंठनाथ दास —स्नेह मूर्ति —वीर किशोर दास	63
पुस्तक समीक्षा **(इस स्तम्भ में पुस्तक के लेखक का नाम/समीक्षक का नाम पूर्वावर क्रम में दिया गया है)** संघर्ष (श्रीमती बाला शर्मा/एम॰ एल॰ मैत्रेय); संस्कृत लोकोक्ति कोश (डा॰ शशि तिवारी/प्रो॰ अवनीन्द्र कुमार); भारत में अंग्रेजीः क्या खोया क्या पाया (डा॰ तुलसी राम/डा॰ परमानन्द पांचाल); सत्यम् शिवम् सुन्दरम (डा॰ भरत मिश्र/डा॰ राम प्यारे तिवारी); बाबा कानपुरीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व (उमा शंकर मिश्र/इन्द्र सेंगर) कबिरा खड़ा बजार में (डा॰ नगेन्द्र/हरिशंकर शर्मा); नारीत्व (शान्ति कुमार स्याल/सुरेन्द्र लाल मल्होत्रा।	65
कार्यशाला	72
विविधा समाचार पुरस्कार-प्रोत्साहन कार्यालय आदेश	77

संपादकीय

"राजभाषा भारती" अंक 80 (जनवरी-मार्च, 98) नव वर्ष की शुभकामनाओं के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है। यद्यपि यह अंक तकनीकी विशेषांक के रूप में है तथापि इसमें संकलित सभी लेखों को विशुद्ध रूप से तकनीकी श्रेणी के अन्तर्गत गिनना अतिश्योक्ति ही होगी। वैसे भी राजभाषा भारती का प्रमुख उद्देश्य इसमें संकलित लेखों के माध्यम से राजभाषा हिंदी की प्रसार वृद्धि करना है।

केन्द्रीय कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग क्रमिक रूप से बढ़ रहा है। अब तकनीकी किस्म के कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को और तेजी से बढ़ाने की आवयकता है। राजभाषा विभाग इस दिशा में सक्रिय रूप से कार्यरत है।

विश्व में आज सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नित नये अविष्कार हो रहे हैं। विभिन्न कार्यों को द्रुत गति से करने के लिए तरह-तरह के सॉफ्टवेयर बनाए जा रहे हैं। विकसित देश इन सॉफ्टवेयरों को अपनी-अपनी भाषाओं में ही बना रहे हैं। इससे विश्व में सूचना क्रांति का प्रादुर्भाव हुआ है। भारत भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं है। भारतीय वैज्ञानिक भी अपनी प्रतिभा का परिचय समय-समय पर देते रहे हैं। इन वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम के फलस्वरूप ही सुपर कंप्यूटर यानि "परम" का निर्माण संभव हुआ है। अब अनेक केन्द्रीय कार्यालयों का कंप्यूटरीकरण हो चुका है। इससे आम जनता भी लाभान्वित हुई है।

राजभाषा हिंदी की श्रीवृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि कंप्यूटरों पर हिंदी में भी काम किया जाए। हिंदी में कार्य करने के अनेक साफ्टवेयर उपलब्ध हैं। इतना ही नहीं प्रबोध स्तर की हिंदी भी कंप्यूटर से सीखी जा सकती है। राजभाषा विभाग अधिकारियों/कर्मचारियों को कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था भी करता है।

किसी भी देश का प्रौद्योगिकी विकास उसकी भाषा पर निर्भर करता है। प्रौद्योगिकी, विकास और भाषा अन्योन्याश्रित हैं। उन्नत प्रौद्योगिकी का लाभ जन-जन तक पहुंचाने के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है जो सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली व समझी जाती हो। इस संबंध में विकास और

भाषा, हिंदी के लिए टेक्नोलोजी, विकास, आर्थिक विकास में हिंदी की उपादेयता आदि का विवेचन 'टेक्नालॉजी, विकास और हिंदी' शीर्षक लेख में किया गया है।

प्रौद्योगिकी का स्वरूप जैसे-जैसे उन्नत होता जाता है, उसके लिए नए-नए पारिभाषिक शब्द भी स्वतः ही निर्मित होते जाते हैं, लेकिन यह तभी संभव होता है जब प्रौद्योगिकी विशेष के लिए उसी देश की भाषा में पारिभाषिक शब्द निर्मित किया गया हो जिस देश में मूल रूप से प्रौद्योगिकी की उत्पत्ति हुई है। दूसरे देशों को अपनी भाषा की प्रकृति के अनुकूल इन पारिभाषिक शब्दों के लिए नए शब्द गढ़ने पड़ते हैं। शब्दावली निर्माण-प्रक्रिया एवं उसके मूल्यांकन आदि का विवेचन वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग के पूर्व अध्यक्ष, प्रो॰ सूरजभान सिंह ने अपने लेख "तकनीकी शब्दावली विकास मानकीकरण और प्रवर्तन" में किया है। इसके अलावा नागरी लिपि, अनुवाद, हिंदी कोश निर्माण आदि लेखों में भी संबंधित लेखकों द्वारा उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सामग्री संजोयी गई है।

इस बार "भाषा संगम" स्तम्भ के अन्तर्गत उड़िया कविताएं दी गई हैं। 'पुस्तक समीक्षा' तथा 'विविधा स्तम्भों' के अन्तर्गत संकलित सामग्री से भी पाठक लाभान्वित होंगे, ऐसी हमें आशा है।

—प्रेमकृष्ण गोरावारा

टैक्नोलॉजी, विकास और हिन्दी

—डॉ॰ ओम विकास

अधिसंख्य भारतीय लोकभाषा हिन्दी समझते हैं। अन्तर्प्रांतीय व्यापार में भी हिन्दी का व्यवहार सहज रूप से होता है। हिन्दी राजभाषा भी है। टेक्नोलॉजी, विकास, और भाषा अन्योन्याश्रित हैं। एक दूसरे को संवर्धित करते हैं। टेक्नोलॉजी आर्थिक विकास का इंजिन है; उदार अर्थव्यवस्था में व्यापार की गति समाज की लोकभाषा के माध्यम से ही बढ़ती है क्योंकि उपभोक्ता पर पकड़ लोकभाषा में ही आसान है; आर्थिक विकास होने पर भाषा के प्रति अनुराग प्रबल होता है क्योंकि उसी से अस्मिता का अनुभव होता है और उन्मुक्त अभिव्यक्ति का परिवेश मिलता है। लोकभाषा हिन्दी के विकास और संवर्धित अनुप्रयोग में उपयुक्त भाषा टैक्नोलॉजी की उपलब्धता भी आवश्यक है। सूचना टेक्नोलॉजी के सतत् बढ़ते आयामों में लोकभाषा हिन्दी के प्रयोग की अनेक संभावनाएं हैं जिन्हें योजनाबद्ध प्रयासों से साकार बनाने और इसके लाभ जन सामान्य तक पहुंचाने की नितांत आवश्यकता है। उपयुक्त भाषा टेक्नोलॉजी के विकास, सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों में प्रयोग-संवर्धन और टेक्नोलॉजी अनुरक्षण आदि कार्यों की पहल करने और समन्वयन के लिए 'राजभाषा टैक्नोलॉजी परिषद्' जैसी स्वायत्त संस्था का गठन आवश्यक है।

1. विकास और भाषा

भौतिक विकास की दृष्टि से 19 वीं सदी महत्वपूर्ण है। इस सदी के पूर्वार्द्ध में औद्योगिक क्रांति और उत्तरार्द्ध में सूचना क्रांति ने विकास की प्रक्रिया को उत्तरोत्तर तीव्रतर किया। रोटी, कपड़ा और मकान की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करते हुए जन सामान्य का जीवन स्तर सुधारने के उद्देश्य से नव-नवीन टेक्नोलॉजी का विकास हुआ, धीरे-धीरे टेक्नोलॉजी पर आधारित व्यापार बढ़ा। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भी वृद्धि हुई। टेक्नोलॉजी और श्रेष्ठ उत्पादों के साथ देश और भाषा को भी प्रसिद्धि मिली।

टेक्नोलॉजी, विकास और भाषा अन्योन्याश्रित बनते गए हैं। टेक्नोलॉजी से विकास की प्रक्रिया तेज हुई। लोकभाषा का प्रयोग बढ़ा। उपभोक्ताओं को लुभाने वाले जनभाषाई विज्ञापन बढ़ने लगे। व्यापार की गति बढने पर लोकभाषा-प्रयोग की गति भी बढ़ती है। ऐसी स्थिति में जिस भाषा के लिए आधुनिक टेक्नोलॉजी विकसित होती है, उस भाषा का प्रयोग अधिक तेज गति से बढ़ता है, और उस भाषा में तकनीकी साहित्य सृजन भी विपुल होता है। लोकभाषा के लिए आधुनिक सूचना टेक्नोलॉजी का अभाव होने पर टेक्नोलॉजी-जन्य विकास की प्रक्रिया में जन सामान्य की भागीदारी अपेक्षाकृत कम रहती है। कई विकासशील देशों में ऐसी स्थिति है। जापान, जर्मनी, फ्रांस जैसे विकसित देशों में उनकी अपनी भाषाओं के लिए उपयुक्त सूचना टेक्नोलॉजी का विकास किया गया; इससे विनिर्माण, व्यापार, विज्ञापन, प्रशिक्षण आदि क्षेत्रों में उनकी भाषाओं का प्रयोग बढ़ा। इन देशों से टोक्नोलॉजी लेने और व्यापार बढ़ाने की लालसा में जापानी, जर्मनी, फ्रांसिसी भाषाओं को सीखने की होड़ दूसरे देशों में होने लगी।

भारत में 18 संविधान स्वीकृत भाषाएं हैं। देवनागरी लिपि में लिखी जानी वाली हिन्दी राजभाषा है। हिन्दी देश के अधिकांश भू-भाग पर समझी जाती है, और विदेशों में बसे भारतीय प्रवासियों के बीच भी प्रायः हिन्दी का ही प्रचलन होता है। पाकिस्तान, नेपाल, बंगलादेश जैसे पड़ोसी देशों में भी हिन्दी में बातचीत सुगम है। स्वतंत्रता के पूर्व ब्रिटिश प्रशासन में अंग्रेजी को प्रश्रय मिला। अंग्रेजी छोटे से शासक वर्ग की भाषा और हिन्दी विशाल शासित वर्ग की भाषा बनी। 'जड़ता सिद्धान्त' के कारण स्वतंत्रता के बाद भी प्रशासन ने अपने को जन सामान्य से पृथक रखा और अंग्रेजी को चलाए रखना आसान समझा। 1990 के दशक में मुक्त अर्थव्यवस्था की सरकारी नीति के कारण प्रशासन का शासकीय शिकंजा कुछ ढीला पड़ा है। व्यापार के अवसर बढ़े हैं। स्वदेशी और विदेशी

कम्पनियों के बड़े-बड़े विज्ञापनों में रोमन में ही सही लेकिन हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है। यह सुखद प्रारम्भ है।

2. हिन्दी के लिए टेक्नोलॉजी विकास

हिन्दी में टंकण की सुविधा के लिए रेमिंगटन और गोदरेज के टाइपराइटर प्रचलित हुए। इसके बाद इलेक्ट्रो-मैकेनीकल टेलीप्रिंटर भी देवनागरी में बनाए गए। कुंजीपटल का डिजायन मानकीकृत किया गया। 1980 के दशक में कम्प्यूटर, इलेक्ट्रानिक टेलीप्रिंटर, इलेक्ट्रानिक टाइपराइटर का प्रयोग बढ़ने लगा। भारत सरकार ने इस दिशा में पहल की और इन उपकरणों में हिन्दी का प्रयोग संभव बनाने के उद्देश्य से आवश्यक टेक्नोलॉजी का विकास करवाया। टाइपराइटर, टेलीप्रिंटर और कम्प्यूटर के कुंजीपटल डिजाइन किए गए; प्रोग्रामन में आगम-निर्गम हिन्दी में सम्भव हो सका। इलेक्ट्रॉनिक टेलीप्रिंटर और कम्प्यूटर के लिए ग्राफिक फोनेटिक और फोनो-ग्राफिक कुंजीपटल के डिजायन मानीकृत (1986: पुनरीक्षण 1989) किए गए। प्रचलित टाइपराइटर और टंकणकर्त्ताओं के प्रशिक्षण को ध्यान में रखते हुए ग्राफिक कुंजीपटल को प्रस्तावित किया गया, साथ ही देवनागरी की वैज्ञानिकता को ध्यान में रखकर फोनेटिक (ध्वन्यात्मक) और फोनो-ग्राफिक कुंजीपटल प्रस्तावित किए गए। संचार के लिए अंग्रेजी के प्रचलित 7-बिट (आस्की) कोड के साथ हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए कोड का मानकीकरण किया गया। इस प्रकार 8-बिट बाइट से अंग्रेजी के साथ एक भारतीय भाषा को संकेतित किया जा सकता है। सभी भारतीय भाषाओं की लिपियां ध्वन्यात्मक हैं और उनकी वर्णमाला देवनागरी वर्ण क्रम में हैं। कुछेक में एक-दो स्वर और/अथवा एक-दो व्यंजन ध्वनियां अधिक हैं; तमिल में क च ट त प वर्गों में प्रत्येक वर्ग में पांच के स्थान पर प्रथम और अन्तिम केवल दो वर्ण हैं। सभी भाषाओं की अतिरिक्त ध्वनियों को मिलाकर बृहत्तर देवनागरी वर्णमाला में 15 स्वर, अनुस्वार, विसर्ग और 38 व्यंजन हैं। हिन्दी में 11 स्वर, अनुस्वार, विसर्ग और 33 व्यंजन प्रयुक्त होते हैं।

ग्राफिक कुंजीपटल में कुछ अर्धाक्षरों को भी स्थान दिया गया है। इलेक्ट्रॉनिक कुंजीपटल में स्वरों को बायीं ओर और व्यंजनों को दायीं ओर रखने से कुंजीपटल साफ सुथरा बन गया है, सीखने और प्रयोग में आसान है; कुंजी संयोजन करते समय अक्षर-प्रयोग की आवृत्ति का और वर्ण-समूह में समीपता का ध्यान रखा गया है। इस प्रकार सभी भाषाओं के लिए एक समान कुंजीपटल, एक समान सूचना एवं संचार कोड का विकास किया गया। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इसकी पहल भारत सरकार के इलेक्ट्रानिकी विभाग ने की और सहयोग दूर संचार, राजभाषा विभाग और मानक ब्यूरो से मिला।

औद्योगिक क्रांति में मशीनों के प्रयोग से उत्पादकता बढ़ी, गुणवत्ता में एकरूपता आ सकी। व्यापार की गति बढ़ी। 1947 में ट्रांजिस्टर, 1971 में माइक्रोप्रोसेसर के विकास से कम्प्यूटर का आकार छोटा और गणना शक्ति बहु गणित होने लगे। छोटे और अधिक शक्तिशाली कम्प्यूटर का प्रचलन व्यापार, शिक्षा, कार्यालयों आदि अनेक क्षेत्रों में तेजी से होने लगा। कम्प्यूटर संबंधी रोजगार के अवसर भी तेजी से बढ़े हैं। कम्प्यूटर में हिन्दी-प्रयोग की बढ़ती सम्भावनाओं को ध्यान में रखकर इलेक्ट्रानिकी विभाग ने 'भारतीय भाषाओं के लिए टेक्नोलॉजी विकास' नामक परियोजना के अन्तर्गत कई प्रोजेक्ट शुरू किए हैं। इन पर लगभग 4 करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता दी गई है। कुछ प्रमुख प्रोजेक्ट हैं—

(क) मशीनी अनुवादः शब्द संहिता एवं अनुवाद-सॉफ्टवेयर

तमिल, तेलुगू, संस्कृत में लगभग 30 लाख शब्दों की संहिता (कार्पस), उर्दू व कश्मीरी में लगभग 10 लाख शब्दों की कार्पस, हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी में भी संहिताओं का विकास प्रगति पर है। सिंधी और कोंकणी के लिए भी कार्य शुरू हो गया है।

भारतीय भाषाओं के बीच मशीनी अनुवाद का विकास कार्य तेजी से हो रहा है। कन्नड़-हिन्दी के बीच 'अनुसारक' अनुवाद सॉफ्टवेयर तैयार हैं। हिन्दी और अन्य दक्षिणी भाषाओं,-जैसे तमिल, तेलुगु, मलयालम के बीच भी अनुवाद सॉफ्टवेयर का विकास आईआईटी तथा कानपुर और हैदराबाद वि॰वि॰ में संयुक्त रूप से किया जा रहा है तथा अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद प्रणाली NCST, में समाचार पत्रों की कहानियों के लिए और C-DAC पुणे में प्रशासनिक सामग्री के लिए किया जा रहा है। 'आंग्ल-भारती' अनुवाद प्रणाली का विकास आईआईटी, कानपुर में किया गया जिसका व्यावसायिकीकरण ER&DC नोएडा में किया जा रहा है।

(ख) मानव-मशीन इंटरफेस प्रणालियां:

सी-डैक, पुणे में देवनागरी में मुद्रित पाठ के लिए OCR (प्रकाशकीय अक्षर पहचान) प्रणाली का विकास किया जा रहा है।

बोलचाल की हिन्दी के लिए 700 शब्दों का वाक् डेटाबेस CEERI, दिल्ली में विकसित किया गया है।

(ग) कम्प्यूटर की सहायता से अधिगम एवं शिक्षण

हिन्दी एवं संस्कृत के लिए कम्प्यूटरेन अधिगम शिक्षण सॉफ्टवेयर का विकास C-DAC पुणे, जवाहर लाल नेहरु वि॰वि॰ दिल्ली और संस्कृत संस्थान मेलकोटे में किया गया है।

(घ) भाषा संसाधन में शोध

ज्ञान संसाधन के लिए संस्कृत में पाणिनि के व्याकरण, शब्द बोध आदि पर अन्वेषणात्मक कार्य किए जाने की आवश्यकता है। संस्कृत के न्याय, मीमांसा, व्याकरण और निर्वचन पर दो प्रोजेक्ट चल रहे हैं।

(ङ) भाषा संसाधन में अध्यापक प्रशिक्षण

तीन वर्षों में 7 केन्द्रों में 500 से अधिक भाषाविदों एवं भाषा शिक्षकों को भाषा संसाधन में प्रशिक्षित किया जा चुका है।

3. आर्थिक विकास में हिन्दी की उपादेयता

हिन्दी के लिए उपयुक्त सूचना टैक्नोलॉजी का विकास तो किया जा चुका है और किया जा रहा है। फिर भी विचारणीय है कि वर्तमान संदर्भ में हिन्दी-प्रयोग संवर्धन तीव्रतर कैसे हो, और देश के आर्थिक विकास में हिन्दी की उपादेयता कैसे बढ़ायी जाये।

इस संदर्भ में जापान का उदाहरण देना उपयुक्त होगा। आज जापान आर्थिक शक्ति के रूप में उभर चुका है। जापान में अंग्रेजी का प्रयोग कार्य-व्यवहार में नहीं होता है, अंग्रेजी का प्रयोग केवल निर्यात सम्बन्धी व्यापार तक सीमित है। जापानी लोग अंग्रेजी न जानने पर अपने को हेय नहीं समझते। उन्हें जापानी भाषा, जापानी कार्य-प्रणाली और जापानी गुणवत्ता पर गर्व है। एअरपोर्ट, बैंक, रेलसेवा, कारखानों, कार्यालयों आदि सभी स्थानों पर जापानी भाषा में ही काम करने वाले कम्प्यूटर लगे हैं। विज्ञान और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में विकास एवं शोध कार्य भी मूलतः जापानी भाषा में किए जाते हैं। उनका मानना है कि 95-99 प्रतिशत काम जापानी लोगों के द्वारा और उनके बीच होता है। बहुत कम काम रह जाता है जिसे अनुवादकों की सहायता से पूरा कर लेते हैं। ऐसा करना व्यावहारिक दृष्टि से आसान और आर्थिक दृष्टि से किफायती होता है।

जापान में भाषा-व्यवहार भी उदाहरणीय है। जापानी भाषा में जापानी मूल के शब्दों को हीरागाना लिपि में, विदेशी मूल के शब्दों को काताकाना लिपि में और चीनी रूपाक्षरों को कांजी में लिखते हैं। इन तीन लिपियों के अतिरिक्त अंग्रेजी के संक्षेपाक्षरों अथवा आवश्यक शीर्षकों को रोमन में लिखते हैं। जापान में भाषा का यह मिला-जुला स्वरूप जहां एक ओर राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़ता है, वहीं दूसरी ओर व्यापार को अधिकाधिक गतिमान बनाने में भी सहायक सिद्ध होता है।

जापान का उदाहरण भारतीय संदर्भ में सटीक प्रतीत होता है। दोनों देशों का प्राच्य सोच है, जापान विश्वयुद्ध के बाद अमेरिकी प्रभाव में रहा। हीरोशिमा-नागासाकी में परमाणु विस्फोट से झुलसने के बाद जापान ने राजनीतिक विनम्रता, जापानी भाषा में उच्च तकनीकी शिक्षा के प्रति निष्ठा, निर्यातोन्मुखी विकास योजना, सरकार व उद्योग के बीच मधुर संबंध की नीति अपनाकर पुनर्निर्माण किया; टेक्नोलॉजी में उत्कृष्टता हासिल की; गुणवत्ता में प्रसिद्धि पायी; और विश्व में महान अर्थशक्ति के रूप में उभरकर आया है। जापानी भाषा के साथ-साथ चार पड़ोसी देशों की भाषाओं, चीनी, थाई, मलय, इण्डोनेशियन के बीच अनुवाद प्रणाली का भी विकास किया जा रहा है जिसे इन देशों के बीच व्यापार में इस्तेमाल किया जाएगा। इस परियोजना का समन्वय CICC जापान द्वारा किया जा रहा है। पांच वर्षीय फेज-1 पूरा हो चुका है। उद्योग क्षेत्र में FUJITSU, NEC आदि कई कम्पनियों ने अंग्रेजी से जापानी अथवा/और जापानी से अंग्रेजी में व्यवहारिक अनुवाद प्रणालियां बनायी हैं। ये व्यावसायिक स्तर पर उपलब्ध है। इनका प्रयोग बढ़ने लगा है।

4. संभावनाएं चुनौतियां एवं सुझाव

भारत बहुभाषी देश है। हिन्दी राजभाषा है और अधिकांश लोगों के द्वारा समझी जाती है इसलिए व्यापार के लिए उपयुक्त भाषा प्रतीत होती है। उदार अर्थव्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के विकास की अनन्त सम्भावनाएं हैं। सुझाव है कि हिन्दी का स्वरूप सरल और सर्वग्राह्य हो, हिन्दी में प्रान्त-विशिष्ट शब्दों का समावेश हो। अंग्रेजी के संक्षेपाक्षर, रासायनिक फार्मूले और विदेशी विशिष्ट शब्द रोमन में लिखे जाएं। टेक्नोलॉजी विचार गोष्ठियां अधिक-से-अधिक आयोजित की जाएं। इनका माध्यम व्यावहारिक हिन्दी हो। इनका आयोजन मितव्ययिता के साथ हो जिससे इनकी बारम्बारता बनी रहे। अपराह्न में 2 से 5 बजे, न लंच का खर्च और न ही बैग आदि का। कम्प्यूटर सस्ते उपलब्ध हो रहे हैं, इसलिए मैकेनीकल टाइपराइटर के स्थान पर कम्प्यूटर के प्रयोग को प्रोत्साहन दिया जाए। शब्द संसाधन के लिए कम गति का सस्ता कम्प्यूटर भी उपयुक्त होगा। अंग्रेजी-हिन्दी की अनुवाद प्रणाली के प्रयोग को प्रोत्साहित करें जिससे कम्प्यूटर अनुवाद-प्रणाली को सुधारा जा सके, श्रेष्ठतर बनाया जा सके। टैक्नोलॉजी अंतरण, टेक्नोलॉजी व्यापार और प्रशासनिक कार्य-व्यवहार के संवर्धन में अंग्रेजी-हिन्दी अनुवाद प्रणाली महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। हिन्दी में विविध फोण्टों के साथ प्रकाशन-सॉफ्टवेयर पैकेज भी उपलब्ध हैं जिससे सुन्दर और सस्ता प्रकाशन सम्भव हो गया है।

अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में भी अंग्रेजी, फ्रांसिसी, जर्मन, जापानी, रूसी आदि विदेशी भाषाओं की तकनीक और व्यापारिक ज्ञान सामग्री को अधिकांश भारतीयों तक हिन्दी के माध्यम से पहुंचाना युक्तिसंगत होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ में सूचना टोक्नोलॉजी के माध्यम से हिन्दी को सार्थक स्थान दिलाया जा सकता है। विश्व के कई देशों में बसे प्रवासी भारतीयों को हिन्दी के लिए उपलब्ध सूचना टेक्नोलॉजी की जानकारी पहुंचाना भी उपयोगी होगा जिससे वे कम्प्यूटर पर हिन्दी में शब्द संसाधन, डेटाबेस प्रबंधन, प्रकाशन हेतु पेज निर्माण आदि कर सकें। इसके अतिरिक्त मल्टी मीडिया मल्टी लिंग्वल एन्वाइरनमेंट (बहु माध्यम बहुभाषा परिवेश) पर विकास कार्य किया जाए जिससे इस क्षेत्र में भी हिन्दी का प्रयोग सम्भव हो और उत्तरोत्तर बढ़े।

उदार अर्थव्यवस्था में लक्ष्य व्यापार-वृद्धि और धन अर्जन होता है। भाषायी सामाजिक पक्ष गौण होता है। भाषा अर्थोन्मुखी संदेशवाह सरिता बन जाती है, जो बरसाती नदिया की भांति गतिमान हो जाती है और अपभ्रंशों से कुछ दूषित भी; पर ठहरे जल की सड़ांध से दोषमुक्त। हमारे लिए यह चुनौती है कि हिन्दी बने सक्षम, अर्थोन्मुखी, संदेश वाहन के लिए; लचीली हो अन्य भाषा के शब्दों को आत्मसात् करने में; समृद्ध हो आवश्यक सूचना टेक्नोलॉजी से; योजित हो भावी टेक्नोलॉजी विकास एवं समन्वय; और सेवित हो सरकारी उपक्रमों, कार्यालयों और निजी क्षेत्र की कम्पनियों से। एक और महत्वपूर्ण चुनौती है— हिन्दी-शिक्षण में गुणवत्ता लाने की, जिससे हिन्दी में वक्तृत्व, लेखन और अभिव्यक्ति प्रभावी एवं सृजनात्मक हो। इसके लिए हिन्दी के पाठ्यक्रमों, शिक्षण एवं प्रशिक्षण विधियों का पुनरीक्षण करना आवश्यक है। कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर पैकेज सर्वसुलभ हों; MS-WINDOWS, ORACLE, CORAL DRAW, JAVA, LOTUS 1-2-3 आदि में हिन्दी में भी काम करना सम्भव बनाया जाए।

स्कूली स्तर पर हिन्दी भाषा का पाठ्यक्रम प्रयोजनमूलक बनाया जाए; विज्ञान, गणित, वाणिज्य आदि विषयों के साथ तालमेल बैठाया जाए जिससे छात्र हिन्दी पाठों को रुचि से पढ़े तथा हिन्दी को व्यवहार में लाएं और हिन्दी में विचार अभिव्यक्त कर सकें। इंजीनियरिंग, मेडीकल और प्रबंधन में स्नातक स्तर पर हिन्दी भाषा में जन सम्पर्क प्रोजेक्ट अनिवार्य हो जिससे वे लोकभाषा हिन्दी में सूचना संग्रह कर सकें, समाजोपयोगी कार्यक्रमों को आम लोगों को समझाने में समर्थ हो सकें। विचारणीय है कि यदि हमारे इंजीनियर, डॉक्टर, प्रबंधक उपयुक्त टेक्नोलॉजी और तकनीकों को जन सामान्य को जितने प्रभावी ढंग और आसानी से समझा सकेंगे, देश की समुन्नति उतनी ही तेज गति में सम्भव होगी। इस प्रकार देश की प्रगति और लोकभाषा में संप्रेषण क्षमता के बीच सीधा संबंध है। आज जितनी आवश्यकता आधुनिक टेक्नोलॉजी के प्रशिक्षकों की है, उतनी ही नितान्त आवश्यकता इंजीनियरिंग, मेडिकल, प्रबंधन के विशेषज्ञों की लोकभाषा हिन्दी में संप्रेषण क्षमता की है। जो विशेषज्ञ सरकार, उद्योग, शिक्षा संस्थानों में कार्यरत हैं उनके लिए लोकसभा हिन्दी में संप्रेषण प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएं। आवश्यक प्रशिक्षण सामग्री तैयार करायी जाए और संबंधित लेखों के प्रकाशन को प्रोत्साहित किया जाए। DOEACC, IETE, IE, ICMR, IMA आदि की परीक्षाएं हिन्दी में हों।

इस समय भारत सरकार में हिन्दी के लिए उपयुक्त टैक्नोलॉजी का विकास, कार्यों का समन्वय इलेक्ट्रॉनिकी विभाग करता है और टैक्नोलॉजी अनुप्रयोग, संवर्धन का समन्वय राजभाषा विभाग करता है। भाषा टैक्नोलॉजी के प्रयोग की पहल सरकारी कार्यालयों में करना आसान है लेकिन इसका बृहद् प्रयोग निजी क्षेत्रों में बढ़ेगा। इसलिए सुझाव है कि 'राजभाषा टैक्नोलॉजी परिषद्' जैसी स्वायत्त संस्था का गठन किया जाए। यह संस्था टैक्नोलॉजी विकास परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करे, तदजन्य टैक्नोलॉजी के प्रयोग-संवर्धन के कार्यक्रम चलाए और समयबद्ध तरीके से लक्ष्यों को प्राप्त करे। आधुनिक सूचना टैक्नोलॉजी के विकास के परिप्रेक्ष्य में यह नितांत आवश्यक है क्योंकि उपयुक्त भाषा टैक्नोलॉजी का अभाव, कम कीमत पर अनुपलब्धता और अनुरक्षण समस्याएं, भाषा, संस्कृति, विकास और सामाजिक न्याय की गति को धीमा कर देंगे और समाज को कुछ हद तक दिशाभ्रमित भी।

5. उपसंहार

लोक भाषा हिन्दी का स्वरूप व्यावहारिक है। इसमें रोमन में संक्षेपाक्षरों और अन्य भारतीय भाषाओं के विशिष्ट शब्दों का प्रयोग हो। उदारवादी अर्थव्यवस्था और विश्वस्तरीय प्रतियोगिता के संदर्भ में भारत में लोकभाषा हिन्दी, टेक्नोलॉजी और विकास के प्रगाढ़ संबंध की प्रासंगिकता बढ़ गई है। विकास के लिए व्यापार की गति महत्वपूर्ण है और व्यापार की गति के लिए समाज में लोकभाषा में टेक्नोलॉजी और प्रबंधन की संप्रेषणीयता महत्वपूर्ण है। आधुनिक व्यापार व्यवहार के लिए लोक भाषा हिन्दी में अपेक्षित टैक्नोलॉजी उपलब्ध होने वाली है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी, जापानी, थाई, मलय, चीनी, इंडोनेशियन आदि भाषाओं के बीच मशीनी अनुवाद प्रणाली का विकास किए जाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय विकास में लोकभाषा की महत्ता जापान के उदाहरण से स्थापित की जा सकती है। उदारवादी अर्थव्यवस्था के संदर्भ में लोकभाषा हिन्दी के व्यवहार का महत्व बढ़ जाता है। इसे और अधिक प्रभावी बनाने के लिए स्कूली स्तर पर हिन्दी के पाठ्यक्रम को प्रयोजनमूलक बनाया जाए, स्नातक स्तर पर लोकभाषा हिन्दी में संप्रेषण क्षमता बढ़ाने वाले प्रोजेक्ट शामिल किए जाएं।

—— इलेक्ट्रॉनिकी विभाग, नई दिल्ली।

आज के कर्त्तव्य

- आज मैं प्रसन्न रहूँगा और वर्तमान के अनुकूल अपने को ढालने का प्रयास करूँगा। अपनी इच्छानुसार दूसरों को ढालने का प्रयास नहीं करूँगा। अपने परिजनों, अपने काम काज तथा अपने भाग्य को यथावत स्वीकार कर पूरी सजगता से अपने को उनके अनुरूप ढालूँगा।
- आज मैं पूरी सभ्यता से अपनी शरीर को हिफाजत से रखूँगा, इसका पोषण करूँगा ताकि यह स्वस्थ होकर मेरी उन्नति में सहायक हो सके।
- आज मैं अपना आलस्य त्यागकर अधूरे पड़े कम से कम दो कार्यों को पूरा करूँगा।
- आज मैं अपने स्वभाव में विनम्रता बरतूँगा, किसी की आलोचना नहीं करूँगा, धीरे बोलूँगा, और दूसरों में कोई दोष नहीं निकालूँगा।
- आज मैं अपने जीवन की सभी समस्याओं के बारे में चिंतन न कर किसी एक को सुलझाने का प्रयत्न करूँगा।
- आज मैं अपना एक निश्चित कार्यक्रम बनाऊँगा, तथा चाहे उन्हें पूरा कर पाऊँ या नहीं, परन्तु जल्दीबाजी और अनिर्णय की अवस्था से दूर रहूँगा।
- अब मैं अपने मन को सबल बनाने का प्रयास करूँगा, अपने विचारों को भटकने नहीं दूँगा तथा अपने कामकाज में एकाग्रता बरतूँगा।
- अन्त में, आज मैं आधे घण्टे का समय अपनी आन्तरिक आलोचना के लिए रखूँगा और लिए गये संकल्पों के बारे में ईमानदारी से विचार करूँगा।

तकनीकी शब्दावली विकासः मानकीकरण और प्रवर्तन

—प्रो॰ सूरजभान सिंह

ज्ञान और शब्दावली का विकास एक साथ होता है। हर नया ज्ञान भाषा से शब्दावली और अभिव्यक्ति की मांग करता है। जो अन्वेषक नए ज्ञान या विचार को जन्म देता है वही उसे नाम या शब्द भी देता है। सामाजिक ग्राह्यता और मानकता पाने के लिए इस शब्द को प्रयोग की एक लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। मौलिक ज्ञान के साथ विकसित तकनीकी शब्द के विकास की यह एक सहज और प्राकृतिक प्रक्रिया है।

इसके विपरीत जो देश, अन्य देशों में विकसित नए वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान को, उधार लेकर अपनी भाषा में उतारना चाहते हैं वहां शब्दावली विकास की प्रक्रिया एक भिन्न मार्ग का अनुसरण करती है। यह प्रक्रिया प्राकृतिक और सहज नहीं, सायास और नियोजित होती है, जिसमें तकनीकी शब्दों का नहीं बल्कि तकनीकी पर्यायों या समानार्थी शब्दों का विधान किया जाता है। मूल तकनीकी शब्द सीधे मूल संकल्पना से जुड़ा होता है, लेकिन पर्याय सामान्यतः उस संकल्पना के द्योतक किसी अन्य भाषा के शब्द का अनूदित रूप होता है। अन्वेषक के लिए नाम या शब्द पर कोई विवाद संभव नहीं, लेकिन पर्याय प्रायः विवाद के घेरे में रहता है क्योंकि पर्याय का एकाधिक होना उसकी प्रकृति में ही है। पर्याय अन्वेषक की कृति नहीं, अनुवादक, लेखक या विषय—विशेषज्ञ इसका निर्माता होता है, जो केवल सूचना को एक भाषा से दूसरी भाषा में अंतरित करने का काम करता है।

इस असहज प्रक्रिया से संपन्न होने वाला शब्दावली निर्माण संबंधी कोई भी उपक्रम शब्दावली नियोजन और प्रबंध की उपेक्षा करता है। इस प्रकार के किसी भी नियोजन में कम-से-कम चार बातों का ध्यान रखना जरूरी है। (1) लसित भाषा समाज की समाज भाषा वैज्ञानिक वास्तविकताएं, (2) शब्द-निर्माण का व्याकरणिक विधान, (3) प्रयोक्ता से प्राप्त फीडबैक, और (4) भाषा विकास के राष्ट्रीय और सामाजिक लक्ष्य।

भारतीय संदर्भ और भाषा आधुनिकीकरण

भारतीय भाषाओं में तकनीकी शब्दावली के निर्माण और विज्ञान की पुस्तकों के लेखन के छिटपुट प्रयास स्वतंत्रता से काफी पहले शुरू हो चुके थे, जैसे गुजराती में प्रो॰ टी॰के॰ गुज्जर (1888), नागरी प्रचारिणी सभा (1898—1906) और दांते कर्वे (1948)। लेकिन स्वतंत्रता के बाद जब समाज की संप्रेषण व्यवस्था में भारतीय भाषाओं को नई भूमिकाएं प्रदान की गई, तब इन भाषाओं को राजभाषा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और टेक्नालाजी की नई भाषिक मांगों को पूरा करने के लिए सक्षम और समृद्ध करने की आवश्यकता पड़ी। यहीं से भारतीय भाषाओं के आधुनिकीकरण और मानकीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई। तकनीकी शब्दावली का निर्माण इसी प्रक्रिया का एक अंग है।

ऐसे भाषा-समाज में जहां नई तकनीकी शब्दावली का विकास प्राकृतिक प्रक्रिया से न होकर अनुवाद पर्यायों और नवनिर्मितिओं के आधार पर हो, वहां विभिन्न भाषिक और सामाजिक दृष्टिकोणों का टकराव अवश्यंभावी है। भारत में भी तीन परस्पर अत्यंत विरोधी विचारधाराओं ने शब्दावली निर्माण के कार्य को अत्यंत प्रभावित किया।

एक ओर शुद्धतावादी विचारधारा के प्रतिनिधि डा॰ रघुबीर ने समस्त अंग्रेजी शब्दों के बहिष्कार का संकल्प कर, संस्कृत की 520 धातुओं की सहायता से एक अंग्रेजी-हिंदी तकनीकी कोश (1955) तैयार किया जिसमें वहित्रयान (motor car), कूपी (bottle) और द्वचक्र (bicycle) जैसे पर्यायों की भरमार थी, लेकिन भौतिकी (Physics), अभियंता (engineer) तथा पंजीकरण (registeration) जैसे शब्द भी थे, जो बाद में ग्राह्य हो गए।

दूसरी और हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी के प्रमुख पं॰ सुंदरलाल ने संस्कृत आधारित शब्दों का बहिष्कार कर हिंदुस्तानी उर्दू तथा बोलचाल के शब्दों के आधार पर तकीनीकी शब्दावली बनाने का संकल्प किया। इस आधार पर हैदराबाद से प्रकाशित अंग्रेजी-हिंदी कोश (1953) में नार्मलियाना (normalise), स्टैन्डर्डियाना ((standarise), पलटकारी (reactionary) और मसनदी (chairman) जैसे पर्याय दिए गए।

तीसरी ओर एक विचारधारा उन वैज्ञानिकों, वकीलों और उच्च अधिकारियों की थी जो अंग्रेजी शब्दों का अनुवाद न कर उन्हें वैसे ही देवनागरी में लिख दिए जाने के पक्ष में थे, जैसे ब्लड, टेम्परेचर, फिजिक्स आदि।

हिंदी भाषा-भाषी समाज ने तीनों में से किसी भी दृष्टिकोण को पूर्णतः स्वीकार नहीं किया, क्योंकि एक की दृष्टि केवल भाषा व्याकरण पर थी प्रयोक्ता पर नहीं, दूसरे की दृष्टि केवल भाषा-समाज पर थी भाषा व्याकरण पर नहीं और तीसरे की दृष्टि केवल मौखिक भाषा-रूप पर थी लिखित भाषा-रूप पर नहीं। लिखित और मौखिक भाषा-रूपों के प्रतिमान हर भाषा-समाज में अलग होते हैं। यह भाषिक सत्य वे नहीं समझ सके।

इसी बीच कुछ विद्वानों, लेखकों तथा राज्य सरकारों ने अति उत्साह में आकर तकनीकी शब्दों की अपनी-अपनी टकसालें खोल लीं। फलतः शीघ्र ही बहुपर्यायों की भीड़ सामने आने लगी और तकनीकी शब्दावली की मानकता, सूक्ष्म अर्थ भेदकता और प्रयोग समरूपता, जो किसी भी तकनीकी शब्द के प्राथमिक गुण हैं नष्ट होती दिखाई देने लगी। यह भी **भाषा आधुनिकीकरण** का एक प्रतिफलन था। भाषा आधुनिकीकरण भाषा की प्रयोग संभावनाओं का विस्तार है, लेकिन निर्बंध विस्तार अराजकता की स्थिति पैदा कर सकता है। इस निर्बंध विस्तार को मर्यादित कर समरूपता स्थापित करने का विधान ही **मानकीकरण** है।

अतः तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में मानक पर्यायों का विकास करने और अखिल भारतीय स्तर पर सभी भारतीय भाषाओं के लिए शब्दावली निर्माण के सिद्धांत निरूपित करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 1961 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की। परस्पर विरोधी विचारधाराओं के बीच संतुलन स्थापित करते हुए आयोग ने शब्दावली विकास के जो सिद्धांत बनाए उनमें से चार विशेष उल्लेखनीय हैं:

(क) **अंतर्राष्ट्रीय** तकनीकी शब्दों तथा कुछ विशेष कोटि के प्रचलित अंग्रेजी शब्दों को देवनागरी में लिप्यंतरित कर ग्रहण कर लिया जाए (प्रोटीन, मीटर), (ख) **परंपरा** से प्राप्त हिंदी, उर्दू, हिन्दुस्तानी, अरबी फारसी व तत्सम शब्दों को यथावत ग्रहण कर लिया जाए (दस्तावेज शिनाख्त), (ग) अन्य **भारतीय भाषाओं** में उपलब्ध तकनीकी शबदों को आवश्यकतानुसार ग्रहण कर लिया जाए (साजगृह greenroom-बंगला) और (घ) इन सबके बावजूद भी नए शब्दों का निर्माण जरूरी हो तो **संस्कृत** को आधार स्वीकार किया जाए जिसमें सरलता का विशेष ध्यान रखा जाए।

तब से लेकर अब तक विभिन्न ज्ञान-शाखाओं के पांच लाख से अधिक तकनीकी शब्द विकसित किए जा चुके हैं जो विशेषकर पारिभाषिक शब्दों के रूप में उपलब्ध हैं। प्रयोग-प्रसार की दृष्टि से अब ये सभी शब्द कंप्यूटर आधारित राष्ट्रीय शब्दावली बैंक के डाटाबेस में संचित व संसाधित किए जा चुके हैं जिससे कोश निर्माण प्रक्रिया में गति लाने के अतिरिक्त इन्हें निकनेट (nicnet) उपग्रह के जरिए देश के विभिन्न केन्द्रों में तुरंत प्रसारित किया जा सके।

मानकता का प्रश्नः एक मूल्यांकन

मानकता तथा सामाजिक ग्राह्यता की दृष्टि से पिछले तीन-चार दशकों के दौरान विकसित तकनीकी शब्दावली का आकलन आज आवश्यक प्रतीत होता है।

कोई भी तकनीकी पर्याय केवल अर्थ निर्धारित कर देने मात्र से मानक नहीं हो जाता। **मानकीकरण प्रक्रिया** के दो प्रमुख सोपान हैं— कोडीकरण और विस्तारीकरण। **कोडीकरण** का तात्पर्य है— "रूपों की विविधता को कम-से-कम करना"। शब्दावली के संदर्भ में इसका तात्पर्य है किसी शहर के प्रचालित या उपलब्ध एक से अधिक पर्यायों में से एक का चयन कर उसे उस अर्थ में स्थिर या रूढ़ करना। इसका प्राप्य लक्ष्य है — एक रूप (शब्द) एक अर्थ।

दूसरा सोपान **विस्तारीकरण** है जिसका तात्पर्य है— "व्यवहार या प्रकार्य की विविधता को अधिक से अधिक बढ़ाना"। दूसरे शब्दों में, कोडीकृत या चयन किए गए पर्यायों का अधिक से अधिक व्यवहार-क्षेत्रों

में प्रयोग सुनिश्चित कर उन्हें प्रयोगसिद्ध बनाना। इस सोपान में इन तकनीकी पर्यायों का प्रयोग परीक्षण, पुनरीक्षण और संशोधन भी होता है और इन्हें सामाजिक स्वीकृति या अस्वीकृति मिलती है।

यदि हिंदी के संदर्भ में आकलन करें तो एक स्पष्ट निष्कर्ष यह निकलता है कि पर्यायों के चयन या कोडीकरण सोपान का अधिकांश काम संपन्न हो चुका है लेकिन व्यापक प्रयोग-प्रसार का सोपान अभी अधूरा है। शब्दावली का व्यापक प्रयोग-प्रसार सुनिश्चित करना शब्दावली निर्माण की अपेक्षा अधिक मुश्किल काम है। इसके लिए एक कल्पनाशील रणनीति की आवश्यकता है, जैसे — उच्च शिक्षा में माध्यम परिवर्तन सुनिश्चित करना, लक्ष्य-वर्ग (प्रयोक्ताओं) से संपर्क स्थापित करना, सामाजिक ग्रह्यता और प्रयोगवत्ता की दृष्टि से शब्दावली-प्रयोग का फील्ड सर्वेक्षण करना, शब्दावली के संबंध में जागरूकता पैदा करना, निर्मित शब्दावली का पाठ-लेखन के स्तर पर प्रयोग-परीक्षण करना, उपयुक्त तकनीकी लेखन-शैली का विकास करना और समस्त कोश निर्माण प्रक्रिया का आधुनिकीकरण करना।

दूसरा निष्कर्ष यह निकलता है कि जिन विषयों या व्यवहार-क्षेत्रों में हिंदी के माध्यम से लेखन या अध्ययन-अध्यापन का कार्य हो रहा है (जैसे प्रशासन, सामाजिक विज्ञान विषय तथा स्नातक स्तर तक विज्ञान) वहां उन विषयों से संबंद्ध नवविकसित तकनीकी शब्दावली का प्रयोग परीक्षण हो रहा है और आयोग के अधिकांश शब्दों को सामाजिक स्वीकृति मिल रही है। कुछ शब्दों के एकाधिक पर्याय सामाजिक स्वीकृति के लिए अभी भी संघर्षरत हैं। कुछ शब्द हताहत भी हुए हैं। इसके विपरीत जिन विषयों में हिंदी माध्यम ही स्वीकृत नहीं हुआ है (जैसे आयुर्विज्ञान, इंजीनियरी, प्रबंधविज्ञान और उच्च विज्ञान) उनमें नई शब्दावली को प्रयोग-परीक्षण का अवसर ही नहीं मिल पाया है। अतः इन विषयों की शब्दावली की सामाजिक ग्राह्यता या अग्राह्यता के संबंध में कोई अंतिम निर्णय देना संभव नहीं।

समाज द्वारा ग्राह्य तकनीकी शब्दों पर एक नज़र डालें तो पता चलेगा कि जो शब्द किसी माध्यम से बार-बार जन सामान्य के समक्ष आते रहे वे शीघ्र ही ग्राह्य हो गए, जैसे— "वायुप्रदूषण, पर्यावरण, प्रक्षेपास्त्र, प्रतिभूति, अंतरिक्ष आदि। दूसरे शब्दों में, शब्द न सरल होते हैं न कठिन। शब्द या तो परिचित होते हैं या अपरिचित ।

तीसरा निष्कर्ष यह निकलता है कि भारत जैसे बहुभाषी देश में बहुपर्यायता या एक ही तकनीकी शब्द के लिए एकाधिक पर्यायों का प्रचलन एक सामान्य बात है। हिंदी और उर्दू स्वयं पर्यायों की दो समानांतर शैलियां प्रस्तुत करती हैं (निर्वाचन-चुनाव, विधि-कानून)। लेकिन द्रष्टव्य है, बहुपर्यायता कई अन्य तत्वों की भी मांग हो सकती है जैसे— पाठकवर्ग, विषय, संदर्भ और संप्रेषण की रीति। उदाहरण के लिए, मौखिक तथा लिखित संप्रेषण में,, या दूरदर्शन और संगोष्ठी के संप्रेषण में दो अलग-अलग पर्यायों की मांग हो सकती है। इसी प्रकार अनुसंधानपरक, छात्रोपयोगी और लोकप्रिय विज्ञान लेखन में तकनीकी पर्यायों के चयन के मानदंड अलग-अलग हो सकते हैं। इसीलिए कई बार यह आवाज़ भी उठती है कि भारतीय समाज की भाषिक क्षमता और भारत में विज्ञान लेखन की प्रारंभिक अवस्था को ध्यान में रखते हुए हमें मानकता के प्रतिमान में कुछ लचीलापन लाना चाहिए और तकनीकीपन की थोड़ी-बहुत कीमत चुकाकर भी हमें किंचित शिथिल लेकिन सुग्राहय शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए। इस तर्क में सामाजिक वज़न है इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। यदि वज़न न होता तो जो लेखक दुर्बोध तकनीकी पर्यायों के बजाय अंग्रेजी शब्द को देवनागरी में ही लिखकर प्रस्तुत कर देते हैं उन्हें समाज क्यों अघोषित स्वीकृति देता?

उपर्युक्त परिवेश में अगर हम आयोग की शब्दावली की बुनावट को गौर से देखें तो इसके पीछे कम-से-कम चार दृष्टिकोणों का बिंब साफ़ नजर आएगाः

1. एक अर्थ के लिए यथासंभव केवल एक पर्याय निर्धारित करने का आग्रह, जिससे समानधर्मा शब्दों के बीच सूक्ष्म तकनीकी अर्थभेद की रक्षा हो सके। इसका एक प्रासंगिक परिणाम यह हुआ कि अर्थ की दृष्टि से शिथिल लेकिन लोकप्रचलित कई पर्यायों को कोश में स्थान नहीं मिल पाया।

2. पर्यायों के चयन में अधिक प्रचालित होते हुए भी अनुर्वर (बांझ) शब्दों के बजाय उर्वर शब्दों को प्राथमिकता देने का आग्रह, क्योंकि उर्वर शब्दों से अनेक शब्द व्युत्पन्न किए जा सकते हैं (विमान—हवाईजहाज, विधि—कानून)।

3. तकनीकी शब्दावली को अखिल भारतीय स्वरूप प्रदान करने का आग्रह, जिसके फलस्वरूप पर्यायों के चयन में प्रायः संस्कृत मूल शब्दों को प्राथमिकता मिली, क्योंकि अधिकांश भारतीय भाषाओं में संस्कृत शब्द हिन्दुस्तानी या उर्दू शब्दों की तुलना में अधिक बोधगम्य हैं।

4. पर्यायों के चयन तथा निर्माण में परंपरागत तथा गैरपरंपरागत युक्तियों का प्रयोग जैसे— **परंपरा** से प्राप्त शब्द (विषवत रेखा, मुआवजा), नया अर्थ देकर प्राचीन अथवा अप्रचलित शब्दों का **पुनरुद्धार** (संसद, आकाशवाणी), **अर्थ संकोच** तथा **अर्थ विस्तार**

(जनगणना, लाभांश), **संयोगात्मकता** (आस्थगन, वनस्पतिकी), **संकर/मिश्र पदधति** (शेयरधारक, आयनीकरण), **शब्द सर्जन** या **नवनिर्मिति** (संकाय, अभियंता), **शब्द ग्रहण** (प्रोटीन, हीटर), **शब्द अनुकूलन** (तकनीकी,एवेलांश, अकादमी), **शाब्दिक अनुवाद** (हरित क्रांति, वामपंथी), **भावानुवाद** (obstetrics प्रसूति, amorous bite विषयकन्या दंश)

सामाजिक ग्राह्यता की दृष्टि से शब्द निर्माण की इन युक्तियों की क्या भूमिका रही यह बताना कठिन है, क्योंकि तकनीकी शब्द के प्रकट अर्थ और उसके निहित तकनीकी अर्थ में हमेशा तर्कसंगति या कार्यकारण संबंध हो यह आवश्यक नहीं, जैसे Computer virus या mouse.

निष्कर्षतः यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं कि किंचित समस्याओं के बावजूद, आयोग की शब्दावली मानकीकरण की प्रक्रिया में एक नॉर्म या संदर्भ शब्दावली के रूप में अपना महत्व रखती है। इसकी उपस्थिति जहां एक ओर यह सुनिश्चित करती है कि लेखक या अनुवादक प्रामाणिक शब्दावली के अभाव में अपनी-अपनी अलग टकसाल खोलकर तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में अराजकता पैदा न करे, वहीं यह भी सुनिश्चित करती है कि किसी शब्द की उपयुक्तता सिद्ध न होने पर ही प्रयोक्ता अन्य वैकल्पिक पर्याय प्रस्तुत करे। इनमें से अंततः कौन-सा पर्याय मान्य होगा, इसका निर्णय प्रयोक्ता करेगा, शब्द निर्माता नहीं।

पूर्व अध्यक्ष, वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग,
आई-127, नारायणा विहार, नई दिल्ली-

(अपने साथियों से विदा होते समय नेताजी ने कहा था,"दोस्तो, मैं हर वक्त आप लोगों के साथ हूं--मगर निहायत गमगीन दिल से आप लोगों से जुदा हो रहा हूं।" इसी विदाई के अवसर पर गाया गया गीत)

नेताजी हमारे
हंसते-हंसते जीना।
जंजीर गुलामी तूने तोड़ी, एशिया से नाता जोड़ा।
प्रेम न टूटे तेरा, हंसते-हंसते जीना नेताजी।।

सूरज ऐसा चमका तेरा, कल था अंधेरा आज सबेरा।
अब न रहेगा मन का अंधेरा, हंसते-हंसते जीना नेताजी ।।
बिजली बनकर घर से आया, बादल बन पूरब में छाया।
प्रेम की बरसा तूने बरसाई, मिल के सभी ने गाया नेताजी ।।

सूरज कभी न डूबे तेरा, जभी तू जागे तभी सबेरा।
तेरा बदले रंग कभी न, हंसते-हंसते जीना नेताजी।।

(" लोकशक्ति पुरुष नेता जी " पुस्तक से साभार)

नागरीः एक वैज्ञानिक लिपि

—डा० (श्रीमती) स्वर्णप्रभा अग्रहरि

तमक्षरं ब्रह्म परं पवित्रं गुहाशयं सम्यगुशन्ति विप्राः।
स श्रेयसा चाभ्युदयेन चैव सम्यक् प्रयुक्तः पुरुषं युनक्ति।।

महर्षि पाणिनि कहते हैं कि विप्र लोग बुद्धि रूपी गुहा में स्थित परम पवित्र उस अक्षर ब्रह्म की भली-भांति प्राप्ति की कामना करते हैं; वही अच्छे प्रकार प्रयोग किया हुआ अक्षर-ब्रह्म अभ्युदय और श्रेय से पुरुष को युक्त कर देता है। अतः वैशेषिक के निर्देश "यतो भ्युदयनिश्रेयससिद्धिः स धर्मः" का पालन करते हुए अक्षर (वर्ण) रूपी ब्रह्म की प्राप्ति को ही धर्म (कर्तव्य) मानकर लेखन-रत होना है।

"अक्षरं परमं ब्रह्म" (गीता)—अक्षर परम ब्रह्म है, अनदि और अनंत। अतः उसकी प्राप्ति दुःसाध्य है अवश्य; फिर भी कर्तव्य है। इसलिए "डाबर कमठ कि मन्दर लेही" से भली-भांति अवगत होते हुए भी गीताकत "स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायतो महतो भयात्" का अश्वासन लेना है और अक्षर ब्रह्म का संपूर्णतः चित्रण न करके मात्र उसके एक गुण वैज्ञानिकता पर ही थोड़ी-बहुत लेखनी चलाने का प्रयास करना है। यही प्रस्तावना है।

2-प्रस्तुति की रूप-रेखा

स्थान थोड़ा है और सामग्री अनादि अनन्त। केवल एक गुण वैज्ञानिकता के सीमित रहने पर भी सामग्री असीम है। साथ ही "लघु मति मोरि चरित अवगाहा" जानते हुए भी गागर में सागर भरने की धृष्टता करनी है। किन्तु जो भाषा-विज्ञान के बड़े-बड़े विशेषज्ञों के लिए भी अनेक ग्रंथों की सामग्री है, उस विषय-वस्तु पर अत्यंत संक्षेप में निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत ही प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जा सकता है:—

1. ब्राह्मी से नागरीः उद्भव और विकास;
2. नागरी के विकास की दिशा;
3. लिपि का उद्देश्य और उससे अपेक्षाएं;
4. वैज्ञानिकता और उसकी कसौटी;
5. नागरी का मानकन;
6. स्वाभाविक प्रदूषण और सुधार के प्रयत्नः
7. वैज्ञानिकता में प्रश्नचिह्न नहीं;
8. सुधार के आधुनिक प्रयास;
9. केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रयास;
10. केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग का योगदान; और
11. समाहार

1-ब्राह्मी से नागरीः उद्भव और विकास

लिपियां तो देश-विदेश में बहुत-सी आविष्कृत या विकसित हुई हैं, किन्तु सबसे पुरानी, जिसका इतिहास मिलता है, ब्राह्मी लिपि कहलाती है। अक्षर ब्रह्म है तो लिपि ब्राह्मी। आदि भाषा संस्कृत है तो आदि लिपि ब्राह्मी, जो अशोक काल (4-5 शती ई०पू०) में चलती थी। सिन्धु-घाटी की लिपि पढ़ने और समझने में अभी तक कोई सफलता नहीं मिली;

इसलिए उस पर विचार नहीं किया जा रहा। लिपि का नाम ब्राह्मी पड़ने के बारे में कई मत हैं:

(1) निर्माता का पता न होने से सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा द्वारा निर्मित मानकर इसे ब्राह्मी कहा गया। चीनी विश्वकोश फा-वान-शु-लिन (668 ई०) की भी यही मान्यता है।

(2) राजबली पाण्डेय के अनुसार आर्यों ने ब्रह्म (वेद) की रक्षा के लिए इसे बनाया; अतः यह ब्राह्मी कहलाई।

(3) यह ब्राह्मणों के प्रयोग में विशेष आई क्योंकि वे ही सुशिक्षित थे; अतः ब्राह्मी कहलाई।

कुछ भी हो, इसमें संदेह नहीं कि इस लिपि का आविष्कार या विकास भारत में ही हुआ। आविष्कृत होने के पश्चात् लिपि के प्रयोग में जो कठिनाइयां और बाधाएं आती रहीं, विद्वान् लोग उन्हें समय-समय पर दूर करके लिपि को नियमों में बांधते रहे, सुधारते-संवारते रहे, जिससे वह भाषा को पूर्णतया व्यक्त करने का, अमूर्त वाणी (वाग् देवी) को मूर्त रूप देने का उद्देश्य सार्थक कर सके। मनुष्य की वाक्शक्ति भिन्न-भिन्न होने से वाणी भी देश-काल-भेद से बदलती रही। ऐसा स्वाभाविक होने के कारण लिपि में भी स्वाभाविक परिवर्तन होता गया जिसे सुधार या विकास की प्रक्रिया कहते हैं।

ब्राह्मी से नागरी के क्रमिक विकास का नमूना "अ" और "क" वर्गों के लिए इस प्रकार है:-

2-नागरी के विकास की दिशा

आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है। गुप्त-काल इतिहास का स्वर्ण युग कहलाता है। उस समय विद्वानों की गतिविधियों में विशेष वृद्धि हुई। साहित्य-सृजन भी हुआ, शासन में सुधार भी हुए। फलतः ग्रंथ रचे गए और प्रशस्तियां लिखी गई। राजाज्ञाएं निकालने के लिए, उनका प्रचार-प्रसार करने के लिए, विद्वानों को सम्मान-पत्र आदि देने के लिए और विदेशों से संपर्क रखने के लिए गरिमामय लिपि की आवश्यकता अनुभव हुई। फलस्वरूप लिपि में सुन्दरता तथा गरिमा की दृष्टि से ब्राह्मी वर्णों की सीधी-सादी और अलंकरण-रहित आकृतियों में भांति-भांति के वक्र, मोड़, झुकाव, कुंचन, वलय और छल्ले डाले गए। इस प्रयास में लोग यहां तक लगे कि लिपि का नाम ही "कुटिल" पड़ गया।

विदेशों से संपर्क रखने के लिए अलंकरण, किसी सीमा तक प्रयत्न-लाघव और स्थान-लाघव की बलि देकर भी कूटनीतिक आवश्यकता के रूप में अपनाया गया प्रतीत होता है। कौटिल्य (चाणक्य) भी उसी काल का कूट-नीति का विद्वान् था। लिपि का नाम शायद इसलिए भी "कुटिल" पड़ गया हो। एक ताम्र-पत्र में महाराज हर्ष के हस्ताक्षर इतने अधिक अलंकृत रूप में मिले हैं कि अलंकरण को भेदकर अक्षरों के मूल रूप को ग्रहण कर पाना ही कठिन है। इसी "कुटिल" लिपि से कश्मीर में "शारदा" लिपि, तथा अन्यत्र "नागरी" या देवनागरी लिपि विकसित हुई। प्राचीन नागरी का प्रचार उत्तर भारत में नवीं शती ईसवी के अंत से हुआ, जब कि दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में यह "नन्दि-नागरी" नाम से आठवीं शती में भी चलती थी।

3-लिपि का उद्देश्य और उससे अपेक्षाएं

अक्षर या वर्ण (वर्ण तु वाक्षरे-अमरकोश) अविनाशी (अ+क्षर) होते

चित्र।- ब्राह्मी से नागरी का क्रमिक विकास (उदाहरणार्थ केवल 'अ' और 'क' वर्ण)

(डा० विश्वनाथ प्रसाद द्वारा संपादित 'अनुसंधान के मूल तत्व' में संकलित उदयशंकर शास्त्री के लेख 'शिलालेख और उनका वाचन' से साभार उद्धृत)

यहां प्रक्रिया में आकार की सुन्दरता, स्पष्टता, स्थान-लाघव और प्रयत्न-लाघव की दिशा में क्रमशः प्रयास और प्रगति स्पष्ट दिखाई दे रही है। वर्गों का स्वरूप ही नहीं, उनका क्रम, वर्गीकरण विन्यास और संख्या-वृद्धि भी आवश्यकता के अनुसार सुधरती-संवरती रहीं।

हैं। इसलिए इनका न आदि है न अन्त। तभी तो अक्षर ब्रह्म कहलाते हैं—न साकार, न निराकार। किन्तु हैं अवश्य, तभी तो शब्द का अनुभव सब लोग करते हैं। जिस प्रकार निराकार ब्रह्म की उपासना के लिए साकार भगवान (या भगवानों) की कल्पना कर ली गई है, उसी प्रकार अक्षर

ब्रह्म की प्राप्ति के लिए, उनसे लाभान्वित होने के उद्देश्य से उनके साकार रूप की कल्पना की गई है। यह साकार रूप ही लिपि कहलाती है।

"मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना" के अनुसार लिपियां भी बहुत-सी आविष्कृत हुई हैं। अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुसार उनमें सुधार किए जाते रहे हैं। देश-काल के अनुसार वे विकसित होती रही हैं। इस सबके पीछे उद्देश्य यह है कि मानव के "भाषा" के रूप में अभिव्यक्त विचारों का संतोषप्रद संप्रेषण लिपि के द्वारा संभव हो। साथ ही भाषा विशेष सीखने-सिखाने में लिपि के कारण कोई बाधा न आनी चाहिए।

भाषा सीखने-सिखाने में सहायक या बाधक बनने वाले दो प्रमुख तत्व हैं; उसका व्याकरण और उसकी लिपि। विद्वान् लिपि को भी व्याकरण का एक एक अंग मानते हैं। पाणिनि मुनि (4थी शती ई०पू०) ने वेदांग-प्रकाश के प्रथम भाग के रूप में ही "वर्णोच्चारणशिक्षा" लिखी है और व्याकरण, जिसे शब्दानुशासन भी कहते हैं, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष के समान एक वेदांग है ही जिस पर भा(=ज्ञान की शोध) में रत (=लगे हुए) भारतीय ऋषियों-मनीषियों ने सम्यक् सोच-विचार और अन्वेषण-गवेषण किया है। भारतीयों के गौरव-सर्वस्व देव-भाषा संस्कृत का व्याकरण इतना गंभीर विषय है कि इसका महत्व 'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणं' अर्थात "वेदों" की रक्षा के लिए व्याकरण पढ़ना चाहिए" कहकर प्रकट किया जाता है। एक मात्र देववाणी संस्कृत का ही व्याकरण इतना व्यापक विषय है कि इसका अधययन (वह भी अधूरा, अध्यापन में असमर्थ) प्रथमा-मध्यमा-शास्त्र-आचार्य स्तर तक कठिनाई से 12 वर्ष में पूर्ण हो पाता है जबकि अन्य किसी भी विषय के आचार्य छह वर्ष में बन सकते हैं। संसार की अन्य किसी भी भाषा में प्रथमा स्तर से आगे पढ़ने-पढ़ाने-योग्य व्याकरण है ही नहीं। यही संस्कृत भाषा के पूर्ण और संस्कृत अर्थात् पूर्णतया वैज्ञानिक होने के प्रमाण हैं और कारण भी। संस्कृत की लिपि देवनागरी का वर्तमान स्वरूप भी उसी स्तर के व्यापक, दीर्घकालीन और गंभीर शोध का परिणाम है, जिसकी प्रशंसा संसार के विद्वान करते नहीं थकते। विश्व-मनीषा इस पर मुग्ध है, यहां तक कि भारत के बाहर एक-सौ से अधिक विश्वविद्यालयों और संस्थाओं में हिन्दी पढ़ी-पढ़ाई जाती है; और हिन्दी ने नागरी लिपि अपनाकर उसी के बल पर यह अपूर्व गौरव तथा आकर्षण प्राप्त किया है।

4-वैज्ञानिक और उसकी कसौटी

नागरी के जिस गुण पर संसार मुग्ध है, वह है इसकी असीम वैज्ञानिकता। वैज्ञानिक होने का सीधा-सादा अर्थ है लिपि का उच्चारण के अधिक अनुरूप होना। दुनिया में सबसे अधिक बोली जाने वाली चार भाषाओं, चीनी, हिन्दी, अंग्रेजी और अरबी में हिन्दी की लिपि देवनागरी ही सबसे अधिक वैज्ञानिक है। गांधी जी ने 1948 में ही 'हरिजन सेवक' में लिखा था कि संसार की सभी लिपियों में मेरी राय में नागरी ही सर्वोत्तम है। आशुलिपि के आविष्कारक सर आइजक पिटमैन ने भी कहा है कि देवनागरी लिपि ही दुनिया की सभी लिपियों में वैज्ञानिक तथा पूर्ण है। अमरीकी अंतरिक्ष संस्था नासा ने वैज्ञानिक "रिक ब्रिग्ज" ने तो यहां तक कहा है कि संस्कृत भाषा और पाणिनि का व्याकरण कम्प्यूटर के लिए सर्वश्रेष्ठ हैं। हिन्दी संस्कृत की बेटी है और देवनागरी लिपि की मदद से वैज्ञानिक सर्वश्रेष्ठ कम्प्यूटर भाषा विकसित करने में लगे हैं। बहुत-सा साफ्टवेयर हिन्दी में तैयार हो चुका है और प्रयोग में आ रहा है।

किसी भी लिपि के दो पक्ष सर्वमान्य हैं जो इससे की जाने वाली अपेक्षाओं के द्योतक हैं। एक पक्ष है सामान्य और विशिष्ट स्वनों (ध्वनियों) के पृथक प्रतीक-वर्गों की समृद्धि, उनका परस्पर स्पष्ट आकार-भेद, लिखावट में सरलता, तथा स्थान-लाघव एवं प्रयत्न-लाघव। उदाहरण के लिए एक ही वर्ण नाम "जी" के लिए रोमन लिपि में G, की पांच आकृतियां तो लिखने वाली कोमल बुद्धि पर अत्याचार ही ढा सकती हैं, प्यार या आकर्षण नहीं।

लिपि का दूसरा पक्ष है वर्तनी। एक ही स्वन को प्रकट करने के लिए विविध वर्णों का प्रयोग वर्तनी को जटिल बना देता है। उदाहरणार्थ रोमन लिपि में "क" के लिए C (यथा CAT में), K (यथा KITE में) या CH (यथा CHEMIST में) प्रयुक्त होते हैं। यह मनमानी है, अराजकता है। इसी प्रकार AT, BAT, CAT, FAT, HAT, MAT, PAT, RAT, सभी में A की ध्वनी 'ऐ'-जैसी है, तो फिर VAT अथवा WAT में A की ध्वनि 'आ' जैसी निकालने की जिद्द बुद्धिमानी तो नहीं कही जा सकती। एक और उदारण लें। U का प्रयोग BUT, CUT, GUT, HUT, NUT, RUT में तो "अ" जैसा है, किन्तु PUT में "उ"—जैसा उच्चारण अपनी डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग ही पकाता है। इस प्रकार के दोष किसी भी लिपि में सामान्य और उपेक्षणीय नहीं माने जा सकते। नागरी इनसे सर्वथा मुक्त है।

बुद्धिमान यह अपेक्षा करते हैं कि हमारी लिपि अधिक से अधिक सरल, सुबोध, सुन्दर और तर्क-संगत हो और भांति-भांति के दोष जिनकी सजा सीखने-सिखाने वालों या पढ़ने-लिखने वालों को भुगतनी पड़े, उसमें कम-से-कम हों। नागरी लिपि को इसी कसौटी में कसकर उसकी सूक्ष्मता, परिशुद्धता, यथार्थता, सुस्पष्टता और पूर्णता की दृष्टि से विचार करना अभीष्ट है।

5—नागरी का मानकन

नागरी को दोषमुक्त और पूर्ण करके स्थापित करने वालों में ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के महर्षि पाणिनि का नाम प्रथम आता है। उन्हें ही वर्तमान

नागरी का पिता कहा जा सकता है। उन्होंने शब्द का लक्षण, स्वरों का लक्षण, स्वरों की संज्ञा, व्यंजन का लक्षण, उच्चारण करने वालों के गुण, स्वरों के उच्चारण में दोष आदि पर सम्यक् विचार करके एक महत्वपूर्ण ग्रंथ "वर्णोच्चारण-शिक्षा" लिखा जिसमें उच्चारण-स्थान, करण, आभ्यंतर प्रयत्न, बाह्य प्रयत्न, स्थान में वायु का ताड़न, वृत्तिकार, प्रक्रम और नाभि के अधोभाग से वायु का उत्थान शीर्षक आठ अध्याय हैं। उन्होंने 63 अक्षरों की नागरी वर्णमाला प्रस्तुत की। चित्र-2 में देखिए।

यह वर्णमाला मानक और पूर्णतया वैज्ञानिक थी जिसमें सभी वर्णों के अपने अपने स्थान , उनकी ध्वनियां, आकृतियां, वर्ग और बलाघात आदि पूर्णतया सुनिश्चित थे। उच्चारण के लिए जीभ का किस स्थान से स्पर्श कराना है यह भी एक-एक वर्ण के लिए निश्चित है। उदाहरण के लिए पाणिनीय सूत्र है "अकुह—विसर्जनीयाः कण्ठयाः (1.5) अर्थात् अ (अतः आ और आऽ भी) (कु; यानी सारा कवर्ग) , ह और विसर्ग (:)। इन सब वर्णों का कण्ठ स्थान है। यानी कण्ठ स्थान से जीभ का स्पर्श कराने से इनका शुद्ध उच्चारण होता है। इसी प्रकार इ, ई, चवर्ग, य और श तालव्य हैं अर्थात् तालु से इनका उच्चारण होता है, ऋ, ॠ टवर्ग, र और ष मूर्धन्य हैं, लृ, ॡ, तवर्ग, ल, स दन्त्य हैं, उ, ऊ, पवर्ग के सब वर्ण ओष्ठ्य हैं। सभी वर्गों के प्रथम स्थान अल्प-प्राण हैं अर्थात् थोड़े बल से बोले जाते हैं, और तृतीय स्थान महाप्राण हैं अर्थात् अधिक बल से बोले जाते हैं। इस तरह सारा ग्रंथ उच्चतम कोटि के वैज्ञानिक विश्लेषण, तदनुरूप निर्देशों और नागरी की वैज्ञानिकता से परिपूर्ण है। शताब्दियों से इसी वर्णमाला से हिन्दी का और नागरी या नागरी-सी लिपि वाली सभी भाषाओं का काम चलता आ रहा है।

6- स्वाभाविक प्रदूषण और सुधार के प्रयत्न

किन्तु धीरे-धीरे इसमें भी कुछ कमियां प्रतीत होने लगीं। देश-काल-भेद से लोगों की बोलने की प्रवृत्ति बदलती रहती है। उसके अनुसार हमारी लिपि में भी परिवर्तन करने की आवश्यकता हुआ करती है। इसे ही सुधार या विकास कहते हैं। उदाहरण के लिए उच्चारण में गड़बड़ी के कारण ज्ञान में "ज्ञ" को ज् +ञ्+ अ बोलना कुछ श्रम-साध्य होता है। इसलिए दक्षिणात्य लोग "द्वान, गुजराती लोग "ग्यान" और उत्तरी भारत के बहुत से ब्राह्मण "ग्यान" बोलत हैं। "ष" के स्थान पर कुछ लोग "स" का और कुछ लोग "ख" का उच्चारण करते हैं। कुछ लोग "य" के स्थान पर "ज" और "व" के स्थान पर "ब" बोलकर काम चलाते हैं। "बवयोरभेदः" जैसी उक्तियां भी चल पड़ी हैं। बंगाली लोग "ष" और "स" दोनों के स्थान पर तालव्य "श" का ही उच्चारण करते हैं। ऐसे-ऐसे भ्रमों की निवृत्ति के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पाणिनीय "वर्णोच्चारण शिक्षा" की व्याख्या और हिन्दी टीका करके पठन-पाठन-व्यवस्था की प्रथम पुस्तक प्रस्तुत की।

उच्चारण-दोष के कारण पाणिनीय वर्णमाला के प्लुत स्वर अप्रचलित हो गए। संस्कृत में भी इनका प्रयोग विरल हो गया, फिर हिन्दी आदि भारतीय लिपियों से तो इनका और दीर्घ ॠ, ऌ एवं ह्रस्व ऌ का लोप ही हो गया। पहले भी प्लुत स्वरों के लिए कोई लिपि चिह्न निश्चित नहीं किया गया था, दीर्घ स्वरों के आगे 3 का अंक लिखकर काम चलाया जाता था। इसी प्रकार उच्चारण की स्वाभाविक शिथिलता के कारण "अयोगवाहं रूपों में से जिह्वा-मूलीय ँ, उपध्मानीय ँ, ह्रस्व और दीर्घभी अप्रचलित हो गए और वर्णमाला से लुप्त हो गए।

7- वैज्ञानिकता पर प्रश्न-चिह्न नहीं

यहां प्रश्न उठ सकता है कि इतने चिह्नों का लोप नागरी लिपि की वैज्ञानिकता में कमी कही जा सकती है या नहीं। निष्पक्ष मत तो यह है कि— यह भी एक सुधार ही समझना चाहिए, क्योंकि लिपि-चिह्न तो ध्वनि संकेतों के लिए ही होते हैं, और भाषा (भाष्=बोलना) बोलने के लिए ही होती है। जो ध्वनि बोली ही नहीं जाती, भाषा का अंग ही नहीं रह गई है, उसके लिए लिपि-चिह्न बनाना, या बनाए रखकर लिपि को व्यर्थ बोझिल करना उचित नहीं लगता। उन्हें हटाकर समयानुरूप हो जाना ही वैज्ञानिकता है।

कवर्ग आदि पांचों वर्गों के पंचम वर्णों की स्थिति भी जनता के दरबार में लटकी है। संस्कृत के विद्वान् उच्चारण की ध्वनि के अनुसार कङ्क, कञ्ज, कण्ठ, कन्त, कम्प लिखना ही उचित समझते हैं। किन्तु जन-सामान्य ङ, ञ, ण्, न, म् की ध्वनियों में विशेष अन्तर नहीं कर पाता और इनके स्थान पर स्थान-लाघव और प्रयत्न-लाघव का सहारा लेते हुए अनुस्वार से ही काम निकालता है—कंक, कंज, कंठ, कंत, कंप लिखता है। "ङ" और "ञ" का स्वतंत्र प्रयोग तो कुछ संस्कृत शब्दों को छोड़कर अन्य भाषाओं में होता ही नहीं है, अतः हिन्दी टाइप-मशीनों में इन्हें स्थान ही नहीं दिया गया। हां, वर्ण-माला से इन्हें बहिष्कृत करने की नौबत अभी नहीं आई। कंक, कंज, कंठ, कंत, और कंप आदि लिखना विकल्प स्वरूप मान्य अवश्य हो गया है। इसे लिपि में सुधार ही कहना चाहिए, प्रदूषण नहीं, क्योंकि भाषा-विज्ञानी कोई स्वरूप गढ़ भले ही लें, वह जन-सामान्य द्वारा स्वीकृत होने पर ही प्रचलित और मान्य होगा। अनुस्वार संबंधी और भी बहुत से नियम हैं जिनका पालन होना चाहिए। यही वैज्ञानिकता है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा प्रकाशित "ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी" के प्रथम खण्ड में वर्ण और ध्वनियों पर आठ अध्यायों में विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है जिससे यह स्पष्ट है कि नागरी लिपि में हद दर्जे की वैज्ञानिकता है, और इसका कारण भाषा-विज्ञानियों की जागरूकता और समय-समय पर इसमें आवश्यकतानुसार सुधार करते रहने की सुदीर्घ परंपरा ही हैं।

8—सुधार के आधुनिक प्रयास

आधुनिक विद्वानों में उल्लेख्य नाम महादेव गोविन्द रानडे का है। बाद में महाराष्ट्र साहित्य परिषद्, पुणे ने एक लिपि-सुधार समिति नियुक्त की।

मराठी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशनों में भी इस विषय पर चर्चा हुई और प्रस्ताव पास हुए। उल्लेखनीय है कि मराठी की लिपि नागरी है, और गुजराती की शिरोरेखा-विहीन (मुण्डी) नागरी-जैसी है। सावरकर, गांधी जी, विनोबा भावे तथा काका कोलेलकर ने भी इस दिशा में प्रयास किए। लिपि-सुधार के नाम पर इ,ई,उ,ऊ,ए,ऐ के बजाय सावरकर द्वारा सुझाए अ,अी,सु,अे,ऐ प्रचलित किए गए (जो अधिक चले नहीं)। अन्य व्यक्तियों में केशवराम, काशी प्रसाद शास्त्री, गोरख प्रसाद तथा श्रीनिवास के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

1941 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने एक लिपि-सुधार समिति बनाई। समिति के निर्णयों की महत्वपूर्ण बातें ये थीं, जो कोई भी प्रचलित नहीं हो पाई—

(1) उ,ऊ,ए,ऐ की मात्राओं, संबंधित अनुस्वार और रेफ को संबंधित व्यंजन के ऊपर या नीचे न रखकर उच्चारण-क्रम से अलग रखना : जैसे खेल = खे ल, कूद=क़ द, पंकज = पंकज, धर्म = धर्म।

(2) इ की मात्रा भी ई की मात्रा के समान उच्चारण-क्रम के अनुसार वर्ण के बाद में लगाना और दोनों की मात्राओं में अन्तर करने के लिए थोड़ा दाएं—बाएं मोड़ दे देना : जैसे किया = कीया, शील = शील।

(3) संयुक्त वर्ण के रूप में र को पूरा लिखना; जैसे प्रेम, त्रास, क्रम, श्रम आदि को प्रेम, त्रास, क्रम, श्रम आदि खिलना।

(4) सभी स्वर अ में मात्राएं लगाकर लिखना (सावरकर का सुझाव)।

फिर 1945 में नागरी प्रचारिणी सभा ने एक लिपि-समिति बनाई जिसने प्रति देवनागरी लिपि" बनाकर रखी यह भी नहीं चली।

उत्तर प्रदेश सरकार ने 1947 में एक देवनागरी लिपि सुधार समिति आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में बनाई जिसके दो मुख्य सुझाव थे:

(1) संयुक्त वर्णों के स्वतंत्र रूपों (यथा क्ष, त्र,ज्ञ,श्र,द्य आदि) को यथासाध्य निकाल देना; और (2) ह+र = ह्र, ि = ी और ध = ध तथा भ = भ लिखना। इनमें से केवल दूसरे सुझाव के ध तथा भ अब तक चल रहे हैं, ह्र बिलकुल नहीं चला और ि के बजाय ी भी थोड़े दिन ही चला।

1949 में बंबई सरकार ने मराठी तथा गुजराती लिपियों में सुधार के लिए एक लिपि सुधार समिति बनाई। फिर नागरी प्रचारिणी सभा के अनुरोध पर उत्तर प्रदेश सरकार ने एक लिपि सुधार परिषद् बनाई जो अखिल भारतीय स्तर की थी। इसके मुख्य सुझाव थे :

(1) ि, ख, ध, भ, छ के स्थान पर ी (नरेन्द्रदेव समिति के अनुसार), ख, ध, भ, इ लिखना; और (2) क्ष, त्र, श्र आदि को क्ष, त्र, श्र, लिखना। ये भी प्रचलित नहीं हुए।

9—केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रयास

ऊपर जिन दोषों और सुधारों की चर्चा हुई है, उनके अतिरिक्त कुछ और भी अपेक्षाएं प्रकाश में आई जो पूरी होनी चाहिए थीं। संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा हिन्दी और लिपि नागरी है। अन्य राज्यों के लिए भी नागरी लिपि का प्रयोग राष्ट्रीय दृष्टि से अपेक्षित है। इसलिए भारत सरकार ने हस्तक्षेप किया। सभी दोषों, भ्रमों ओर अपेक्षाओं पर विचार करने के लिए केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने देश के शीर्षस्थ विद्वानों की सहायता ली। उनके साथ वर्षों गंभीर विचार-विमर्श हुआ और हिंदी वर्गों तथा अंकों का मानक स्वरूप निर्धारित हुआ (चित्र 3 में देखिए)। इस वर्णमाला में हिंदी वर्तनी के मानक स्वरूप भी निर्धारित करते हुए उन्होंने पिछले सारे सुझावों और सुधारों को आच्छादित कर लिया। फिर 1967 में निदेशालय ने "हिंदी वर्तनी का मानकीकरण" नामक एक पुस्तिका प्रकाशित की।

व्याकरण की आवश्यकता पर विचार करने के लिए भी भारत सरकार ने 1954 में एक समिति गठित की थी। लगभग एक वर्ष के कठिन परिश्रम के बाद समिति ने अंग्रेजी में काम करने वाले सरकारी कर्मचारियों को हिंदी सिखाने के उद्देश्य से "ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी" तैयार की जो 1958 में प्रकाशित हुई। इसमें नागरी संबंधी सभी अद्यतन सुधार और मानक वर्तनी सहित मानक वर्ण माला भी दी हुई हैं। वर्णों का आकार सुधारने के लिए भी निदेशालय ने प्रयत्न किए हैं और हाथ से ही सुलेख लिखने के लिए सुन्दर लिपि का नमूना (चित्र 4 में देखिए) भी 'देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' नामक पुस्तक में 1983 में प्रकाशित कर दिया।

10—केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग का योगदान

भारत सरकार के कार्यालयों में हिन्दी में काम करना आरंभ हो चुका था। केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग सरकार का तकनीकी विभाग है। वहां के इंजीनियरों और वास्तुकों ने भी हिन्दी में काम करने का संकल्प किया और धीरे-धीरे नक्शों आदि पर हिन्दी-अंग्रेजी में द्विभाषी लिखाई आरंभ हो गई।

किन्तु हिन्दी में सुन्दर ज्यामितिक लिखाई की कोई परिपाटी नहीं थी जैसी अंग्रेजी में ब्लाक-छपाई स्कूलों/कालेजों में इंजीनियरों/वास्तुकों को सिखाई जाती है। बड़े-बड़े साइन-बोर्डों और सड़कों पर लगे संकेत-पट्टों में बड़े-बड़े अक्षर लिखे जाते हैं जो ज्यामितीय उपकरणों की सहायता से ही मानक आकृति से बन सकते हैं। इसलिए केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद की केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग शाखा ने वास्तुकों की मांग पर यह काम हाथ में लिया और इंजीनियर विश्वंभर प्रसाद "गुप्त-बन्धु" ने, जो बाद में विभाग की हिन्दी शाखा के प्रमुख होकर अधीक्षक इंजीनियर पद से रिटायर हुए, दिन-रात परिश्रम करके 15 अगस्त 1964 को नागरी की सम-मोटाई वाली ब्लाक-छपाई के लिए अक्षर-लेखन-विधि प्रस्तुत कर दी (चित्र 5 में देखिए)। इसमें सभी वर्णों की सही आकृति और ज्यामितिक उपकरणों से उसे बनाने की विधि दर्शाई गई है। "नागरीलिपि का ज्यामितिक स्वरूप" शीर्षक से यह चार्ट केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग शाखा की मुख-पत्रिका "निर्माण" के अंक 4 (1964 ई०) में प्रकाशित करके देश भर में विभाग के सभी इंजीनियरों/वास्तुकों को उपलब्ध करा दिया गया। इससे सरकारी कार्यालयों के तकनीकी काम में भी हिन्दी के प्रयोग में गति आई।

"नागरी लिपि का ज्यामितिक स्वरूप" एक मौलिक विचार है और सड़कों आदि के नाम-पट्टों तथा संकेत-पट्टों पर लिखाई के लिए उपयुक्त है। इसमें वर्णों की सर्वत्र सम-मोटाई रखने का उद्देश्य और विशेष लाभ यह है कि पूरा वर्ण ही बड़ी दूर से भी दिखाई देने लगता है और तुरंत ही बिना ऊहा-पोह के स्पष्ट पहचान में आ जाता है। इस प्रकार लिखाई सार्थक होती है। सभी स्कूलों/कालेजों में पढ़ाई के लिए ड्राइंग की पुस्तकों में यह सुधार चिर-वांछित आवश्यकता पूरी करता है।

11— समाहार

पाणिनि मुनि ने जो मानकीकरण किया था वह संस्कृत में था, संस्कृत की आवश्यकताओं के अनुरूप था और उसी से हिन्दी आदि भाषाओं का काम भली-भांति चलता रहा था। किन्तु अब परिस्थितियां बहुत बदल चुकी हैं। सरकारी काम में हिन्दी का प्रयोग होने लगा है। अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी नागरी का प्रयोग प्रस्तावित है। संसार के बहुत से लोग हिन्दी सीख रहे हैं। नागरी से व्यापक परिचय होने पर वे अपनी भाषाओं की दुरुह लिपियों का स्थान नागरी को देने पर देर-सवेर विचार करेंगे ही, क्योंकि दिन-रात काम आने वाली किसी भी वस्तु में प्रयोग की सुविधा का आकर्षण अत्यंत प्रबल हुआ करता है।

इन सब चुनौतियों का सामना करने के लिए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने एक परिवर्द्धित देवनागरी लिपि विकसित कर ली है (यह भी इस लेख के अन्त में चित्र 3 में दिखाई गई है)। इसमें उन सब ध्वनियों का समावेश है जो हिन्दी में नहीं हैं किन्तु अन्य बहुत सी भाषाओं में हैं। इनसे नागरी इतनी समृद्ध हो गई है कि इसका प्रयोग संसार की किसी भी भाषा के लिए सुविधापूर्वक हो सकता है, और यह सुविधा उन भाषाओं की अपनी लिपियों में उपलब्ध सुविधाओं से अधिक महत्वपूर्ण होगी। उल्लेखनीय है कि संसार की किसी भी भाषा की लिपि में उस भाषा की सभी ध्वनियों को यथार्थ और पूर्ण अभिव्यक्ति की ऐसी क्षमता नहीं है जैसी अब परिवर्द्धित नागरी में हो गई है।

नागरी की वैज्ञानिकता पर संसार सदा से ही मुग्ध रहा है। वर्तमान काल में भी कम्प्यूटर-भाषा के लिए यह आदर्श लिपि सिद्ध हो चुकी है। भारत सरकार के भगीरथ प्रयास से, जो महर्षि पाणिनि के प्रयास के तुल्य ही ठहरते हैं, नागरी विश्वनागरी बनने के मार्ग पर तेज़ी से अग्रसर हो सकेगी, इसमें सन्देह नहीं है। क्योंकि—

"अतीव वैज्ञानिक नागरी ही
तो विश्व में है लिपि विश्ववारा।" (गुप्त-बन्धु)

अतः भारत में सभी राष्ट्रीय भाषाओं के लिए यदि नागरी अपना ली जाती है तो चीन और जापान शायद सबसे पहले नागरी अपनाकर आचार्य विनोबा भावे का स्वप्न साकार कर दें, क्योंकि उनकी चित्र-लिपि अपूर्ण भी है, अवैज्ञानिक भी; और उनकी जटिलता से उनके प्रयोक्ता परेशानी भी अनुभव करते हैं।

अकारादि स्वरों का स्वरूप

ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत		
			कवर्ग—क, ख ग घ ङ।	
			चवर्ग—च छ ज झ ञ।	
अ	आ	अ ३	टवर्ग—ट ठ ड ढ ण।	
इ	ई	इ ३	तवर्ग—त थ द ध न।	
उ	ऊ	उ ३	पवर्ग—प फ ब भ म।	
ऋ	ॠ	ऋ ३	अन्तस्थ—य र ल व।	
ऌ	०	ऌ ३	ऊष्म—श ष स ह।	
			अयोगवाहरूप	
०	ए	ए ३	: विसर्जनीय	ꣳ ह्रस्व
०	ऐ	ऐ ३	ᳵ जिह्वामूलीय	ꣴ दीर्घ
०	ओ	ओ ३	ᳶ उपध्मानीय	ँ अनुनासिक चिह्न
०	औ	औ ३	ं अनुस्वार	ळ और यह अक्षर
				इनको चार यम भी कहते हैं

उक्त वर्णों में अवर्ग के वर्ण अकार आदि 'स्वर' और कवर्ग आदि वर्गों के वर्ण 'व्यञ्जन' कहाते हैं। स्वर वर्ण शब्दों में शुद्धस्वरूप से भी रहते और व्यञ्जनों के साथ में मात्रारूप से भी आते हैं। मात्रारूप स्वरों में जब व्यञ्जन मिलाये जाते हैं तब प्रत्येक व्यञ्जन बारह प्रकार से कहा जाता है, उसका स्वरूप और संयोगचक्र (जिससे कि व्यञ्जन का परस्पर सम्बन्ध विदित होता है) आगे लिखते हैं—

बारह अक्षरों का स्वरूप

क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्	क्
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
।	ा	ि	ी	ु	ू	े	ै	ो	ौ	ं	ः
क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः

संयोगचक्रम्

क् य् अ-क्य	ज् ञ् अ-ज्ञ	क् ऋ-कृ	क् ष् अ-क्ष
क् व् अ-क्व	ह् य् अ-ह्य	क् ॠ-कॄ	क् ख् अ-क्ख
क् र् अ-क्र	ह् व् अ-ह्व	क् ऌ-कॢ	श् य् अ-श्य

(पाणिनि-मुनि-प्रणीत 'वर्णोच्चारणशिक्षा' श्रीमहर्षि-दयानन्द-कृत व्याख्या से साभार उद्धृत)

1. मानक हिंदी वर्णमाला तथा अंक

भारतीय संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के फलस्वरूप हिंदी का मानक रूप निर्धारित करना बहुत आवश्यक था, ताकि वर्णमाला में सर्वत्र एकरूपता रहे और टाइपराइटर आदि आधुनिक यंत्रों के उपयोग में लिपि की अनेकरूपता बाधक न हो।

इन सभी बातों को ध्यान में रखकर केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने शीर्षस्थ विद्वानों आदि के साथ वर्षों के विचार-विमर्श के पश्चात् हिंदी वर्णमाला तथा अंकों का जो मानक स्वरूप निर्धारित किया, वह इस प्रकार है :

मानक हिंदी वर्णमाला

स्वर अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

मात्राएँ ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

अनुस्वार ं (अं)

विसर्ग ः (अः)

अनुनासिकता चिह्न ँ

व्यंजन
क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व ळ
श ष स ह

संयुक्त व्यंजन क्ष त्र ज्ञ श्र

हल् चिह्न (द्)

गृहीत स्वन ऑ (ॉ) ख़ ज़ फ़

देवनागरी अंक
१ २ ३ ४ ५
६ ७ ८ ९ ०

भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप
1 2 3 4 5
6 7 8 9 0

संस्कृत के लिए प्रयुक्त देवनागरी वर्णमाला में तो ॠ, ऌ तथा ॡ भी सम्मिलित हैं, किंतु हिंदी में इन वर्णों का प्रयोग न होने के कारण इन्हें हिंदी की मानक वर्णमाला में स्थान नहीं दिया गया है।

संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा, परंतु राष्ट्रपति संघ के किसी भी राजकीय प्रयोजन के लिए भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के साथ-साथ देवनागरी रूप का प्रयोग भी प्राधिकृत कर सकते हैं।

(केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के सौजन्य से)

हिंदी वर्णमाला : लेखन विधि

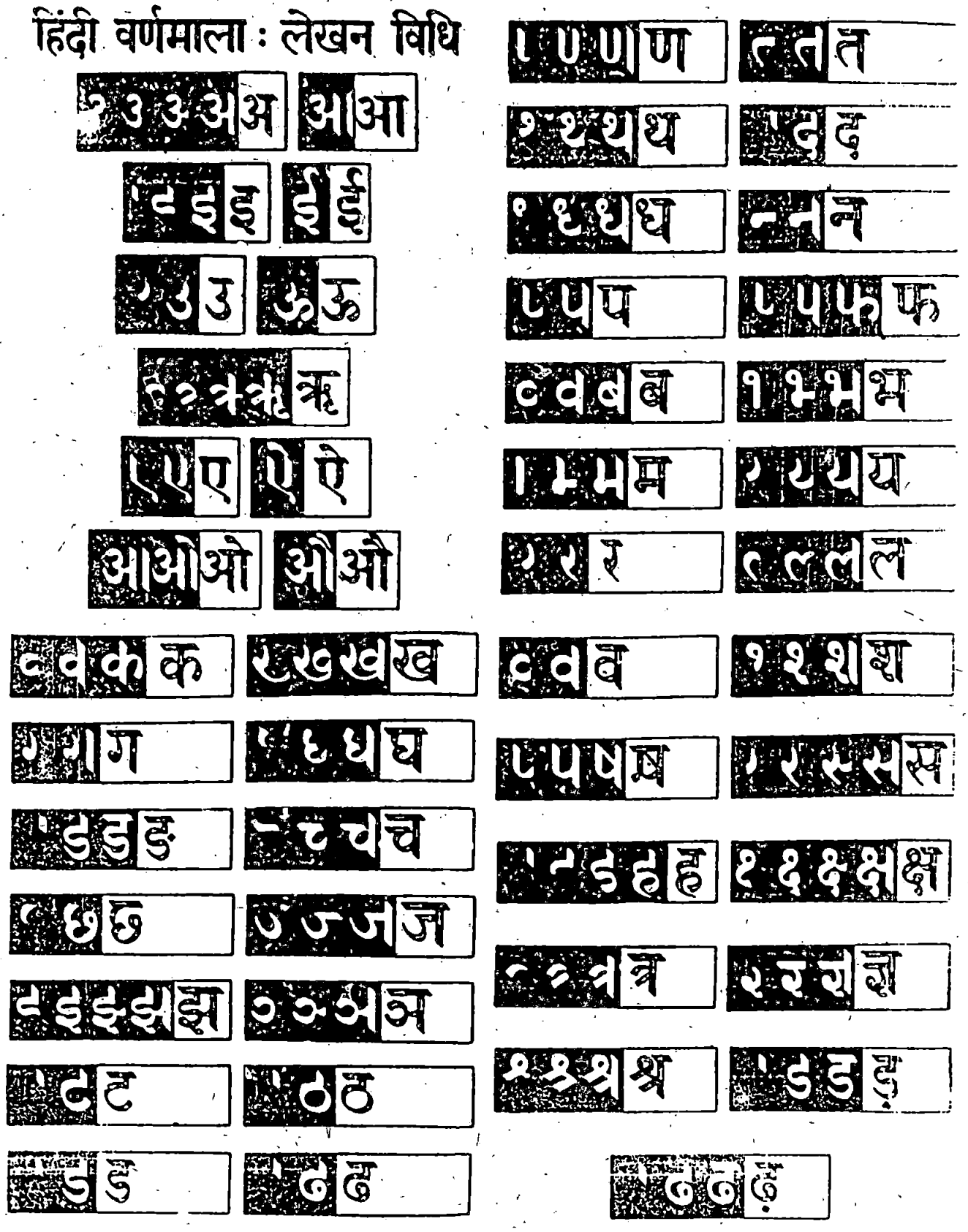

(केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार के सौजन्य से)

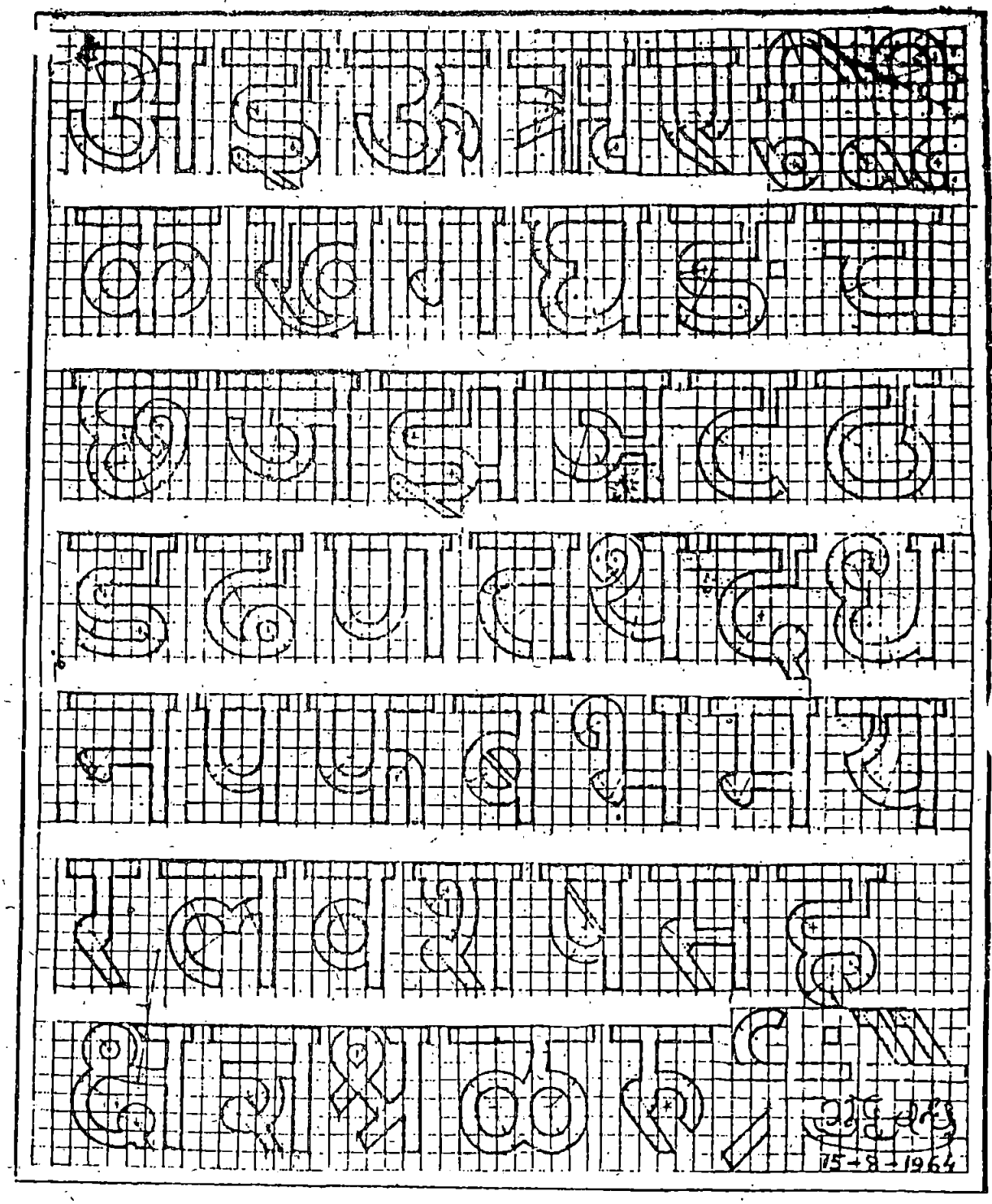

चित्र 5 – नागरी वर्णों का ज्यामितिक स्वरूप

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् की केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग शाखा की मुख-पत्रिका के अंक 4 (1964 ई०) से साभार उद्धृत।

परिवर्धित देवनागरी वर्णमाला

देवनागरी वर्णमाला

स्वर: अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ

मात्राएँ: ा ि ी ु ू ृ ॄ े ै ो ौ

अनुस्वार: ं (अं)

विसर्ग: ः (अः)

अनुनासिकता चिह्न ँ

व्यंजन:

क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व ळ
श ष स ह

संयुक्त व्यंजन: क्ष त्र ज्ञ श्र

हल् चिह्न: ्

विशेषक चिह्न:

स्वर :	(1)	ह्रस्व ए और ओ	ऎ ऒ
		मात्राएँ	ॆ ॊ
	(2)	कश्मीरी के विशिष्ट स्वर	[illegible]
		मात्राएं	[illegible]
व्यंजन :	(1)	कश्मीरी चवर्ग	च़ छ़
	(2)	सिंधी अंतःस्फोटी व्यंजन	ग॒ ज॒ ड॒ ब॒
	(3)	तमिळ ழ और मलयाळम ഴ	ऴ
	(4)	बंगला-असमिया	य़
	(5)	दक्षिण भारतीय भाषाओं के 'र' का कठोर उच्चारण	ऱ
	(6)	तमिळ ன	ऩ
	(7)	मलयाळम ന का वर्त्स्य उच्चारण	ऩ
	(8)	फ़ारसी-अरबी और अंग्रेज़ी से गृहीत स्वन	क़ ख़ ग़ ज़ झ़ फ़
	(9)	उर्दू ऐन (ع)	अ़
		स्थिति के अनुसार	आ़ (आ़दत), अ़ि (अ़िबादत), ई़ (ई़द), उ़ (उ़मर), ऐ़ (ऐ़ब), औ़ (औ़रत), आदि

चित्र 6 - परिवर्धित देवनागरी (केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के सौजन्य से)

रीडर, हिंदी विभाग, दौलतराम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

कला और विज्ञान की कसौटी पर अनुवाद की परख

—डा० अमरसिंह वधान

कला और विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की सटीक परख और पहचान करने से पहले "कला" और "विज्ञान" शब्दों को अलग-अलग समझ लेना अप्रासंगिक न होगा। यूं तो भारतीय और पाश्चात्य कला विशेषज्ञों और विद्वानों ने अपनी अन्यान्य परिभाषाओं द्वारा "कला" के अर्थ को रेखांकित करने के जबर्दस्त प्रयास किए हैं। पर ये सभी परिभाषाएं अर्थ के स्तर पर केन्द्रित होकर कला को आत्माभिव्यक्ति, रचनात्मक प्रक्रिया एवं सौन्दर्य की अभिव्यंजना घोषित करती हैं। लेकिन एक अन्य कोण से देखा जाए तो प्रत्येक व्यक्ति अपने आवेष्टन से संस्कार अर्जित करता है और उन्हें व्यक्त करने का प्रयास करता है। कुछ मनुष्य ऐसे भी होते हैं। जो औरों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील, प्रभविष्णु और संस्कारशील होते हैं, साथ ही अपने मन पर पड़े प्रभावों के प्रकाशन की अधिक क्षमता भी रखते हैं। ऐसे ही संवेदनशील और सक्षम व्यक्तियों की अभिव्यंजना कला की कोटि में आती है। सफल अभिव्यंजना में दो बातें प्रधान रहती हैं—प्रथम, प्रभाव का पूर्ण और अखंड रूप से ग्रहण और द्वितीय, उसकी बाह्य अभिव्यक्ति। असल में, कला एक प्रकार की सृजना है, जिसमें कल्पना का योग बराबर रहता है।

दूसरी तरफ "विज्ञान" किसी विषय का वह ज्ञान भंडार है, जो सुव्यवस्थित अध्ययन, निरीक्षण और अनुभव के द्वारा प्राप्त किया गया हो और जिसके तथ्यों को समायोजित, क्रमबद्ध और वर्गीकृत किया गया हो। यहां पर जोड़ देना जरूरी है कि उस विशिष्ट विषय के व्यवस्थित और वैज्ञानिक विवेचन में विकल्प की गुंजाइश कम ही होती है। विज्ञान किसी क्षेत्र विशेष, संस्कृति एवं सामाजिक परिस्थितियों के कारण टस से मस नहीं होता। इसमें प्रयोग किए जाते हैं और परिणाम सर्वत्र समरूप रहते है।

अनुवाद कला है या विज्ञान, इसके बारे में लेखकों का एकमत नहीं है। कुछ लोगों का कहना है कि अनुवाद विज्ञान है और इसका अध्ययन, व्यवहार एवं प्रक्रिया विज्ञान के दूसरे विषयों के समान हैं। परन्तु एक वर्ग ऐसा भी है जो इसे कला मानता है न कि विज्ञान। उसका कहना है कि जो विशेषताएं विज्ञान के अन्य विषयों में हैं, वे अनुवाद में दिखाई नहीं देती। लेकिन यहां उल्लेखनीय है कि यदि अनुवाद पूर्णतः विज्ञान नहीं है तो भी अंशतः इसमें विज्ञान की आभा अवश्य है। अनुवाद में विज्ञान की तरह उचित निरीक्षण, प्रयोग, अध्ययन आदि सब कुछ संभव है। एक कर्मठ अनुवादक की भूमिका एक वैज्ञानिक से कम नहीं है। यदि एक ओर आर्कमिडिज, गैलेलियो, न्यूटन, जेम्सवाट, मेरी क्यूरी, आइनस्टीन, ग्राहम बेल, सी०बी० रमन,, आदि वैज्ञानिकों ने अपने गहन अध्ययन एवं प्रयोगों द्वारा विश्व को नई जानकारी प्रदान की है तो दूसरी ओर जॉन वाईक्लिफ, सर टॉमसनार्थ, जॉन क्लोरियो, सैनेका, गेटे, फिटजजेराल्ड, आदि के अनुवाद प्रयोगों ने एक के बाद एक साहित्यकारों एवं साहित्यिक आन्दोलनों को जन्म दिया है।

जॉन वाइक्लिफ ने बाइबिल का लेटिन भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद करने से पहले बाइबिल का सुव्यवस्थित अध्ययन किया और अनुवाद के विभिन्न उपकरणों का निरीक्षण किया। उसके लिए सारा विश्व एक प्रयोगशाला थी। लक्ष्य भाषा की ध्वनि, शब्द, रूप, वाक्य आदि प्रयोग के उपकरण थे। एक वैज्ञानिक की तरह वह भी चिन्तित प्रक्रिया से गुजरा था। अनुवाद करने की पूर्व-पीठिका, जो उसके मस्तिष्क में चिन्तन के रूप थी, पूर्णतः वैज्ञानिक और व्यवस्थित प्रक्रिया थी। उसने लेटिन भाषा और अंग्रेजी भाषा

के वैज्ञानिक विश्लेषणोपरांत ही बाइबिल का अनुवाद-कार्य सम्पन्न किया था। जान गावर्ड इस बात का गवाह है कि वाईक्लिफ के पहले दो प्रयोग अर्थात् अनुवाद का पहला ड्राफ्ट, फिर दूसरा ड्राफ्ट सफल नहीं हो पाये थे। वाइक्लिफ अपने अनुवाद प्रयोग द्वारा बाइबिल के कथन एवं संदेश को अंग्रेजी में सर्जित करने में अपने तीसरे प्रयोग में सफल हुआ था। यह ऐतिहासिक सच है कि जॉन वाइक्लिफ का यह तीसरा अनुवाद प्रयोग वैज्ञानिक-सा प्रयोग प्रतिध्वनित हुआ है।

विज्ञान में किसी विषय के "क्या", "क्यों" और "कैसे" प्रश्न वैज्ञानिक को गहरे में आन्दोलित करते हैं। गैलेलियो को गिरजाघर में लटकी हुई लैम्प, जेम्सवाट को केतली में से निकलती भाप और न्यूटन को पेड़ से गिरते सेब ने बुरी तरह उद्वेलित किया था। इसके बाद इन वैज्ञानिकों पर हुई प्रक्रिया के परिणाम विश्व के सामने हैं। इसी क्रम में एडवर्ड फिट्जजेराल्ड को भी उमर खैय्याम की रूबाइयों ने आन्दोलित किया था। उसने सबसे पहले यह अध्ययन किया कि आखिर इन रूबाइयों में क्या रहस्य छिपा है। ये अपने आप में एक दर्शन कैसे हैं। क्यों न इन रूबाइयों को अंग्रेजी में अनूदित करके पाठकों को लाभान्वित किया जाए? यह थी फिट्जजेराल्ड की एक वैज्ञानिक चिंतन-प्रक्रिया।

फिट्जजेराल्ड एक वैज्ञानिक की तरह पहले तो इन रूबाइयों के अर्थ की गहराई में उतरे एवं तत्पश्चात् उन्होंने मूल पाठ का वैज्ञानिक विश्लेषण किया। निहित अर्थ को व्याकरणिक भाषा एवं काव्य भाषा दोनों स्तरों पर परखा। फिर लक्ष्य भाषा के अर्थ का वही अनुपात रखा जो मूल भाषा में था। उसने अपने इस प्रयोग द्वारा पूर्व और पश्चिम की दूरी को समाप्त कर दिया। सच तो यह है कि फिट्जजेराल्ड ने उमर खैय्याम की रूबाइयों का अंग्रेजी में अनुवाद करके स्वयं को अनुवाद वैज्ञानिक सिद्ध कर दिया। अनुवाद की प्रयोगशाला में ऐसा सफल अनुवाद-प्रयोग शायद ही अन्यत्र मिले।

किसी सुलझे हुए अनुवादक ने कहा है कि भारत की खोज पश्चिम में हुई है। इसका अर्थ यह हुआ कि भारत को खोजने वालों ने कुछ प्रयोग-प्रयास तो अवश्य किए होंगे। ये खोजकर्ता यदि विशुद्ध वैज्ञानिक नहीं भी थे तो विज्ञानोन्मुख अनुवादक तो रहे ही होंगे। फिर इतिहास गवाही भी देता है कि भारत के शास्त्र-ग्रन्थों में आध्यात्मिकता के मौजूद रत्न जो मठों और अरण्यों में छिपे हुए थे, पश्चिम ने उनके दर्शन अनुवाद के माध्यम से ही किए। जब वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों और पुराणों का सारा ज्ञान संस्कृत भाषा से विश्व की अन्य भाषाओं में अनूदित हुआ तो सारा संसार इस ज्ञान से चकित रह गया। श्रीमद्भगवत गीता ने न केवल जर्मनी, इंग्लैंड, अमेरिका एवं रूस के साहित्यकारों एवं विद्वानों को प्रभावित किया, बल्कि इससे यूरोप में एक ऐसा प्रखर अन्तर्ज्ञानवाद आन्दोलन उठा जिसने अमेरिका पर भी गहरा असर डाला। इस समूची पृष्ठभूमि में बड़े सटीक, वैज्ञानिक एवं सफल अनुवाद-प्रयोग हुए थे।

विज्ञान की दुनिया में एक के बाद एक प्रयोग होते हैं। इन प्रयोगों की प्रतिक्रिया भी होती है। इनमें संशोधन एवं परिवर्द्धन की संभावना भी रहती है। यही वजह है कि कॉपरनिक्स के प्रयोगों द्वारा साबित टेलीस्कोप अवधारणा को गैलेलियों ने अपने प्रयोगों द्वारा सम्पूर्णता प्रदान की थी। विश्व साहित्य में भी कुछ आधे-अधूरे प्रयोग किए गए हैं। एक ने दूसरे को आगे-पीछे सरकाया है। आदर्शवाद, यथार्थवाद, अतियथार्थवाद, प्रयोगवाद, प्रगतिवाद आदि साहित्यिक प्रयोग ही कहे जाएंगे। समय साक्षी है कि इन्हीं प्रयोगों के साथ-साथ अनुवाद प्रयोगों की निरंतरता भी मौजूद रही है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि अनुवाद में भी प्रयोग संभव है। यह बात अलग है कि अनुवादक अपनी इच्छानुसार प्रयोग करने में कभी-कभी कठिनाई महसूस करते हैं, क्योंकि सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था आड़े आती है। परन्तु इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि अनुवाद में प्रयोग हो ही नहीं सकते। अनुवाद में प्रयोग करने के लिए चिंतन-प्रक्रिया, विषय की पृष्ठभूमि, सुव्यवस्थित अध्ययन, क्रमबद्धता, जांच-पड़ताल, अनुभव आदि सभी घटक वैसे ही काम में आते हैं जैसे ये वैज्ञानिक प्रयोगों में। इसलिए बिना आपत्ति के यह माना जाना चाहिए कि अनुवाद अपनी "क्रमबद्ध पहुंच" की कसौटी पर खरा उतरता है और विज्ञान होने का आभास देता है।

अनुवाद एक कला भी है। सबसे पहले पाश्चात्य में अनुवाद को कला की संज्ञा दी गई और बाद में इसी तर्ज पर भारतीय लेखकों ने भी इसे कला माना। कला एक प्रकार की सृजना है, जिसमें कलाकार आत्माभिव्यक्ति करता है। एक कवि या चित्रकार की कला कृति में उसकी सहज प्रतिभा परिलक्षित होती है। इसी तरह अनुवाद में भी अनुवादक का व्यक्तित्व बड़ा प्रभावी होता है। बेशक अनुवादक के पास केवल मूल का आधार ही होता है, पर वह अपनी योग्यता, ज्ञान एवं अभ्यास के बल पर अत्यंत सुन्दर पुनःसृजन करता है। वह कथ्य के अतिरिक्त अभिव्यक्ति की भंगिमा को भी उतारता है। इसी बिन्दु पर वह अनुवादक कलाकार के रूप में सामने आता है।

कहते हैं कि जर्मन महाकवि गेटे "अभिज्ञान शाकुन्तल" को पढ़कर झूम उठा था। इस नाटक से मुग्ध होकर ही उसने विश्व को जर्मन भाषा में एक श्रेष्ठ कलाकृति प्रदान की। कालिदास के इस नाटक का संस्कृत से जर्मन में अनुवाद करते समय गेटे ने एक कलाकार के रूप में कथ्य, संदेश, प्रतीकों, बिम्बों, रोमानी भावों एवं प्रकृति चित्रणों को लक्ष्य भाषा में इस खूबसूरती से उड़ेला था मानो एक शरीर से आत्मा निकालकर दूसरे शरीर में डाल दी गई हो। उसने कला सौन्दर्य की अभिव्यंजना पर जरा भी खरोंच नहीं आने दी। कला की दृष्टि से इसी नाटक के राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा संस्कृत से हिंदी में किया हुआ अनुवाद अपेक्षाकृत फीका लगता है।

हर कलाकार किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ज्ञान को व्यावहारिक रूप में प्रयुक्त करता है। जाहिर है कि अनूदित कृति में निहित ज्ञान दूसरे लोगों के लिए लाभदायक सिद्ध होता है। लक्ष्य भाषा को जानने वाला मूल भाषा की संस्कृति, कथ्य, तथ्य, सभ्यता आदि के बारे में जाना जाता है। मैक्समूलर द्वारा "ऋग्वेद" का संस्कृत से जर्मन में अनुवाद करने से जर्मनवासियों एवं विद्वानों को भारत के ज्ञान का पता चला। "श्रीमद्भगवत गीता" का अंग्रेजी में अनुवाद पढ़कर एमर्सन, वाल्ट विटमैन, हेनरी डेविड थोरो आदि अमरीकी साहित्यकारों को "कर्म" "आत्मा" एवं "मृत्यु" के बारे में नई रोशनी मिली। एमर्सन की रचनाओं, थोरो के "वाल्डन" एवं विटमैन की "लीव्ज ऑफ ग्रास" में श्रीमद्भगवत गीत के सूत्र यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। टी०एस० इलियट की "वैस्टलैंड" भी इस प्रभाव से अछूती नहीं रह पाई है। अनूदित कलाकृति से हम जो ग्रहण करते हैं, उसे अपने व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करके अपने जीवन को अच्छा बना सकते हैं तथा इससे समाज और राष्ट्र को भी आगे बढ़ा सकते हैं। पर यह तभी संभव है जब अनुवादक एक कलाकार के रूप में अपनी भूमिका सक्षमता से निभाए।

कलाकार का स्वभाव बदलता रहता है। एक कलाकार और दूसरे कलाकार की विचारधारा आपस में कभी नहीं मिल सकती। यही कारण है कि कला के क्षेत्र में प्राचीन यूनानी कलाकारों से लेकर पिकासो तक न जाने कितने कला-प्रयोग हुए हैं और कलावादों ने जन्म लिया है। आज के कलाकारों के लिए लियोनार्डो द विन्सी, माइकिल एंजिलो, रेपल, पिसारो, पिकासो, आदि विश्व के महान कलाकार उतने ही ताजे हैं और अभिप्रेरणा देने वाले हैं, जितने वे अपने समय में थे। इन कलाकारों ने कला को नया जीवन दिया, उसमें क्रान्ति पैदा की और नए आयामों को छुआ। इन कलाकारों ने साहित्य-सर्जकों को भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।

यदि शेक्सपीयर ने होलिन्शाड की "क्रानिकिल" और प्लूटार्क की "लाइव्ज" का अंग्रेजी अनुवाद न पढ़ा होता तो वह अपने नाटकों में ऐतिहासिक एवं मानवतावादी दृष्टिकोण शायद ही उकेर पाता। नार्वी के नाटककार इब्सन के नाटक जब यूरोप की अन्य भाषाओं में अनूदित होकर लोगों के सामने आए तो उसके प्रभाव में नाटक यथार्थोन्मुख मानवतावादी, सम्पूर्णतया गद्यमय, मनोवैज्ञानिक और समस्यामूलक बन गया। इसी तरह बेल्जियम के प्रसिद्ध कवि मेटरलिंब के अनूदित नाटकों ने भी यूरोप के नाट्य साहित्य को अपने ढंग से प्रभावित किया। यह कहना अनावश्यक ही है कि इस समूची प्रक्रिया एवं पृष्ठभूमि के मूल में अनुवादक एक कलाकार के रूप में सफल एवं प्रभावक सिद्ध होता रहा है। उसने मूल के सौन्दर्य को सुरक्षित ही नहीं रखा, बल्कि अपनी अनूदित कलाकृतियों को कालजयी भी बना डाला।

अतः कहा जा सकता है कि जहां तक विषय के सुव्यवस्थित अध्ययन एवं क्रमबद्ध अभिगम की बात है, अनुवाद बेझिझक विज्ञान के पास सरक आता है और जहां तक आत्माभिव्यक्ति, पुनः सृजनात्मकता एवं सौन्दर्य-अभिव्यंजना की बात है, अनुवाद झट से कला की पनाह में चला जाता है। वास्तविकता यह है कि अनुवाद कुछ-कुछ विज्ञान का अंश लिए हुए है और कुछ यह कला है। फिर भी इसमें कला का अनुपात विज्ञान की अपेक्षा अधिक है।

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, सिंडीकेट बैंक, आंचलिक कार्यालय, नेप्च्यून टावर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद—380009 (गुजरात)

हिन्दी देश की एकता की कड़ी है।

- डॉ. जाकिर हुसैन

दूरसंचार के माध्यमों में दूरदर्शन का योगदान और हिन्दी शिक्षण

—डॉ० हीरालाल गुप्त

भारत जैसे विशाल देश के लिए दूरदर्शन केवल मनोरंजन का साधन नहीं है। इस देश की जनता को इसके द्वारा शिक्षित करना है। दूरसंचार सामाजिक परिवर्तन के लिए अत्यधिक शक्तिशाली माना जाता है। इकतीस वर्ष की छोटी अवधि में भारत में दूरदर्शन के ट्रान्समीटरों का जाल बिछ गया है। भारतीय दूरदर्शन ने नियमित सेवा सन् 1965 में शुरू की, पर इस स्वतंत्र नाम 1976 ई० में दूरदर्शन के रूप में मिला। दूरदर्शन की कार्य प्रणाली के दो प्रमुख पक्ष हैं:—(1) शैक्षणिक और (2) मनोरंजन संबंधी सामग्री की तैयारी और उसका प्रसारण तथा इस प्रसारित सामग्री को लोगों तक पहुंचाना।

दूरदर्शन द्वारा शिक्षण "टेली टीच" कहलाता है दूरस्थ स्थित छात्र कक्षाओं में शिक्षक के सामने न होकर घर बैठे कई माध्यमों द्वारा शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। मुक्त विद्यालय (Open School), मुक्त विश्वविद्यालय (Open University) के अस्तित्व में आने के बाद दूरसंचार के माध्यमों की उपयोगिता और भी बढ़ गई है क्योंकि इन संस्थाओं की छात्रों की संख्या हजारों में है। इस कार्य में इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग व राष्ट्रीय शैक्षिक व अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के कार्यक्रमों का विशेष योगदान है। उच्चस्तरीय कक्षाओं के लिए भी कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।

दूरदर्शन के शैक्षिक उपयोग—दूरदर्शन ने शिक्षा जगत को आकर्षक एवं दृढ़ आधार प्रदान किया है। यह अध्यापक को अवसर के अनुसार अध्यापन कार्य में सहायता करता है तथा उन सभी व्यक्तियों को जो अपनी किसी असमर्थता के कारण पूर्ण कालिक शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ रहते हैं, शिक्षा के अवसर प्रदान करता है।

शैक्षिक उपयोग के बारे में निम्न बातें उपयोगी सिद्ध हुई हैं:—

1. विभिन्न शिक्षण साधनों के समयोजन से विभिन्न विषयों में स्तरीय शिक्षण के लिए उपयोगी है।
2. उन प्रयोग प्रदर्शनों के लिए जिन्हें कक्षा में प्रदर्शित नहीं किया जा सकता है।
3. दृश्य और विशिष्ट तकनीकि के रूप में जैसे आँख से न दिखने वाली वस्तुओं को बड़े रूप में दिखाना या बहुत तेज गति से होने वाली गतिविधियों एवं कार्यों को स्पष्ट रूप से एवं धीमी गति से दिखाता है।
4. कठिनाई से उपलब्ध शिक्षण साधनों को छात्र तक पुहँचाना।
5. उन छात्र/छात्राओं को जो विश्वविद्यालय में प्रवेश नहीं कर सकते उन्हें शैक्षिक अवसर प्रदान करना।
7. साक्षरता के कार्यक्रम।
8. अध्यापकों के लिए सेवाकालीन कार्यक्रमों के प्रसारण हेतु।
9. आदर्श पाठ प्रस्तुत करने में।

दूरदर्शन पर शैक्षिक महत्व के प्रसारण कार्यक्रमों को शैक्षिक दूरदर्शन का नाम दिया गया है। ये कार्यक्रम हर स्तर पर हर विषय की शिक्षा से संबंधित हो सकते हैं।

दूरदर्शन और हिंदी शिक्षण

दूरदर्शन में कार्यरत इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय , नई दिल्ली, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक और अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली अपने प्रसारणों में अन्य विषयों पर अधिक ध्यान देते हैं, भाषा विषय पर कम।

उपग्रह संचार एवं दूरदर्शनः

सन् 1975 ई॰ में हमारे देश में अमेरिकी भू उपग्रह ए॰टी॰एस॰ 6 के उपयोग के द्वारा एक नई क्रांति आई। इससे कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उड़िसा, बिहार, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के 2400 गांवों को दूरदर्शन की सुविधा मिली। यह 1500 घंटों का कार्यक्रम था जिसमें कन्नड़, तेलुगु, उड़िया और हिंदी भाषाओं के कार्यक्रम प्रसारित किए गए। यह कार्यक्रम 5 से 12 वर्ष के आयु के छात्रों के लिए सुबह और शाम हिंदी में और प्रांतीय भाषाओं में प्रसारित होते थे पर अमेरिका के अनुबंध समाप्त हो जाने के कारण यह कार्यक्रम बंद हो गया। इसे पुनः शुरू करने के भारतीय भाषाओं का प्रसार तेजी से होगा।

भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह

सन् 1983 ई॰ से भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह (आइ॰एन॰एस॰टी॰ई॰बी॰) कार्य कर रहा है। इसका प्रयोग मनोरंजन, प्रचार, मौसम, भूगर्भ आदि क्षेत्रों में सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा रहा है। साथ ही इसका प्रयोग अनौपचारिक शिक्षा (Informal Education) में भी किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के दो पक्ष हैं:—दो आयु वर्ग (5 से 8 तथा 9 से 11 वर्ष) के बच्चों के लिए शिक्षण,अंचल विशेष के निवासियों के लिए कार्यक्रम—जैसे कृषि, स्वास्थ्य, सफाई, ग्रामीण उद्योग, परिवार कल्याण, राष्ट्रीय एकता और साक्षरता आदि। ये कार्यक्रम तेलुगु, उड़िया, मराठी, गुजराती और हिंदी में प्रसारित हो रहे हैं जिनमें गावों के निवासी अपनी-अपनी भाषा में अपने जीवन और कार्यकलाप से जुड़े कार्यक्रम देख रहे हैं।

स्कूली दूरदर्शन

(एस॰टी॰वी॰) इसके अंतर्गत स्कूल और गैर स्कूली बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा देने के लिए और अधिगम के अधिकतर अवसर देने के लिए होता है।

स्कूली दूरदर्शन का मुख्य उद्देश्य है उन सुविधाओं और अनुभवों को प्रदान करना जो स्कूल में उपलब्ध नहीं है। पाठ्यचर्या की कमियों को दूर करना और शिक्षण में सुधार लाना।

भारत में स्कूली दूरदर्शन दिल्ली, मुंबई, मद्रास और श्रीनगर के केन्द्रों से प्रसारित होते हैं। हिंदी और अंग्रेजी के लिए कक्षा एक लिए हर सप्ताह एक पाठ का प्रसारण होता था पर आज 5 से 16 हो गई है। सन् 1961 ई॰ में 600 स्कूलों को 850 दूरदर्शन सेट्स दिए गए और इससे लाभान्वित होने वाले छात्रों की संख्या करीब 3 लाख है।

अनौपचारिक अधिगम

दूरदर्शन ने भारतीय और विदेशी साहित्यिक कृत्तियों पर आधारित कई धारावाहिकों का निर्माण किया है। हिन्दी की साहित्यिक कृत्तियों में उपन्यास, नाटक, कहानी, कविता आदि सभी पर दूरदर्शन ने काफी सराहनीय प्रयास किए हैं। इनमें सबसे ज्यादा समय प्रेमचंद को मिला। उनके दो उपन्यास कर्मभूमि और निर्मला का प्रसारण सभी दर्शकों में लोकप्रिय रहा।

हिंदी के प्रख्यात कवियों की कविताओं का अभिनय, दृश्य, बिम्ब आदि के माध्यम से संजीव किया गया है।

हिंदी नाटकों में जयशंकर प्रसाद व मोहन राकेश की प्रस्तुती सराहनीय रही। "लहरों का राजहंस" तथा "आषाढ़ का एक दिन" ध्रुवस्वामिनी तीनों ही नाटक अपने कथ्य और ऐतिहासिक परिवेश को दर्शकों के सामने साकार हुए।

हिंदीतर साहित्यिक कृत्तियों में बंगला, कन्नड़, पंजाबी की कृत्तियां भी दूरदर्शन ने ली है।

दूरदर्शन में बनाए गए कार्यक्रम

इन कार्यक्रमों में कुछ कार्यक्रम परिचर्चा, भेटवार्ता आदि है। इन कार्यक्रमों में बौद्धिक चर्चा और साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले छात्रों एवं दर्शकों का ज्ञानवर्धक होता है। दूरदर्शन समय-समय पर कवि सम्मेलन प्रस्तुत करता है जो साहित्यिक एवं मनोरंजक दोनों ही होते है।

साहित्येतर कार्यक्रम

साहित्येतर कार्यक्रमों को सूचनात्मक, ज्ञानात्मक, व्यवसायिक व मनोरंजक कार्यक्रमों में बाँटा गया है। ये कार्यक्रम अनौपचारिक शिक्षण व अधिगम का एक विस्तृत क्षेत्र है। समाचार की भाषा, खेलकूद की भाषा विज्ञापन की भाषा अपने उद्देश्यानुसार होती हैं। समाचारों में श्रव्य के साथ दृश्य अंश भी होते है।

सूचनात्मक और ज्ञानात्मक में खेल की कमेंट्री, बजट, रिपोर्ताज, प्रश्न मंच और युवामंच आदि आते हैं।

विज्ञापनदाताओं का मनोविज्ञान उपभोक्ता समाज को ध्यान में रखकर काम करता है। आकर्षण विज्ञापन की पहली शर्त है। विज्ञापन का आकर्षक होना कई बातों पर निर्भर है:—विषय की संक्षिप्तता पूर्ण और सहज भाषा में होनी चाहिए।

दूरदर्शन की भाषा

महाकाव्यों जैसे रामायण और महाभारत ने संस्कृतनिष्ट हिंदी को श्रव्य रूप में लोगों तक पहुँचाया है। इसके द्वारा लम्बे-लम्बे वाक्य व कुछ प्रयोग भी लोगों में लोकप्रिय है। 'भारत की एक खोज' में संस्कृत श्लोकों का सुन्दर एवं सरल भाषा में अनुवाद व प्रस्तुती का हिंदी में एक अनूठा प्रयोग रहा।

वैज्ञानिक धारावाहिको के कारण हिंदी में एक अनोखी शक्ति आ रही है। "सिग्मा" और "इन्द्र धनुष" जैसे वैज्ञानिक धारावाहिक कथावस्तु की नवीनता लिए हुए और तकनीकी रूप वैज्ञानिक भाषाई प्रस्तुति का एक अनोखा उदाहरण है। ये धारावाहिक हिंदी की संपदा को समृद्ध बना रहे हैं और अभिव्यक्ति के स्तर पर केवल अंग्रेजी भाषा के दावों को झुठला रहे हैं।

हिंदी की विविध शैलियाँ

दूरदर्शन में हमें हिंदी की विभिन्न शैलियां देखने को मिलती हैं, जैसे कलकतिया हिंदी, दिल्ली की हिंदी , बंबइयां हिंदी , मद्रासी हिंदी, दक्खिनी हिंदी आदि। कुछ धारावाहिक जो प्रादेशिक व विदेशी भाषाओं के प्रख्यात लेखकों की रचनाओं पर बने हैं, हिंदी में आ रहे हैं जैसे, कहानी, खजाना दर्पण आदि। इनमें सांस्कृतिक विविधता के साथ-साथ भाषिक विविधता के भी दर्शन होते हैं।

*प्रवक्ता, हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, इम्फाल, 795001 (मणिपुर)

☆☆☆

'छात्र ही देश की आशा है। सर्वत्र दुनिया में वे ही स्वतंत्रता के अग्रदूत रहे हैं। उनका लक्ष्य है देश की आजादी व नए राष्ट्र का निर्माण। यह आसान नहीं है। इसके लिए चाहिए काफी सोच-विचार, तैयारी व आत्मत्याग। देश के तरुणों को यही करना होगा। अपने आदर्श के अनुकरण में जरा भी तकलीफ नहीं होती। जो एक दर्शक को निहायत ही दु:खदायक प्रतीत होता है, एक उच्च आदर्श पर चलने वाले के लिए वही चीज आनन्द स्वरूप है। जो जितने आदर्श का दीवाना है वह उतना ही आत्मत्याग की शक्ति की उपलब्धि कर पाता है। हर एक में असीम शक्ति सुप्त है। जो जिस समय आजादी के खो बैठने की जलन महसूस करता है, उसी समय उसकी सुप्त शक्ति जागृत होती है।

(1928, राजसाही शहर में छात्रों द्वारा स्वागत किए जाने पर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस)

हिन्दी कोश निर्माण में विदेशी-विद्वानों की भूमिका

—डॉ पूरन चन्द टंडन

हिन्दी को, वर्तमान गौरवपूर्ण स्तर तक पहंचाने में इतिहास की जो भूमिका रही है, उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका हिन्दी भाषा एवं साहित्य के विभिन्न पक्षों एवं संदर्भों को उजागर तथा विकसित करने में विदेशी एवं अहिन्दी भाषी विद्वानों की भी रही है। हिन्दी किसी प्रदेश विशेष, धर्म विशेष या जाति विशेष की भाषा नहीं है। यह, हिन्दी भाषा की अपनी शक्ति और अपना सामर्थ्य है कि वह कई धर्म—संस्कृतियों की संपदा तथा विविध देशी-विदेशी विद्वानों की सेवा-श्रद्धा से सुशोभित एवं समृद्ध होती रही है। प्रादेशिक भाषा से चलकर राजभाषा और राष्ट्रभाषा से चलकर अन्तर्राष्ट्रीय भाषा की ओर उन्मुख, यही हिन्दी आज भारत की भौगोलिक सीमा से बाहर भी संसार के बहुत बड़े क्षेत्र में प्रतिष्ठा पा चुकी है। बोलने वालों की दृष्टि से तो हिन्दी संसार की चौथी बड़ी भाषा है ही। भारत से बाहर अर्थात् विदेशों में आज तक एक सौ चालीस से अधिक विश्वविद्यालय एवं संस्थान हैं जहां हिन्दी के पठन-पाठन एवं शोधादि की दृष्टि से ही नहीं, सम्पर्क एवं मेल-जोल की दृष्टि से भी अध्ययन एवं प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। स्वेच्छा से एवं स्वान्तः सुखाय हिन्दी पढ़ने, लिखने और समझने वाले देशों में मुख्यतः रूस, अमेरिका, कनाड़ा, इंग्लैंड, जर्मनी, बेल्जियम, फ्रांस, युगोस्लाविया, चैकोस्लोवाकिया, इटली, रूमानिया, चीन, जापान, नार्वे, स्वीडन, हंगरी, बुल्गारिया, पौलैंड, आस्ट्रेलिया, हॉलैंड, रोम तथा मैक्सिको आदि कई देशों का नाम लिया जा सकता है, तो मूलतः भारत वंशी किन्तु वर्तमान में प्रवासी-भारतीयों के रूप में पहचान बना लेने वाले मॉरिशस, फीजी, गुयाना, सूरीनाम, कीनिया, ट्रिनीडाड, बर्मा, थाईलैंड, नेपाल, बंगला देश, श्रीलंका, मलेशिया तथा दक्षिणी अफ्रीका आदि देशों में भी हिन्दी पैतृक संपत्ति और मातृभाषा के रूप में स्थापित होकर अत्यंत विस्तार-प्रचार पाती रही है। इन देशों में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं छपती रहीं; विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी का पठन-पाठन चलता रहा; शोध एवं कार्यशालाएं चलती रहीं। अनुवाद होते रहे। हिन्दी, व्याकरण तथा कोश लेखन जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाएं बरसों चलती रहीं। साहित्य एवं भाषा के इतिहास लिखे जाते रहे। व्यक्तिगत तथा संस्थागत स्तर पर हिन्दी के लिए ये गतिविधियां किसी न किसी रूप में कार्यान्वित होती ही रही हैं। हिन्दी प्रकाशन तथा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के हिन्दी कार्यक्रम भी इस दिशा में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। यों हिन्दी की इस विदेशी—सेवा तथा सहयोग पर बहुत कुछ विस्तार एवं प्रमाणों सहित लिखा जा सकता है किन्तु यहां सीधे विषय पर आते हुए इतना अवश्य कहना चाहूंगा कि हिन्दी का जितना अहित हमने हिन्दीतर अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोगमूलक अध्ययन न करने से किया है, उतना ही अहित इन अहिन्दी भाषी तथा विदेशी विद्वानों द्वारा की गई महत्वपूर्ण एवं अन्यतम हिन्दी—सेवाओं को नजरअंदाज करके भी किया है।

जिस प्रकार मध्य युग में अनगिनत सूफी इतर मुस्लिम कवियों ने हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि की थी, उसी प्रकार विदेशों के कई विद्वान बंधुओं ने भी हिन्दी भाषा, व्याकरण, साहित्य तथा कोशादि ग्रंथ तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सन् 1655 ई० में **एडवर्ड टेरी** ने अपनी पुस्तक **वाएज टु द ईस्टइंडीज** तैयार की। सन् 1704 ई० में **तूरोनेसिस** ने **लैक्सिकन लिंगुआ हिन्दुस्तानिका** नामक पुस्तक तैयार की। व्यापारियों के बढ़ते हुए व्यापार संबंध को ध्यान में रखकर सन् 1715 ई० में **जे० जे० केटेलियर** ने डच भाषा में **हिन्दुस्तानी का एक व्याकरण** तैयार किया। हिन्दुस्तानी के संभवतः इस प्रथम व्याकरण का सन् 1743 में **लायडेन** ने

लैटिन अनुवाद भी किया। सन् 1852 ई० में फ्रांस में दिए गए एक भाषण में **गार्सा-द-तासी** ने **हिन्दुई-हिन्दुस्तानी** को भारतीय लोक-भाषा कहा। सन् 1886 ई० में लन्दन से प्रकाशित **हाब्सन जाब्सन** कोश में हिन्दुस्तानी को भारत की राष्ट्रभाषा कहा गया।

स्पष्ट है कि विदेशों में हिन्दी भाषा और साहित्य की इस बहुमुखी सेवा का आरंभ 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हो चुका था। सर्वप्रथम अंग्रेज़ी, डच तथा रूसी भाषाओं में हिन्दी भाषा का सामान्य ज्ञान अर्जित करने के लिए व्याकरण एवं कोश ग्रंथों की रचना हुई और धीरे-धीरे यह यात्रा साहित्यिक अध्ययन, सृजन एवं शोध तक विकसित होने लगी। यूनेस्को की भाषा होने के गौरव से सम्पन्न यह भाषा अब शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा होने का गौरव भी हासिल करेगी ही। आज बहुत से विदेशी-विद्वानों के नाम हैं जिन्हें हिन्दी भाषा एवं साहित्य के विकास और संवर्द्धन के लिए ससम्मान स्मरण किया जाता है। इनमें सोवियत संघ के डा॰ ई॰पी॰ **चेलिशेव**, पश्चिमी जर्मनी के डा॰ **लोठार लुत्से**, त्रिनिदाद के **श्री शंभुनाथ कपिलदेव**, चेकोस्लोविया के डा॰ **ओदोलेन स्मेकाल**, जर्मन जनवादी गणतंत्र के डा॰ **हेलमुट नेस्पिताल**, जापान के **के॰ दोई॰** स्वीडन के प्रो॰ **लेनार्ड पेर्सन**, कनाडा के डा॰ **क्रिस्टोफर किंग** ब्रिटेन—कैम्ब्रिज—विश्वविद्यालय के **प्रो॰ (डा॰) आर॰एस॰ मैकग्रेगर**, फ्रांस की **श्रीमती निकोली बलबीर**, पौलैंड के **प्रो॰ मैरिया बृस्की** आदि-आदि सैकड़ों नाम इस दिशा में गिनवाए जा सकते हैं। डा॰ **गिलक्राईस्ट, गार्सा-द-तासी, डा॰ मोनियर विलियम्स, डा॰ अब्राहम ग्रियर्सन, ग्राहम ब्रेली, डा॰ एल॰पी॰ तेससीतोरी, जे॰ फर्गुसन, ए॰पी॰ बरान्निकोव, ए॰पी॰, बरान्निकोव, फादर कामिल बुल्के, केटलर** तथा **शेक्सपीयर** आदि कुछ नाम तो हिन्दी सेवा के लिए जग-विदित ही हैं।

हिन्दी में आधुनिक प्रणाली, वैज्ञानिक वर्गीकरण एवं वर्णमाला क्रम के आधार पर कोश रचना करने का शुभ कार्य विदेशी विद्वानों ने ही प्रारंभ किया। इनमें अंग्रेजी-हिन्दी, हिन्दुस्तानी-अंग्रेजी-अंग्रेजी-संस्कृत, बंगला-हिन्दुस्तानी कोश, कानून और वाणिज्य कोश तथा शरीर रचना और चिकित्सा शब्दावली कोश जैसे कई उदाहरण देखे जा सकते हैं।

सन् 1964 ई० में भारतीय भाषाओं के 2190 कोशों की सूची राष्ट्रीय ग्रंथालय, कलकत्ता से प्रकाशित हुई थी। इनमें हिन्दी के कोशग्रंथों की संख्या 308 थी जो अन्य सभी से अधिक थी। सन् 1941-42 में डा॰ हरदेव बाहरी ने भी "कोशाकारी में हिन्दी का योगदान" शीर्षक से एक निबंध प्रकाशित कराया था। 1967 में डा॰ भोलानाथ तिवारी ने "हिन्दी कोशों की परंपरा" का टिप्पणी सहित लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जो "भाषा" पत्रिका में प्रकाशित भी हुआ था। अतः इस प्रकार की सूचनाएं पहले भी मिलती रही हैं जिनमें हिन्दी-हिन्दी, हिन्दी-अंग्रेजी, अंग्रेज़ी-हिन्दी के कोशों की जानकारी तो है ही हिन्दी पर्यायवाची, मुहावरा और लोकोक्ति, ज्ञानकोश, हिन्दी साहित्य कोश, हिन्दी बोलियों के कोश, हिन्दी साहित्यकार कोश, हिन्दी कृति-विशेष कोश, शिक्षा कोश, पारिभाषिक शब्दावली कोश, बैंकिंग शब्दावली कोश, विधि, कृषि, मानविकी पारिभाषिक कोश, समाजशास्त्रीय-विश्वकोश, भौगोलिक शब्दकोष, भाषा शास्त्र पारिभाषिक के शब्दकोश, भारतीय इतिहास कोश, वैज्ञानिक, इंजीनियरिंग, साहित्यशास्त्र, हिन्दी आख्यान कोश, तथा हिन्दी कथाकोश आदि-आदि अनेकों तरह के कोश लेखन का कार्य चलता रहा। हिन्दी से, अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के कोश, एवं अन्य भारतीय तथा विदेशी भाषाओं से, हिन्दी के कोशों की परंपरा भी यहां मिलती है। इनमें हिन्दी-संस्कृत, हिन्दी-गुजराती, हिन्दी-मराठी, हिन्दी-बंगला, हिन्दी-पंजाबी, हिन्दी-उड़िया, हिन्दी-कन्नड़ तथा हिन्दी-मलयालम आदि कई कोश देखे जा सकते हैं तो हिन्दी-रूसी, हिन्दी-अंग्रेज़ी तथा हिन्दी-फ्रेंच आदि कोश भी देखने को मिलते हैं। यह विचार करना आवश्यक है कि इस कोश लेखन और संपादन के इतिहास में विदेशी-विद्वानों ने किस तरह और कितना योगदान दिया।

यह तो स्पष्ट है कि विदेशी विद्वानों के हिन्दी-कोश लेखन से पूर्व भारतीय-विद्वानों ने भी समय-समय पर इस दिशा में कार्य किया किन्तु यह कार्य वैज्ञानिक एवं आधुनिक न बन सका था। अतः यह भी स्पष्ट होना ही चाहिए कि कोश-कला को एक सुदृढ़ व्यवस्था तथा सुलझी हुई वैज्ञानिक दृष्टि विदेशी-विद्वानों ने ही दी। इस संदर्भ में नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित "हिन्दी शब्द-सागर" की भूमिका का यह अंश देखा जा सकता है—"जब अंग्रेज़ों का भारतवर्ष के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित होने लगा तो नवागंतुक अंग्रेज़ों को इस देश की भाषाएं जानने की विशेष आवश्यकता जान पड़ने लगी, फलतः वे देश की भाषाओं के कोश अपने सुभीते के लिए बनाने लगे। इस प्रकार इस देश में आधुनिक ढंग के और अकारादि क्रम से बनने वाले शब्द—कोशों की रचना का सूत्रपात हुआ। कदाचित देश की भाषाओं में से सबसे पहले हिन्दी के दो शब्दकोश श्रीयुत् जे॰ फरगुसन नामक एक सज्जन ने प्रस्तुत किये थे जो रोमन अक्षरों में सन् 1773 में लन्दन में छपे थे। इनमें से एक हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ी का और दूसरा अंग्रेज़ी-हिन्दुस्तानी का था। इसी प्रकार का एक कोश सन् 1790 में छपा था जो श्रीयुत् हेनरी हेरिश के प्रयत्न का फल था। सन् 1808 में जोसफ टेलर और विलियम हन्टर के सम्मिलित उद्योग से कलकत्ता में एक अंग्रेज़ी-हिन्दुस्तानी कोश प्रकाशित हुआ था। इसके उपरान्त सन् 1810 में एडिनबरों में श्रीयुत् जे॰बी॰ गिलक्राइस्ट का और सन् 1817 में लंदन में श्रीयुत् शेक्सपीयर का एक अंग्रेज़ी-हिन्दुस्तानी और एक हिन्दुस्तानी-अंग्रेजी कोश निकला था।....हिन्दी भाषा या देवनागरी अक्षरों में सबसे पहला कोश पादरी एम॰टी॰ एडम ने तैयार किया जो सन् 1829 में हिन्दी-कोश के नाम से कलकत्ता में प्रकाशित हुआ।

निःसन्देह, विदेशी विद्वानों के योगदान से हिन्दी कोश-लेखन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। उल्लेखनीय यह है कि इसी परंपरा ने भारतीय विद्वानों को प्रभावित और प्रेरित भी किया। इन विदेशी विद्वानों ने कई प्रकार के कोश तैयार किए। इनमें सर्वप्रथम हम अंग्रेज़ी-हिन्दी, हिन्दी-अंग्रेजी, तथा हिन्दुस्तानी—भाषा-कोश पर दृष्टि डालते हैं—

1. सर्वप्रथम हमें सन् 1773 ई॰ में रोमन अक्षरों में प्रकाशित **जे॰ फरगुसन का हिन्दुस्तानी भाषा कोश** देखने को मिलता है। इस कोश का अपना एक ऐतिहासिक महत्व है।

2. सन् 1790 ई० के आसपास प्रकाशित **गिलक्राइस्ट का डिक्शनरी ऑफ इंगलिश एंड हिन्दुस्तानी** (अंग्रेज़ी-हिन्दुस्तानी कोश) ग्रंथ मिलता है। इस ग्रंथ में 1000 शब्द थे और इसका अत्यंत स्वागत भी किया गया था। इनके व्याकरण तथा इस कोश के प्रकाशन के बाद ही गिलक्राइस्ट हिन्दुस्तानी के विद्वानों में गिने जाने लगे। सन् 1810 ई० में एडिनबरा से इसका एक नवीन संस्करण भी प्रकाशित हुआ जिसमें **थामसरोबक** ने गिलक्रास्टि को सहयोग दिया। इस संस्करण में फारसी लिपि का त्याग कर दिया गया था।

3. गिलक्राइस्ट के ही समकालीन **कर्कपैट्रिक** का 1785 में **ए वाकेबुलरी, पर्शियन, अरेबिक एंड इंग्लिश** ग्रंथ लंदन से प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक के अंत में **न्यू हिन्दी ग्रामर एंड डिक्शनरी** पर एक योजना दी गई थी। लेखक इस ग्रंथ को आठ खंडों में प्रकाशित कराना चाहता था। लेखक ने प्रस्तावित योजना के आठ खंडों के क्रमशः हिन्दी लिपि और चिह्नों पर विचार, विभिन्न पदों पर विचार, व्युत्पन्न और शब्द गठन पर विचार, वाक्य विन्यास और मुहावरे; मूल, व्युत्पन्न और समस्त हिन्दी क्रियाएं, कुल हिंदी शब्दावली; प्रचलित अरबी फारसी शब्दावली तथा व्याकरणिक नियमों के उदाहरण आदि की योजना तैयार की थी किन्तु संभवतः यह ग्रंथ तैयार नहीं किया जा सका।

4. सन् 1808 में प्रकाशित **विलियम हन्टर बोल्ड हटाएं हिन्दुस्तानी-अंग्रेजी कोश** की जानकारी भी मिलती है। यह ग्रंथ दो खंडों में था और टी० अवर्ट के हिन्दुस्तानी प्रेस से रोमन अक्षरों में छपा था। इसकी विशेषता यह रही कि इसमें अरबी-फारसी और हिन्दी-संस्कृत के शब्द भी थे। कतिपय शब्दों को इसमें व्युत्पत्ति के साथ दिया गया था। तीसरे संस्करण में इस कोश में "दक्खिनी" हिन्दी के शब्दों को शामिल करने की जानकारी भी मिलती है।

5. सन् 1817 ई० में **जॉन शेक्सपीयर** द्वारा लिखित 2329 पृष्ठ और 70,000 शब्दों वाला **हिन्दुस्तानी-अंग्रेज़ी शब्दकोश** भी मिलता है। इसमें भी कुछ शब्दों की व्युत्पत्ति पर विचार किया गया। इसके तीसरे संस्करण में "दक्खिनी" रचनाओं में बहुत से शब्द चुनकर शामिल किए गए तो चौथे संस्करण में वली, मीर, मीरहसन तथा तकी आदि लेखकों की "इखवाम—सफा", गुल बकावली, बागोबहार, तोता कहानी, बागें उर्दू, अनवरे सुहेली तथा आराइशे—महफिल आदि गद्य-पद्य रचनाओं से भी कई शब्द लेकर जोड़ दिए गए। संस्कृत के कई शब्द भी इस कोश में शामिल किए गए। शेक्सपीयर की विशेषता यह थी कि उन्होंने अपने से पहले के कई कोशकारों के कार्य से लाभ उठाया और अपने कोश को समृद्ध बनाया।

6. सन् 1829 ई० में **पादरी टी० एडम** ने एक **हिन्दी शब्दकोश** तैयार किया जिसमें हिन्दी से हिन्दी शब्दार्थ दिये गए थे। इसका द्वितीय संस्करण सन् 1838 ई० में प्रकाशित हुआ। एडम—साहब द्वारा लिखित एक व्याकरण की चर्चा भी मिलती है। हिन्दी में यह अपनी तरह का पहला कोश था।

7. सन् 1846 में बोलचाल के तथा साहित्य के 1,30,000 शब्दों का **संग्रह हिन्दी और अंग्रेज़ी कोश** सामने आया इसके लेखक थे **एन्टी० थ्रेंप्सन** तथा इसका उच्चारण में रोमन दिया गया हैं।

8. सन् 1846 ई० में **डंकन फोर्ब्स के हिन्दुस्तानी और अंग्रेजी कोश** की जानकारी भी मिलती है। ये लंदन में किंग्स कालेज में भाषा और साहित्य के प्रोफेसर थे। इस कोश का मुख्य आधार 1808 में प्रकाशित हंटर का कोश था। इसमें पूर्व प्रकाशित कुछ कोशों की चर्चा भी की गई है।

9. सन् 1870 ई० के आसपास **पादरी जे०डी० बेट का ए० डिक्शनरी ऑफ हिंदी लैंग्वेज** हिन्दी भाषा का शब्दकोश देखने को मिलता है। हिन्दी व्याकरण तथा ध्वनि गठन पर विचार करते हुए लेखक ने बोलियों के कुछ शब्दों को भी समाहित किया है। बाइबिल के कुछ शब्द भी इसमें शामिल किए गए हैं। इसमें अपने से पहले के तीन कोशों की चर्चा की गई है।

इस प्रकार के कोशों के अतिरिक्त कुछ अन्य कोशों की जानकारी भी मिलती हैं जिनमें **ए० टी० फ्लांटस का उर्दू-हिन्दी-अंग्रेज़ी कोश** प्रमुख है। सन् 1884 ई० में प्रकाशित इस कोश में शब्दों का क्रम उर्दू वर्णमाला के हिसाब से रखा गया है। व्याकरण उच्चारण संबंधी दोषों से दूर यह अत्यंत प्रचलित कोश है। युगीन हिन्दी के अच्छे कोशों में इसकी गिनती रही है। इसी प्रकार **कैप्टन प्राइस के प्रेमसागर का शब्द-भंडार** नामक एक कोश की चर्चा भी मिलती है। **थॉमसन** की एक **'स्कूल डिक्शनरी'** की जानकारी भी मिलती है। किन्तु यह मात्र एक शब्द-संग्रह था जिसमें वैज्ञानिक पद्धति को भी नहीं अपनाया गया। इसी प्रकार सन् 1897 ई० में **रोजारिओं के अंग्रेज़ी, बंगला और हिन्दुस्तानी कोश** के प्रकाशन की जानकारी भी मिलती है। रोमन लिपि में प्रकाशित इस कोश में अंग्रेज़ी के कुछ शब्दों का विस्तृत अर्थ भी दिया गया।

इस प्रकार के कोशों की परंपरा में सर्वाधिक प्रचलित, चर्चित एवं प्रामाणिक कोश **फादर कामिल बुल्के का अंग्रेज़ी-हिन्दी कोश** है यह कोश आज भी प्रमुख कोश माना जाता है। हिन्दी—अंग्रेज़ी के विद्यार्थियों के लिए बराबर उपयोगी ठहरने वाले इस कोश में अंग्रेज़ी शब्दों के उच्चारण को भी नागरी लिपि में दिया गया है। लिप्यंतरण का पूरा विवरण भी भीतर दिया गया है। कोश में प्रयुक्त सभी संकेतों को भी स्पष्ट किया

गया है। अंग्रेज़ी शब्दों के विभिन्न अर्थ देकर कोष्ठक में अतिरिक्त संकेत भी दिये गए हैं। स्त्रीलिंग, पुल्लिंग या उभयलिंगी शब्दों को भी चिन्हित किया गया है। वर्णमाला क्रम, अर्द्धविराम द्वारा विभिन्न अर्थों का विभाजन तथा दो अलग शब्दों में लिखित समास आदि की विस्तृत जानकारी दी गई है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कोशों की जानकारी भी मिलती है जिसमें 1705 ई० में फादर फ्रांसिस्कस, एम० तुरोनैन्सिस द्वारा तैयार किया गया लक्सीकन लिंगओं इन्दोस्तानिका है। इसमें भी बाइबिल से संबंधी रचनाओं की शब्दावली दी गई है। ईसाई मिशिनरों का यह पहला कोश कहा जाता है। सन् 1894 में रेव्हेन थॉमस क्रेवेल द्वारा तैयार इंग्लिश-हिन्दी डिक्शनरी की जानकारी भी मिलती है जिसमें 35000 शब्दों का संग्रह है। इसमें भी शब्दों की व्युत्पत्ति और मुहावरे दिये गए हैं। कहीं-कहीं सचित्र व्याख्या भी की गई है। 307 पृष्ठ की यह पुस्तक हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से ही आठ आने कीमत में उपलब्ध थी। इसी प्रकार इंग्लिश-हिन्दुस्तानी वैक्यूब्लरी शीर्षक से एक अन्य कोश भी मिलता है जिसके लेखक लैफ्टीनैन्ट कर्नल डी० सी० फिलॉट हैं। यह बहारी पब्लिकेशन से सन् 1982 में पुनः मुद्रित हुआ है। इसका प्रथम संस्करण सन् 1917 में प्रकाशित हुआ था। एम० मोनियर विलियम के ए डिक्टशरी आॅफ इंग्लिश एंड संस्कृत कोश की जानकारी भी मिलती है। यह मोती लाल बनारसी दास से छपा था। सन् 1976 में इसका चौथा संस्करण आया।

इस प्रकार के कोशों के अतिरिक्त रूसी-हिन्दी तथा हिन्दी-रूसी कोश भी आकर्षण का विषय रहे हैं। व०म० बेस्क्रोब्जी का हिन्दी रूसी शब्दकोश (दो खंड), जिसमें 75,000 शब्द हैं और सन् 1972 में प्रकाशित हुआ है ऐसा ही कोश है। इसके संकलनकर्ता अ०स० बरखुदारोव, व०म० बेस्क्रोब्जी, ग०अ० जोग्राफ तथा ब०प० लिपरोव्स्की थे। साहित्यिक हिन्दी के शब्द तथा पर्यायवाची शब्दों की बहुलता इसकी विशेषता है। उपभाषाओं और बोलियों के शब्दों को भी इसमें समाहित किया गया है। सन् 1953 में हिन्दी-रूसी शब्दकोश के प्रकाशन के प्रमाण भी मिलते हैं। इनके अतिरिक्त हिन्दी-रूसी और रूसी-हिन्दी पाॅकेट डिक्शनरी की चर्चा भी मिलती है। ये सन् 1958 में प्रकाशित हुई। दो छात्रोपयोगी शब्दकोश (माॅस्को 1962) भी तैयार किये गए, जिसकी शब्द संख्या साढ़े चार हजार बताई जाती है। इसका संकलन ओ०ग० उलत्सिके रोव ने किया। इसी प्रकार न०इ० सोलन्तसेवा द्वारा संकलित दस हजार शब्दों वाले रूसी-हिन्दी शब्दकोश की जानकारी भी मिलती है।

कतिपय लोकोक्ति-संग्रह तथा पारिभाषिक शब्दावली संग्रह भी उस समय तैयार किये गए। उनमें सन् 1824 ई० में फारसी और हिन्दुस्तानी कहावतों का एक संग्रह प्रमुख है। इसका संकलन और अनुवाद थॉमस रोबक ने किया था। हिन्दुस्तानी प्रेस, कलकत्ता से मुद्रित "थॉमस रोबक का लोकोक्ति संग्रह" नामक इस कोश का संपादन एच०एच० विलसन ने किया था। वास्तव में विलियम हंटर ने ओरियंटल प्रवर्बियल डिक्शनरी नामक इस कोश का संग्रह आरंभ किया था, फिर इसी काम को थॉमस रोबक ने आगे बढ़ाया और वे भी इसे पूरा न कर सके तो उनके तीसरे मित्र एच०एच० विलसन ने इस कार्य को सम्पन्न किया था। सन् 1817 ई० में जन्मे फैलन साहब का एक कोश भी अनोखा कोश है जिसमें शब्दों और कहावतों को अत्यंत परिश्रम से जुटाया गया है। ए न्यू हिन्दुस्तानी-इंग्लिश डिक्शनरी, विथ इलेस्ट्रेशन्स फ्रॉम हिन्दुस्तानी लिटरेचर एंड फोकलोर नमक यह कोश सन् 1879 ई० में प्रकाशित हुआ। फैलन के हिन्दुस्तानी-कहावतों के इसी विशाल कोश को कैप्टन आर०सी० टेम्पुल ने संपादित और संशोधित कर प्रकाशित कराया। इसमें मारवाड़ी, मगही और भोजपुरी की कहावतें भी संकलित थीं। इन्हीं फैलन साहब ने सन् 1878 के आसपास एक कानून एवं वाणिज्य कोश भी बनाया जिससे तद्युगीन भारतीय न्यायालयों में प्रयुक्त शब्दावली की जानकारी भी मिलती है। सन् 1862 में डब्ल्यू०एफ०जॉनसन के हिन्दी कहावतों का कोश ग्रंथ की जानकारी भी मिलती है।

थॉमस रोबक के ही नाविक कोश की चर्चा भी मिलती है जिमसें नौ-सैना से सम्बद्ध शब्दों का संग्रह किया गया है। डॉ भोलानाथ तिवारी द्वारा "भाषा" दिसम्बर 1967 के अंक में लिखित "हिन्दी कोशों की परंपरा" शीर्षक लेख में कुछ बोलियों के कोशों की चर्चा भी की गई है। इसमें नोट्स एण्ड ए शार्ट वोकेबुलरी आॅफ दि हिंदुवी डाइलेट आॅफ बुन्देल खंड की जानकारी दी गई है।

पारिभाषिक शब्दावली, शरीर रचना और चिकित्सा के शब्दावली उपलब्ध कराने की दृष्टि से श्री पीटर ब्रेटन के 1825 ई० के कलकत्ता से प्रकाशित शब्द संग्रह को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। इसमें मानव शरीर के अवयवों और चिकित्सा संबंधी शब्दों को अंग्रेजी, अरबी, फारसी, हिन्दी और संस्कृत के पर्याय रोमन, नागरी और अरबी शब्दों में दिए गए हैं। ये आगे के कोशकारों के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हुए।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कतिपय विदेशी विद्वानों द्वारा तैयार किए गए अन्य कई कोश भी हो सकते हैं जिनकी जानकारी अभी हासिल नहीं हो सकी है किन्तु इतना निश्चित है कि अपनी बहुत-सी सीमाओं के बावजूद आज के हिन्दी-कोश भण्डार की पृष्टभूमि को सुदृढ़ करने एवं समृद्ध करने वाले इन कोशों तथा विदेशी कोशकारों की भूमिका को कभी भुलाया नहीं जा सकता। हिन्दी के शब्द-समूह को एकत्रित एवं व्यवस्थित कर वैज्ञानिक ढंग से क्रम देकर संग्रह तैयार करने वाली इन विदेशी विद्वानों के श्रम से हम कभी उऋण नहीं हो सकते। आज के अत्याधुनिक एवं नव्यतम कोश-विज्ञान का मार्ग-प्रशस्त करने में 'पूर्वज-कोश' निश्चित ही एक अन्यतम स्थान के अधिकारी हैं।

पशुरोगों एवं रोगाणुओं के तकनीकी हिन्दी नाम एवं उनके संक्षिप्त स्वरूप में एकरूपता की पहल

—डा॰ शिवचन्द्र दुबे

हिन्दी भाषा जो शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाए जाने के संक्रान्तिकाल से गुजर रही है और जिसकी ज्ञान-विज्ञान की शब्दावली भी निर्मित है, लेकिन इसके अध्ययन, अध्यापन, शिक्षण, प्रशिक्षण आदि के लिये जो विशेष संक्रांतिकालीन व्यवस्थाएं होनी चाहिए। उनकी ओर समुचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यह एक सर्वविदित सत्य है कि शिक्षा क्रम में भाषा शिक्षण को महत्व आद्योपांत है। अतः विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिये नव विकसित तकनीकी शब्दावली को आधार मानकर पुस्तक लेखन एवं शिक्षण कार्य से प्रचलित किये जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। इस दिशा में भारत के मानव संसाधन मंत्रालय के वैज्ञानिक एवं परिभाषिक शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित हो रहे विभिन्न शब्दकोशों का ज्ञान संबंधित शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को नियमित पाठ्यक्रमों एवं कार्यशालाओं या अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा दिया जाना चाहिये।

भाषाविद् मानते हैं कि प्रचलन एवं सरलता से अपनाए गये अन्य भाषाओं के शब्दों से भाषा की शुद्धता प्रभावित होती है किन्तु शुद्धता बनाए रखने के चक्कर में अन्य भाषाओं के शब्दों की घुसपैठ निंदनीय नहीं समझी जानी चाहिये, वरन् शब्दों के यथावत अपनाने या व्याकरण संगत हिन्दी स्वरूप प्रदान कर उसे परिभाषित करना अधिक उचित होगा। सीमेंट के लिए बज्रचूर्ण या स्पन्ज के लिए छिद्रिष्ठ जैसे शब्दों का प्रयोग भाषा की दृष्टि से भले ही मान्य हो किन्तु प्रचलन में आना न केवल कठिन बल्कि असंभव होगा।

किसी भी भाषा का जीवंत तथा उदार होना उसके विकास की सबसे पहली आवश्यकता है। हिन्दी इस कसौटी पर खरी उतरती है। हिन्दी ने अन्य भाषाओं के शब्द ग्रहण करके अपने आपको न केवल संम्पन्न बनाय है बल्कि उन शब्दों को अपनी प्रकृति के अनुकूल भी ढाल लिया है इसके फलस्वरूप अनेक विदेशी शब्दों का हिन्दीकरण हुआ है और अब वे जन-मानस की भाषा के रूप में प्रचलन में भी आ गये हैं।

हिन्दी वैज्ञानिक शब्दों की संरचना में भी इसी दृष्टिकोण का अपनाय जाना उचित होगा। वस्तुतः देवनागरी की वर्णमाला न केवल प्रचीन बल्कि बहुत वैज्ञानिक आधार रखती है। इसे श्रुतिमूलक (फोनेटिक अथवा आक्षरिक (सिलेबक) कहा जाता है। किन्तु अन्य भाषाओं के सा ऐसा संभव नहीं है यथा "अ" के लिये आलीफ, "ब" के लिये बी "फ" के लिये एफ। इस प्रकार वर्णों के नाम अलग व उच्चारण अल है। अंग्रेजी भाषा में "सी" का उच्चारण कैट में "क" है तो सेल में "स है। अन्यत्र कही "श" है या "च" है किन्तु हिन्दी में प्रत्येक उच्चारण लिये अलग अक्षर है। इस व्यवस्था से वर्णमाला भी बढ़ गई है अ अक्षरों का स्वरूप भी विविधता पूर्ण हो गया है।

भारत सरकार की ओर से भाषा में आयी अनेकरूपता को दूर करने प्रयास वर्णमाला से ही प्रारम्भ किया गया। वर्णमाला में व्याप्त अनेकरू

का प्रभाव उससे बनने वाले शब्दों में भी होना स्वाभाविक है। फलस्वरूप तकनीकी शब्दावली भी विकास की प्राथमिक अवस्था से ही भाषा की इस विविधता के प्रभाव से अछूती नहीं है। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की ओर से प्रकाशित वृहत परिभाषिक शब्दकोश के माध्यम से तकनीकी भाषा में एकरूपता लाने का सार्थक प्रयास हुआ किन्तु अब भी उपलब्ध शब्दकोशों तथा चिकित्सा विज्ञान की मौलिक या अनूदित पुस्तकों में अंग्रेजी के प्रचलित नामों को हिन्दी में लिखते समय अलग-अलग नाम काम में लिये गये हैं। फलस्वरूप पाठ्य सामग्री, लेखक और पाठक दोनों के लिये सरल नहीं बन पाती है। यह स्थिति भाषा के अपनाए जाने में तथा तकनीकी लेखन की एक बड़ी बाधा है। उदाहरण के लिये अंग्रेजी भाषा में लिखी गई सभी पुस्तकों में किसी रोग का नाम लिखने में बहुधा एक उपसर्ग (प्रीफिक्स) अथवा प्रत्यय (सफिक्स) या दोनों, रोगाणु के नाम के साथ लगाकर रोग का नाम बना देने की पद्धति है जैसेः Brucella + Osis=Brucellosis या विटामिन की कमी या हीनता को Hypovitaminosis/Avitaminosis लिखा जाता है, किन्तु हिन्दी में उपलब्ध पशु-चिकित्सा विज्ञान की पुस्तकों में एक रोग के लिये विभिन्न नाम प्रयुक्त हुए हैं यथा Brucellosis को ब्रूसेल्ला रोग, ब्रूसेल्ला रूग्णता, ब्रूसल्लोसिस, संक्रामक गर्भपात आदि नाम मिलते हैं। इसी प्रकार विटामिन/खनिज लवण की अनुपस्थिति से होने वाले रोगों के नाम भी अलग-अलग ढंग से लिखे गये हैं। आवश्यकता इस बात की है कि रोगाणुओं और रोगों के नाम एवं उनके संक्षिप्त उच्चारण में एकरूपता होनी चाहिये। वृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह में प्रयुक्त स्वरूपों के अवलोकन एवं अध्ययन के पश्चात् सर्वाधिक उपयुक्त स्वरूप के आधार पर नामों की एकरूपता निम्नानुसार की जा सकती है।

1. संक्रामक रोगों के नाम में एकरूपता:

(अ) अंग्रेजी नामकरण की प्रक्रिया में रोगाणु के नाम के अंतिम स्वर (Vowel) को हटाकर osis/asis जोड़ देने से रोग का नाम बन जाता है यथा Brucella = Brucell+osis=Brucellsis
Anaplasma=Anaplasm+Anaplasmosis-sis

उसी प्रकार हिन्दी में रोगाणु के नाम का उच्चारण यदि "आ" की मात्रा से पूरा होता है तो "आ" के स्थान पर "ता" जोड़ देने से रोग का नाम बन जाता है। यथा:

ब्रसूल्ला=ब्रूसेल्ल+ता=ब्रूसेल्लता
एनाप्लाज्मा=एनाप्लाज्म+ता=एनाप्लाज्मता

इस प्रकार से तैयार नाम तालिका 1-अ में रखे गये हैं।

(ब) अंग्रेज़ी में जिन रोगाणुओं के नाम us या es से पूरे होते हैं उनके नाम के अन्त में से osis या asis जोड़कर रोग का नाम बन जाता है जबकि हिन्दी में किये गये इस प्रयास में रोगाणु के नाम को हिन्दी में यथावत लिखकर अंत में "ता" लगाकर रोग का नाम बन जाता है। यथा,
Actinobacillus=Actinobacill+osis=Actinobacillosis.
Actinomyces=Actinomyc+osis=Actinomycosis.
एक्टीनोमाइसीज+ ता = एक्टीनोमाइसीजता

इस प्रकार से तैयार नाम तालिका 1-ब में दर्शाये गये हैं।

(स) अन्य रोगाणुओं का नामकरण—रोगाणु के उच्चारण यदि किसी अन्य मात्रा से पूरे होते हैं तो हिन्दी में लिखते समय मात्रा हटाकर मात्र "ता" लगाकर रोग का नाम बना दिया गया है या मात्रा न होने की दशा में सीधे "ता" लगाकर नाम बनाया जा सकता है, उदारहरण के लिये—
Vibro — विब्रियो = विब्रिय + ता = विब्रियता
Campylobacter—कैम्पाइलोबैक्टर + ता= कैम्पाइलोबैक्टरता

इसी क्रम संख्या में कतिपय विषाणुओं के नाम भी आए हैं। विषणुओं के नाम के अंत में "ता" जोड़कर ही रोगों का नाम बन जाता है यथा Erythroleuosis virus = इरिथ्रोल्युकोसिस + ता = इरिथ्रोल्युकोसिसता

(द) जिन कवकजन्य रोगों के नाम Mycosis से पूरे होते है और वह रोग एक ही कवक से होता है, तो कवक के नाम को आधार मानकर रोग का नाम हिन्दी में बना दिया गया है यथा Mucormycosis में mucor को आधार मानकर "म्युकरता" लिखा गया है किन्तु ऐसे नाम यथा Keratomycosis, Pneumomycosis, आदि ऐसे रोग हैं जो कई कवकों से होते हैं। अतः इनके नाम के अंत में जुड़े Mycosis को हिंदी में "माइसिजता" लिख कर नाम पूरा कर दिया गया है। इस प्रकार इन्हें "केरेटोमाइसिजता" "न्युमोमाइसिजता" व डर्मेटोमाइजसिजता लिखा जाना चाहिये।

2. असंक्रामक रोगों के नाम में एकरूपता

ऐसे रोग जो किसी संक्रामक रोगाणु से नहीं होते बल्कि शरीर की सामान्य क्रियाओं में हुए परिवर्तनों, दूषित वातावरण के प्रभाव, किसी विटामिन/खनिज-लवण के आधिक्य या कमी से होते हैं उन्हें तालिका-2 में रखा गया है। इन रोगों का यदि कोई कारक है तो उसके हिन्दी उच्चारण के साथ "ता" लगाकर रोग का नाम बनाया गया है, यथा:
Haemosiderosis-Haemosiderin= हीमोसिड्रिन + ता = हीमोसिड्रिनता
Thrombosis-Thrombin= थ्रारम्बिन + ता = थ्राम्बिनता
Enterolithiasis-Enterolih= इन्टेरोलिथ + ता = इन्टेरोलिथता

Leucocytosis = ल्यूकोसाइट + ता = ल्यूकोसाइटता

किन्तु Phagocytosis को वृ०पा०श०सं० में भक्षकाणु-क्रिया लिखा गया है। मेरे विचार से इसे परिवर्तित कर भक्षकाणुता लिखा जाना उचित होगा।

रक्त कणिकाओं के रोगों के नाम वहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह में एकदम सटीक दिये गये है। इन्हें इसी रूप में लिखा गया है तथा और अधिक सरलता के लिये रक्त-कणिका के अंग्रेजी नाम के अन्त में "ता" लगाकर लिखा गया है। उस सुझाव को सुविधानुसार अपनाया जा सकता है, यथा—

विटामिन/खनिज लवण के कमी या अधिक होने से उत्पन्न रोगों के नामकरण में वृ०पा०श०स० की भांति ही Hyper = अति, Hypo = अव या अनुपस्थिति को "अ" जैसे उपसर्ग लगा कर नाम दिया गया है।

वृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह में अभी तक शामिल शब्दों एवं उनके अर्थ को तालिकाओं में * से दर्शाया गया है।

रोगाणुओं के वंशीय (जैनेरिक) नामों का हिन्दी में संक्षिप्त स्वरूपः

ज्ञातव्य है कि जैव विज्ञान में लिनीयस प्रणाली के आधार पर बाईनामियल-नामनक्लेचर पद्धति से लिखे गये नाम का पहला भाग वंश (जीनस) को व्यक्त करता है जबकि दूसरा भाग प्रजाति (स्पीसीज) को दर्शाता है। इनमें से वंश का प्रारम्भिक अक्षर अंग्रेज़ी के बड़े अक्षर (कैपिटल) से ही प्रारम्भ होता है जबकि प्रजाति का पहला अक्षर हमेशा छोटे (स्माल) अक्षर से शुरू किया जाता है। तत्पश्चात्, वंश एवं प्रजाति दोनों को रेखांकित कर दिया जाता है या इटैलिक वर्णमाला पद्धति से लिखा जाता है।

हिन्दी वर्णमाला में अक्षरों को बड़ा-छोटा करके लिखने की व्यवस्था नहीं है। अतः वंश एवं प्रजाति को लिखते समय अंग्रेजी व्यवस्था को यथावत अपनाया जाना संभव नहीं है। वृ०पा०श०सं० में वंश एवं प्रजातियों के नाम मोटे अक्षरों में लिखकर उन्हें अलग दिखने की व्यवस्था तो की गई है किन्तु एक ही वंश का बार-बार उल्लेख होने पर भी वंश को विस्तारित रूप में ही लिखा गया है, जबकि अंग्रेज़ी लेखन में सुगमता की दृष्टि से जीनस को संक्षेप में लिखने की व्यवस्था रही है, यथा Bacillus Anthracs को Banthracis लिख दिया जाता है।

हिन्दी में भी उपर्युक्त व्यवस्था को आंशिक परिवर्तन के साथ लागू किया जा सकता है। विषाणुओं का नामकरण द्विपदी नहीं होने के कारण उन पर यह व्यवस्था लागू नहीं की जा सकती है। अन्य रोगाणुओं विशेषतः जीवाणु, परजीवी, कवक आदि के वंश के उच्चारण को संक्षिप्त स्वरूप में व्यक्त करने की व्यवस्था विकसित करने का प्रयास इस लेख में किया गया है (तालिका-3)। शेष रोगाणुओं के छूटे नामों को भी यथास्थान शामिल किया जा सकता है।

नामकरण में निम्न बिन्दुओं को आधार मानकर वंश के संक्षिप्त रूप बनाये गये हैः—

अंग्रेजी में एक ही अक्षर से अनेक रोगाणुओं के वंश के नाम प्रारम्भ होते हैं, संक्षेप में उन्हें नाम के मात्र पहले अक्षर यथा ए,बी या सी से व्यक्त किया जाता है, परन्तु प्रजाति का पूरा नाम लिखने से जीनस के सही उच्चारण में कभी भ्रम या त्रुटि नहीं होती है। हिन्दी में अधिसंख्य जीनस का प्रारम्भ मात्रायुक्त अक्षर से होने के कारण उसके संक्षिप्त उच्चारण की पहचान और सरलता से हो जाती है। मात्रा रहित या समान मात्रा वाले अक्षर से प्रारम्भ होने वाले हिन्दी नामों के संक्षिप्त रूपों को भी अंग्रेजी की भांति हिन्दी में भी समझने में कोई कठिनाई नहीं होती क्योंकि वंश को संक्षिप्त रूप में अकेले लिखा ही नहीं जाता और यदि लिखा जाता है तो उसके साथ प्रजाति का पूरा नाम अवश्य होता है।

अंग्रेजी के कुछ अक्षरों का उच्चारण हिन्दी में यथावत लिखा जा सकता है किन्तु अनेक अक्षरों से प्रारंभ होने वाले अंग्रेजी नामों को हिन्दी में उच्चारण अलग-अलग होने के कारण उनके संक्षिप्त रूप यथावत नहीं लिखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए "L" से प्रारम्भ होने वाले सभी नाम "ल" से ही लिखे जायेंगे किन्तु "C" से प्रारम्भ होने वाले नामों का हिन्दी में उच्चारण कोरायनीबैक्टीरियम, सेल्यूलोमोनास, छैबर्टिया या सिट्रोबैक्टर में से कुछ भी हो सकता है। इसी प्रकार A, E, I, O, U, आदि से प्रारम्भ होने वाले नामों का हिन्दी उच्चारण भी भिन्न हो सकता है। यह कठिनाई हिन्दी में नहीं आती है किन्तु यह अवश्य है कि कुछ हिन्दी नामों को वापस अंग्रेजी में लिखते समय भ्रम हो सकता है यथा ईस्ट्रस, ईश्क्रीचिया में से एक को 'Oestrus' तथा दूसरे को Escherichia लिखा जायेगा, परन्तु हिन्दी में दोनों के नाम "ई" से ही प्रारम्भ होते हैं। इसी प्रकार अंग्रेजी में प्रथम अक्षर उच्चारित न किये जाने (साइलेन्ट) का भी प्रावधान होता है यथा thirius (Lice) वंश के हिन्दी लेखन व उच्चारण में उसके प्रथम दो अक्षरों 'PI' को किसी भी प्रकार प्रदर्शित नहीं किया जा सकता है। अतः ऐसे शब्द अंग्रेजी उच्चारण के आधार हिन्दी में थाइरस लिखा जाना चाहिए और बोला भी जाना चाहिए। किसी भी भाषा में ऐसे अपवाद अस्वाभाविक नहीं होते, अतः उनका ध्यान रखा जाना चाहिए।

माइकोबैक्टीरियम (माइको०) के समान नाम वाले रोगाणुओं के संक्षि नाम हिन्दी में भी यथावत दे दिये गये हैं।

अधोलिखित तालिका से यह आभास होता है कि अंग्रेजी में प्रकाशित विभिन्न पाठ्य पुस्तकों एवं संदर्भ ग्रन्थों में रोगाणु वंश के संक्षिप्त नाम लिखने की कोई मानक पद्धति नहीं अपनाई गई है। अतः हिन्दी स्वरूप में भी इन्हें लिखते समय यथासंभव संक्षिप्त किन्तु नाम का स्पष्ट आभास देने वाले अंश को ही चुना गया है। अधिसंख्य रोगाणुओं के नाम का प्रथम अक्षर (मात्रा सहित) ही संक्षिप्त नाम के रूप में लिखा गया है।

Chabertiosis	Chabertia	छैबर्टियता
Chlamydiosis	Chlamydia	क्लैमाइडियता
Clostridiosis	Clostridia	क्लास्ट्रीडियता
*Coccidiosis	Coccidia	काक्सीडियता
Cooperiasis	Cooperia	कूपेरियता

रोगाणु	सिस्टेमिक बैक्टीरियालाजी द्वारा टाप्ले एवं विल्सन	ब्लैक्स वेटरनरी डिक्सनरी	इनफेक्सियस डिसीसेज आफ डोमे० एनीमल्स द्वारा हेगन एवं ब्रनर, पैथालॉजी आफ डामे० एनीमल्स द्वारा ज़ब एवं केनेडी तथा माइक्रोबायोलॉजी द्वारा डेविस एवं डलबेक्को	वेटरनरी पैथालॉजी द्वारा ग०ए० शास्त्री
क्लास्ट्रीडियम	C	C1	C	C1
कोरायनीबैक्टीरिया	Car	C	C	C
माइकोबैक्टीरियम	M	M	M	Myco
पाश्चुरेल्ला	P	P	P	P
ब्रूसेल्ला	B	B	B	Br
स्टैफाइलोकोकस	Staph	Staph	S	Full
स्ट्रैप्टोकोकस	Str	Str	S	Full
साल्मोनेल्ला	Sal	S	S	S

उपर्युक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए तैयार संक्षिप्त स्वरूप लेखकों के उपयोग हेतु प्रस्तुत है। आशा की जाती है कि लेखक वर्ग इस व्यवस्था से सहमत होंगे एवं हिन्दी विज्ञान लेखन में इन्हें अपनाकर व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने में उपयोगी होंगे।

संक्रामक एवं असंक्रामक रोगों का प्रस्तावित नामकरण

तालिका-1: असंक्रामक रोग:

1—अः a से पूरे हुये रोगाणुओं से उत्पन्न रोगों का नामकरणः

Name of the disease	Original word	रोग का हिन्दी नाम
Acholeplasmosis	Acholeplasma	एकोलेप्लाज्मता
*Anaplasmosis	Anaplasma	एनाप्लाज्मता
*Babesiosis	Babesia	बैबेसियता
*Bartonellosis	Bartonella	बार्टोनेल्लता
*Bilharziasis	Bilharzia	बिल्हार्जियता
Cowdriosis	Cowdria	काउड्रियता
Cryptosporodiosis	Cryptosporidia	क्रिप्टोस्पोरोडियता
Dioctophymosis	Dioctophyma	डायक्टोफाइमता
Ehrilichiosis	Ehrlichia	एहर्लीचियता
Elaephorosis	Elaephora	इलियोफोरता
Elephantiasis	Filaria	फाइलेरियता / एलीफेन्टता
*Fascioliasis	Fasciola	फैसियोलता
*Filariasis	Filaria	फाइलेरियता
Giardiasis	Giardia	जियार्डियता
Habronemosis	Habronema	हैब्रोनीमता
Histoplasmosis	Histoplasma	हिस्टोप्लाज्मता
Klebsiellosis	Klebsiella	क्लेब्सियेल्लता
*Leptospirosis	Leptospira	लेप्टोस्पाइरता
Leishmaniasis	Leishmania	लिश्मेनियता
Listeriosis	Listeria	लिस्टीरियता
Moniliasis	Monilia	मोनिलियता
Monieziasis	Moniezia	मोनीजियता
Mycoplasmosis	Mycoplasma	माइकोप्लाज्मता

Nocardiosis	Nocardia	नोकार्डियता
*Onchocerciasis	Onchocerca	ऑकोसर्कसता
Ostertagiasis	Ostertagia	आस्टरटेजियता
Papillomatosis	Papilloma virus	पैपिलोमता
Pesteurellosis	Pasteurella	पाश्चुरेल्लता
*Piroplasmosis	Piroplasma	पाइरोप्लाज्मता
Protothecosis	Prototheca	प्रोटोथीकता
Rhinosporodiosis	Rhonosporidia	राइनोस्पोरोडियता
*Salmonellosis	Salmonella	साल्मोनेल्लता
Sarcosporodiosis	Sarcosporidia	सारकोस्पोरीडियता
Shigellosis	Shigella	शिगेल्लता
Stephanophilariasis	Stephanophilaria	स्टेफैनोफाइलेरियता
*Theileriosis	Theileria	थाइलेरियता
Thysanosomiasis	Thysanosoma	थाइसेनोसोमता
Thysanosporidiasis	Thysanosporidia	थाइसेनोस्पोरीडियता
*Toxoplasmosis	Toxoplasma	टाक्सोप्लाज्मता
Trichinellosis	Trichinella	ट्रिचिनेल्लता
Trombiculosis	Trombicula	ट्राम्बीकुलता
*Trypanosomiasis	Trypanosoma	ट्रिपैनोसोमता
Ureaplasmosis	Ureaplasma	यूरीप्लाज्मता
Yersinosis	Yersinia	यर्सीनियता

1— व: us es से पूरे हुए रोगाणुओं से उत्पन्न रोगों का नामकरण:

*Aspergillosis	Aspergillus	एस्परजिलसता
Actinobacillosis	Actinobacilus	एक्टिनोबेसिलता
Actinomycosis	Actinomyces	एक्टिनोमाइसिजता
*Blastomycosis	Blastomyces	ब्लैस्टोमाइसिजता
Botriomycosis	Botriomyces	बाट्रियोमाइसिजता
Coenurosis	Coenurus	सेन्यूरसता
Cryptococcosis	Cryptococcus	क्रिप्टोकोकसता
Coccidiomycosis	Coccidioides	काक्सीडियोडिसता
*Cysticercosis	Cysticercus	सिस्टीसरकसता
Dermatiphilosis	Dermatophilus	डर्मेटोफिलसता
*Dermatophitosis	Dermatophytes	डर्मेटोफाइटता
Drancunculiasis	Dracunculus	ड्रैकन्कुलसता
Echinococcosis	Echinococcus	इकाइनोकोकसता
*Haemonchosis	Haemonchus	हिमॉकसता
*Nematodiriasis	Nematodirus	निमैटोडिरसता
Paragonimiasis	Paragonimus	पैरागोनिमसता
Paratuberculosis	Paratuberculus	पैराट्यूबरकुलसता
*Pediculosis	Pediculus	पैडिकुलसता
*Pthiriasis	Phthirus	थाइरिसता
Pseudotuberculosis	Pseudotuberculus	स्यूडोट्यूबरकुलसता
Spirochaetosis	Spirochaete	स्पाइरोकीटता
Staphylococcosis	Staphylococcus	स्टैफाइलोकोकसता
Streptococcosis	Streptococcus	स्ट्रेप्टोकोकसता
*Trichostrongylosis	Trichostrongylus	ट्राइकोस्ट्रांगाइलसता
*Tuberculosis	Tuberculus org.	ट्यूबरकुलसता

1— म: अन्य मात्राओं से पूरे होने वाले रोगाणुओं का नामकरण:

*Dermatomycosis	Fungal spe.	डर्मेटोमाइसिजता / त्वचकवकरोग
Eperythrozoonosis	Eperythrozoon	इपरिथ्रोजूनस
Erythroleucosis	Ery. virus	इरिथ्रोल्यूकोसिसता
Globidiosis	Globidium	ग्लोबीडियमता
Hydatidosis	Hydatid worm	हाइडेटिडता
Keratomycosis	Fungal Infect.	कैरेओमाइसिजता
Leucosis	Leucosis virus	ल्यूकोसिसता
Melioidosis	Varied agents	मेलिआयडता
Mucormycosis	Mucor Infect.	म्युकरता
Mycotoxicosis	Mycotoxins	माइकोटाक्सिनता
Oesophagostomiasis	Oesophagostomum	आसोफैगोस्टोमता
Onchomycosis	M. canis Infection	ऑकोमाइकोसता
Ornithosis	Ornith/Chlamydia	आर्निथता / क्लैमाइडियता
Paramphostomiasis	Paramphistomum	पैराएम्फीस्टोमता
Pneumomycosis	Fungal pneumonia	न्युमोमाइकोसता
*Psittacosis	Psittacus	सिटेकोसता / शुकरोग*
Sarcocystosis	Sarcocyst	सारकोसिस्टता
*Sparganosis	Diphylobothrium Inf.	डाइफाइलोबाथ्रियमता / *स्पारगैनोसिस
Sporotrichosis	Sporotrichum/ Sporothrix	स्पोरोट्राइकमता / स्पोरोथ्रिक्सता
Streptothricosis	Streptothrix	स्ट्रेप्टोथ्रिक्सता

*बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह में वर्णित नाम एवं शब्दार्थ

तालिका-2: असंक्रामक रोग

Name of the disease	Original word	रोग का हिन्दी नाम
Acanthosis	Acanthus	एकैन्थसता
Acoprosis	No feces	अल्पता

Adenomatosis	Adenomatus	एडेनोमेटोसता
Amyloidosis	Amyloid	एमाइलायडता
Anhydrosis	Anhydrus	एनहाइड्रसता
Ankylosis	Ankle	एन्कलता
*Anthracosis	Anthra + akos=coal	एन्थ्राकोसता / एन्थ्राकोसिस अंगारधूलिआर्ति
Arthrosis	*Arthron	आर्थ्रोनता
Atherosclerosis		*एथिरोकाठिन्य / एथिरोस्कलेरोसता
Arteriosclerosis		*धमनीकाठिन्य / आर्टीरियो- स्केलेरोसता
Asbestosis	Asbestos dust	एसबेसटसता
Avitaminosis	No vitamin	*अविटामिनता
Bronchiectasis	Dilation Bronchus	श्वसनी विस्तीर्णता
Bronchotenosis	Narrowing of Bronchus	*श्वसनीसंकीर्णता
Byssinosis	Bussinos= Cotton dust	बिसिनोसता / *बिसिनोसिस, फुफ्फुसकार्पासता
Ceroidosis	Cero=Wax	मोमाभता / सेरायडसता
Cirrhosis	Sirosis	सीरोसता
Chemosis		कीमोसता
Chalicosis	Cement dust	सीमेन्टता / चैलिकोसता
Cholelithiasis	Cholelith	कोलेलिथता
Cyanosis	Sinosis = blueness	साइनोसता
Distichiasis	Distchi=Pair of line	डिश्चियता
Echymosis	Blood acculumation below the skin	इक्काइमोसता
Ectasis	Dilatation organ	अंग विस्तीर्णता
Enterolithiasis	Enterolith	इन्टरोलिथता
Exostosis	Bone outgrowth	इक्सोस्टोसता
Erythroblastosis	Erythroblast	*रक्ताणुकोरता / इरिथ्रो-ब्लास्टता
Erythrocytosis	Erythrocyte	रक्ताणुता / इरिथ्रोसाइटता
*Fibrosis	Fibrous	फाइब्रसता / *रेशामयता
Furunculosis	=boil	फ़ुंकुलता / *व्रणरोग, फुरन्कुलोसिस
Haemotidrosis	Blood in sweat	हीमोसिड्रोसता
Hydronephrosis	Urine accumu. in kidney	हाइड्रोनेफ्रोसता
*Hypervitaminosis	Excess vitamins	*अतिविटामिनता / हाइपर -विटामिनता
*Hyperkeratosis	Excess keratin	*अतिकेरेटिनता / हाइपर-केरेटिनता
Hypocuprosis	Low copper	अवताम्रमयता
Hypovitaminosis	Low vitamin	अवविटामिनता / हाइपो-विटामिनता
*Leucocytosis	Leucocyte	*श्वेताणुता / ल्युकोसाइटता
*Lymphocytosis	Lymphocyte	*लसिकाणुता / लिम्फोसाइटता
Mannisidosis	Absence of Enz. Mannosidase	अमैनोसाइडेजता
Monocytosis	Monocyte	*एककेन्द्रकाणुता / मोनोसाइटता
Nephrosis		नेफ्रोसता
Nephroptosis	Floating kindey	नेफ्रोटोसता
Paraphimosis	Abnormal constriction & retraction of prepuce	पैराफाइमोसता
Phymosis		फाइमोसता
Phagocytosis	Phagocyte	*फाइगोटोसता
	Phymas=small nodule on the skin	
Phymatosis		*
Psoriasis	Psoriao=have itch	सोरियसता
*Reticulocytosis	reticulocyte	जालिकाणुता / रेटिकुलो साइटता
*Silicosis	Silicon dust	सिलिकोनता/साइटता *सिलिकोसिस
*Siderosis	Siderose=iron dust	सिडरोसता / लोहमयता
Stenosis	Stenoo=narrowing	संकीर्णता / स्टेनोसता / संकोचन
*Thrombosis	Thrombin	थ्राम्बिनता / घनास्त्रता थ्राम्बोसिस
Trichiasis	Growth of eye lashes towards eye lids	ट्रिचियता
Urolithiasis	Urolith	यूरोलिथता / *मात्रारश्मता, यूरोलिथियासिस

* बृहत पारिभाषिक शब्द संग्रह में वर्णित नाम एवं शब्दार्थ

तालिका-3: विभिन्न रोगाणुओं के हिन्दी नाम एवं उनके संक्षिप्त स्वरूप

Organism & its abbreviation		रोगाणु एवं उसका संक्षिप्त नाम	
Achromobactor	Achr.	एक्रोमोबेक्टर	एक्रो
Acidaminococcus	A.	एसिडेमिनोकोकस	एसिडे
Acinetobactor	Aci.	एसिनेटोबेक्टर	एसि
Actinomedura	Full	एक्टिनोमड्यूरा	ए
Actinomyces	A.	एक्टिनोमाइसीज	ए
Actinomycetes	A.	एक्टिनोमाइसटीज	ए
Actinobacillus	A.	एक्टिनोबासिलस	ए
Acholeplasma	AC.	एकोलेप्लाज्मा	एको
Aegyptianella		एजिप्सिनेल्ला	एजि
Aerobactor		एरोबैक्टर	एरो
Aerococcus	Aer.	एरोकोकस	एरो
Aeromonas	A.	एरोमोनास	एरो
Agrobactrium	Agro.	एग्रोबैक्टीरियम	एग्रो
Agromyces		एग्रोमाइसीज	एग्रो
Alcaligenes	Alc.	एल्केलिजेन्स	एल्के
Alteromonas		एल्टेरोमोनास	एल्टे
Ampullariella		एम्प्युलैरियेल्ला	एम्प्यू
Amycolata		एमाइकोलैटा	एमा
Amycolaptosis		एमाइकोलैप्टोसिस	एमा
Anaplasma	A.	एनाप्लाज्मा	ए
Anaeroplasma		एनराप्लाज्मा	एने
Anaerohabdus		एनरोहैब्डस	एने
Arachnia	Ara.	एरेकनिया	एरे
Arcanobacterium	Arc.	एर्कनोबैक्टीरियम	एर्के
Arthrobactor		आर्थ्रोबेक्टर	आर्थ्रो
Aspergillus	A.	एस्परजिलस	एस्प
Aureobacterium		आरियोबैक्टीरियम	आरियो

Bacillus	B	बेसिलस	बे
Bacteroides	B	बैक्टीरिआयड	बैक्टी
Bartonella	Full	बार्टोनिल्ला	बार्टो
Bifidobacterium	B	बाइफिडोबैक्टीरियम	बाइ
Blastomyces	B	ब्लैस्टोमाइसीज़	ब्लै
Bordetella	B	बार्डेटेल्ला	बा
Borrelia	B	बॉरेलिया	बो
Boophilus	B	बूफिलस	बू
Branhmella	B	ब्रैन्हमेल्ला	ब्रै
Brevibacterium	B	ब्रेवीबैक्टीरियम	ब्रे
Brucella	B	ब्रूसेल्ला	ब्रू
Bunostomum	B	ब्युनोस्टोमम	ब्यु
Calymmatobacterium	Cal	कैलिमैटोबैक्टीरियम	कैलि
Campylobactor	C	कैम्पाइलोबैक्टर	कै
Candida	C	कैन्डिडा	कै
Capnocytophaga	Cap	कैप्नोसाइटोफैगा	कैप्नो
Cardiobacterium	Card	कार्डियोबैक्टीरियम	कार्डि
Caseobacter	Cas	कैसियोबैक्टर	कैस
Cedecea	Ced	सिडिसी	सि
Cellulomonas		सैल्यूलोमोनास	सेल्यू
Chabertia		छैबर्टिया	छै
Chlamydia	C	क्लैमाइडिया	क्लै
Chromobacterium	Chr	क्रोमोबैक्टीरियम	क्रोमो
Chryseomonas	Chry	क्राइसियोमोनास	क्राइ
Citrobacter	Citro	सिट्रोबैक्टर	सिट्रो
Clostridium	C/Cl	क्लास्ट्रीडियम	क्लै
Coccidia	C	काक्सीडिया	का
Cooperia	C	कूपेरिया	कू
Corynebacterium	C/Cor	कोरयनीबैक्टीरियम	को
Cowdria	C	काउड्रिया	काउ
Coxiella	Cox	काक्सीयेल्ला	काक्स
Cryptococcus	C	क्रिप्टोकोकस	क्रि
Cytocetes	Cyt	साइटोसिटीज़	साइटो
Damalinia	D	डैमेलीनिया	डै
Demodex	D	डीमोडेक्स	डी
Dermocentar	D	डर्मोसिन्टार	डर्मो
Dermatiphilus	D	डर्मेटोफिलस	डर्मे
Dermobacter	Der	डर्मोबैक्टर	डर्मो
Dicrocaelium		डाइक्रोसीलियम	डा
Dictiocalus		डिक्टियोकैलस	डि
Edwardsiella	Ed	एडवर्डसियेल्ला	एड
Ehrlichia	Eh	इहर्लीचिया	इ
Eikenella	Eik	इकेनेल्ला	इके
Enterobacter	Ent	इन्टेरोबैक्टर	इन्टे
Eprythrozoon	Ep	इपरिथ्रोज़ून	इप
Erwinia	Erw	इर्वीनिया	इर
Erysipelothrix	E	इरिसिप्लोथ्रिक्स	इरि
Escherichia	E	इश्क्रीचिया	इ
Eubacterium	Eu	यूबैक्टीरियम	यू
Ewingella	Ew	इविंगेल्ला	इवि
Faenia	Full	फीनिया	फी
Flavimonas	Flavi	फलैवीमोनास	फलै
Flavobacterium	Flavo	फलैवोबैक्टीरियम	फलैवो
Francisella	F	फ्रैन्सियेल्ला	फ्रै
Fusobacterium	F	फयूसोबैक्टीरियम	फयू
Fusarium	F	फयूसेरियम	फयू
Gongylonema	G	गांग्लीयोनीमा	गां
Gardenerlla	G	गार्डेनेरेल्ला	ग
Gemella	G	गेमेल्ला	गे
Geodermatophilus	Full	जियोडर्मेटोफिलस	जियो
Giardia	G	जियार्डिया	जि
Grahamella	Gr	ग्रैहेमेल्ला	ग्रै
Haemobartonella	H	हीमोबार्टोनिल्ला	ही
Haemophilus	H	हीमाफिलस	ही
Histoplasma	H	हिस्टोप्लाज्मा	हि
Haemophysalis	H	हीमोफासेलिस	ही
Hafnia	Haf	हैफनिया	है
Histophilus	H	हिस्टोफिलस	हि
Helicobacter	H	हेलिकोबैक्टर	हे
Himonchus	H	हिमांकस	हि
Hyloma	H	हायलोमा	हा
Janthiobacterium	J	जैन्थियोबैक्टीरियम	जै
Kingella	K	किंगेल्ला	कि
Klebsiella	K	क्लेबसियेल्ला	क्ले
Kluyvera	Kluy	क्लूवेरा	क्लू
Koserella	Kos	कोसेरेल्ला	को
Lactobacillus	L	लैक्टोबैसिलस	लै
Leclercia	Lec	लेक्लेर्सिया	लेक्ले
Legionella	L	लेगियोनल्ला	लेगि
Leminorella	Lem	लेमिनोरेल्ला	लेमि
Leptospira	L	लेप्टोस्पाइरा	ले
Leptotrichia	L	लेप्टोट्रीचिया	ले
Leuconostoc	Leuc	ल्यूकोनोस्टाक	ल्यू
Listeria	L	लिस्टीरिया	लि
Megasphaera	M	मेगास्फीरा	मे
Microbacterium	M	माइक्रोबैक्टीरियम	माइक्रो
Micrococcus	M	माइक्रोकोकस	माइक्रो
Mobiluncus	M	मोबिलकस	मो
Moellerella	Moell	मोलेरेल्ला	मोले
Moraxella	M	मोरेक्सेल्ला	मोरे
Morganella	Morg	मोर्गेनिल्ला	मोर्गे
Mortierella	M	मोर्टीरिल्ला	मोर्टी
Mycobacterium	M/Myco	माइकोबैक्टीरियम	माइको
Mycoplasma	M	माइकोप्लाज्मा	मा
Neisseria	N	नेसीरिया	ने
Neorickettsia	Neo	नियोरिकेट्शिया	नियो
Nocardia	N	नोकार्डिया	नो
Nocardioides	Full	नोकार्डिआयडिस	नोका
Ochrobactrum	Full	आक्रोबैक्ट्रम	आक्रो
Orskovia	O	आर्सकोविया	आर्स
Oligella	Olig	ओलिगेल्ला	ओ
Pasteurella	P	पाश्चुरेल्ला	पा
Pedicoccus	Ped	पेडीकोकस	पे
Peptococcus	P	पेप्टोकोकस	पे
Peptostreptococcus	Pst	पेप्टोस्ट्रेप्टोकोकस	पेस्ट्रे
Phlebotomus		फ्लेबोटोमस	फ्ले
Planococcus	P	प्लैनोकोकस	प्लै
Plesriomonas	P	प्लेसियोमोनास	प्ले
Proteus Port	P	प्रोटियस प्रोटो	प्रो
Propionibacterium	P	प्लप्रापियानीबैक्टीरियम	प्रा
Proteus Port	P	प्रोटियस प्रोटो	प्रो
Proteus	Prot	प्रोटियस	प्रो

Protostrongylus	Pr	प्रोटोस्टांग्गाइलस	प्रोटो
Providencia	Prov	प्रोविडेन्सिया	प्रो
Pseudomonas	P	स्यूडोमोनास	स्यू
Rhinosporidia	R	राइनोस्पोरीडिया	रा
Rhizopus	R	राइजोपस	रा
Rhodococcus	Rhod	रोडोकोक्स	रो
Rickettsia	R	रिकेट्सिया	रि
Rothia	Roth	रोथिया	रो
Rochalimaca	Ro	रोचेलिमैका	रोचै
Saccharomonospora	Full	सैकेरोमोनोस्पोरा	सैकै
Saccharothrix		सैकेरोथ्रिक्स	सैके
Salmonella	Sal	साल्मोनेल्ला	सा
Serratia	Ser	सेरेंटिया	से
Shewanella	Shew	शीवानेल्ला	शी
Shigella	Sh	शिगेल्ला	शि
Sarcoptis		सारकाप्टिस	सार
Soroptis		सोरोप्टिस	सो
Sorergatus		सोरेरगेटस	सोरे
Spirillium	Sp	स्पाइरिलियम	स्पा
Spirochaeta	S	स्पाइरोचीटा	स्पा
Spiroplasma	S	स्पाइरोप्लाज्मा	स्पा
Sporothrix	S	स्पोरोथ्रिक्स	स्पो
Sporosarcina	S	स्पोरोसारसीना	स्पो
Staphylococcus	Staph	स्टैफिलोकोकस	स्टै
Stomatococcus	Stom	स्टोमैटोकोकस	स्टो
Streptobacillus	Strep-tobac	स्ट्रेप्टोबेसिलस	स्ट्रेबे
Streptococcus	Str	स्ट्रेप्टोकोकस	स्ट्रेप्रि
Streptothrix		ठ्रेप्टोथ्रिक्स	स्ट्रेप्रि
Tatumella	Tat	टैटूमेल्ला	टैटू
Toxoplasma	T	टाक्सोप्लाज्मा	टा
Treponema	T	ट्रीपोनीमा	ट्री
Trichuris	T	ट्राइकूरिस	ट्रा
Trichostrongyla	T	ट्राइकोस्ट्रांग्गाइलस	ट्राइको
Tripanosoma	T	ट्रिपोनीमा	ट्रि
Ureaplasma	U	यूरीप्लाज्मा	यू
Veillonella	V	वीलियोनल्ला	वीलि
Vibrio	V	विब्रियो	वि
Weeksella	Week	वीकसेल्ला	वीक
Yersinia	Y	यर्सीनिया	य

वरिष्ठ वैज्ञानिक (विषाणु विज्ञान), उच्च सुरक्षा पशुरोग प्रयोगशाला, भा०प० चि०अं०-सं०, भोपाल पिन—462021

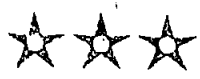

(2 जुलाई, 1942 को नेताजी के सिंगापुर आने पर आजाद हिन्द आंदोलन के संचालन के अवसर पर गाया गया गीत)

गई रात आया प्रभात, हम निद्रा से जागे
जय जय जननी जन्मभूमि, हम बालक हैं तेरे
गई रात....

नवयुग आया जीवन लाया, दया का घन अम्बर पै छाया
विजय भई सत रन की भीतर, शत्रु उर भागे
गई रात.....

पाप गुलामी के बन्धन से, छूटेंगे हम भारतवासी
तन मन धन अरपन चरनन में, माता के आगे
गई रात....

चरन कमल पर बल-बल जाऊं, गांधी, नेहरू और मौलाना
सुभाष माता की गोदी में, अति सुन्दर लागे
गई रात....

—कैप्टन रामसिंह

(" लोकशक्ति पुरुष नेता जी " पुस्तक से साभार)

प्रशासन की सुविधा और राजभाषा हिन्दी

—श्रीमती डी० लावण्य लवली

सृष्टि में मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो अपने मन में उत्पन्न विचारों को बोली द्वारा व्यक्त कर सकता है। मनुष्य की समझ में आनेवाली बोली को भाषा कहते हैं चाहे वह कोई भी भाषा हो अर्थात् भाषा द्वारा विचार — विनिमय होता है। विश्व की भाषाओं में संस्कृत का अपना विशिष्ट स्थान है और उससे जनित हिन्दी भाषा भी विश्व ख्याति प्राप्त भाषा है। चूंकि देश में अधिकांश भू-भाग में अत्यधिक लोगों द्वारा यह बोली जाती है। अतः इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त होना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक प्रशासनिक कार्यों में राजभाषा हिन्दी का किस तरह से प्रयोग हो रहा है, इस संबंध में नीचे चर्चा की जा रही है।

राजभाषा हिन्दी — परिभाषा और व्याख्या:

राजभाषा से तात्पर्य उस भाषा से है जो राजकाज, प्रशासन तंत्र के समस्त कार्य-व्यापारों के संपादन की गतिविधि की भाषा हो। हर देश के अपने प्रतीक स्वरूप झंडे होते हैं और उसे राष्ट्र ध्वज के नाम से अभिहित किया जाता है, उसी तरह हर देश की समग्रता की अभिव्यक्ति माध्यम के रूप में सार्वदेशिक स्वरूप रखनेवाली एक भाषा भी होती है और उस भाषा को राजभाषा की संज्ञा दी जाती है। ऐसे संघ राष्ट्रों में जहाँ देश के भिन्न-भिन्न राज्यों की अलग-अलग राजभाषाएँ हैं, वह भाषा संघ की राजभाषा होती है जो आम तौर पर समस्त देश में अथवा देश के अधिकांश भागों में परस्पर भिन्न-भिन्न भाषा भाषियों के बीच संपर्क-माध्यम का कार्य तो करती है; साथ ही देश की शिक्षा, देश के ज्ञान-विज्ञान, रीति-नीति, कला-संस्कृति आदि समस्त कार्य व्यापारों का निर्वाह भी करती है। राजभाषा के संबंध में आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा का कहना है कि शासन विधान, कार्यपालिका और न्यायपालिका क्षेत्रों में जिस भाषा का प्रयोग होता है उसे राजभाषा कहते हैं। डा० कैलाशचन्द्र भाटिया ने राजभाषा को राज-काज की भाषा के रूप में अभिहित किया। जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रांत के लोग करते हैं, जो पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ दोनों की साधारण बोलचाल की भाषा है और जिसे प्रत्येक गाव में थोडे-बहुत लोग अवश्य समझ लेते हैं उसी का यथार्थ नाम हिन्दी है। हिन्दी सरल और सुबोध भाषा है। हिन्दी भाषा को लोक-भाषा, जन-भाषा तथा संपर्क भाषा के रूप में माना गया। हिन्दी भाषा में राजभाषा का बनने के लिए अपेक्षित सारे गुण विद्यमान होने के कारण इसे राजभाषा में दर्जा दिया गया है।

प्रशासन की परिभाषा एवं व्याख्या:

राजभाषा हिन्दी पर विचार करने के पश्चात "प्रशासन" शब्द पर प्रकाश डालना उचित होगा। ब्रेच के अनुसार "प्रशासन" का प्रमुख कार्य-पद्धतियों से संबद्ध है। प्रशासन के अंतर्गत नियम, कार्य विधियां, कार्य प्रणालियों, कार्य मापन आदि आते हैं अर्थात् कार्य का विभाजन,

अधिकार एवं उत्तरदायित्व, अनुशासन, आदेश की एकता, प्रबन्ध की एकता, व्यक्तिगत हित का केन्द्रीकरण, पदाधिकारियों में सम्पर्क, व्यवस्था, न्याय, कर्मचारियों में स्थायित्व का होना, प्रेरणा तथा सहयोग आदि से संबंधित है प्रशासन। अतः प्रशासन से तात्पर्य अनुशासन, नियमन, जन कल्याण से संबंधित कार्यों की योजना, कार्यान्वयन और मूल्यांकन से है।

परम्परागत प्रशासनः

यदि हम प्राचीनकाल से स्वतंत्रता प्राप्त होने तक हिन्दी के स्वरूप का विवेचन करें तो पता चलता है कि हिन्दी भाषा को राजपूतों ने, मराठों ने तथा अंग्रेजों ने अपने राजकाज में राजभाषा के रूप में अपनाने के कई दृष्टान्त सामने आते हैं। राजपूतों के काल में पृथ्वीराज रासो में तो प्रशासन संबंधी हजारों पारिभाषिक शब्द मिलते हैं जो आज की प्रशासन संबंधी हिन्दी के मूल रूप हैं। मुसलमानों के समय में मुहम्मद गोरी ने अपने शासन का कामकाज देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के माध्यम से करने के आदेश दिए। इनके सिक्कों पर देवनागरी का प्रयोग हुआ है। मुगलकाल के शासन की भाषा ऊपरी तौर पर फारसी थी परन्तु सह राजभाषा के रूप में हिन्दी भी प्रयोग में आती रही। अकबर के पश्चात जहाँगीर, शाहजहाँ आदि ने अपने राजकाज की भाषा हिन्दी ही रखी तथा इन सम्राटों द्वारा नियम, उपनियम, फरमान, परवाने आदि हिन्दी में लिखे जाते थे। मराठों के काल में मराठा प्रशासन में राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग हुआ तथा राष्ट्रीय स्तर पर पत्र-व्यवहार हिन्दी के माध्यम से होता था। पत्रों पर हिन्दी की मुहरें देवनागरी लिपि में लगाई जाती थीं। राष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद का भी प्रचलन था। मराठा शासन में हिन्दी राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा के पद पर प्रतिष्ठित थी। अंग्रेजों के राजकाज में प्रशासन संबंधी कार्य अर्थात् राजस्व वसूल करने, पट्टा तथा मालगुजारी के नियमों का पालन करने, वेतन प्राप्त करने एव प्रार्थना पत्र देने आदि कार्य के लिये हिन्दी का प्रयोग होता था। अंग्रेजी के प्रशासन कार्य से सम्बंधित हिन्दी सामग्री अर्थात् समझौते, गवर्नर जनरल के राजाओं को आदेश आदि कार्य से संबंधित सामग्री भारत के अभिलेखागार में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इस जमाने में पोलिटिकल एजेंट की मुहर देवनागरी लिपि में होती थी। इन मुहरों के माध्यम से तत्कालीन प्रशासन, हिन्दी का राजकाज में प्रयोग, देवनागरी लिपि तथा अन्य लिपियों, वर्तनी, प्रशासन की राजभाषा नीति आदि का पता चलता है। अंग्रेजों के राजकाज में भी देशी रियासतों का सारा काम-काज हिन्दी भाषा के माध्यम से होता था। एजेंट गवर्नर जनरल के कार्यालय में देशी राजाओं द्वारा हिन्दी में पत्र भेजे जाने पर इनका अंग्रेजी अनुवाद तथा गवर्नर जनरल के अंग्रेजी पत्रों का हिन्दी अनुवाद अंग्रेजी उच्चाधिकारियों के कार्यालय में होता था। अंग्रेजी सरकार द्वारा समय-समय पर कुछ घोषणा पत्र हिन्दी में जारी किए जाते थे। इस प्रकार अंग्रेजी सरकार ने भीतर से न चाहने पर भी धीरे-धीरे प्रशासन, विधि एवं अन्यान्य क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग को अमल देने के कदम उठाए। इस तरह इस विशाल देश के प्रशासन तथा संचालन में हिन्दी भाषा की सदियों से महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

आजादी के बाद सांविधिक भाषा — हिन्दी

आजादी के बाद राजभाषा के क्षेत्र में सांविधिक रूप में प्रयोग में आने वाली हिन्दी हमारे राष्ट्रनायकों द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में संविधान और देश के गौरवपूर्ण स्थान की अधिकारिणी बनी। सन् 1950 में लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार देवनागरी लिपि में हिन्दी संघ की राजभाषा होगी। अनुच्छेद 346 के अनुसार हिन्दी केन्द्र तथा राज्यों के बीच संपर्क भाषा तथा राज्यों के बीच परस्पर व्यवहार की भाषा घोषित की गई। अनुच्छेद 351 में कहा गया है कि हिन्दी भाषा की प्रसार वृद्धि करना, उसका विकास करना है ताकि भारत की सामासिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके तथा उसकी आत्मीयता में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए तथा जहाँ तक आवश्यक हो उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से तथा गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य है। अनुच्छेद 342 (2) के अनुसार संविधान में लागू होने के समय से 15 वर्ष की कालावधि तक अर्थात् सन 1965 तक संघ के सभी सरकारी कार्यों के लिए पहले की तरह अंग्रेजी भाषा का प्रयोग चलता रहेगा। इस अवधि के भीतर भी राष्ट्रपति आदेश द्वारा किसी कार्य के लिए अंग्रेजी के अलावा हिन्दी के प्रयोग की अनुमति दे सकते हैं। अनुच्छेद 343 (3) में संसद को यह अधिकार दिया गया है कि वह 1965 के बाद भी सरकारी कामकाज में अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने के बारे में व्यवस्था कर सकती है। अनुच्छेद 344 के अनुसार राष्ट्रपति जी ने वर्ष 1956 में एक राजभाषा आयोग का भी गठन किया जो राजभाषा के प्रगामी-प्रयोग के विषय में सिफारिश कर सके। 30 सदस्यों की संसदीय समिति ने आयोग की सिफारिशों पर विचार किया और राष्ट्रपति के समक्ष अपनी राय प्रस्तुत की। इसके आधार पर वर्ष 1960 में हिन्दी के विकास तथा प्रगामी-प्रयोग के लिए विस्तृत निदेश जारी किए गए। उसके बाद सघन रूप से राजभाषा के प्रयोग के बारे में कार्रवाई बढ़ी। वर्ष 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित करने के साथ-साथ दिसम्बर 1967 में संसद के दोनों सदनों में भाषा नीति संबंधी एक संकल्प पारित किया गया। इस संकल्प के पैरा 1 के अनुसार राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम बनाता है जिसमें केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों आदि के लिए एक वर्ष में हिन्दी में काम करने के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। राजभाषा नीति के अनुपालन के विचार से राजभाषा नियम, 1976 के तहत देश को क,ख,ग क्षेत्रों के रूप में वर्गीकृत किया गया। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का दायित्व भारत सरकार एवं उसके उपक्रम में कार्यरत प्रशासनिक प्रमुखों का है और इसमें प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का सहयोग अपेक्षित है।

संगठन में प्रशासनः

संविधान में राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्थान दिए जाने के बाद अब प्रश्न उठता है कि इस भाषा का प्रशासन के किन-किन क्षेत्रों में प्रयोग हो रहा है; इसे जानना भी जरूरी है। "क" क्षेत्र के सभी प्रांतों में आम तौर पर हिन्दी भाषा में अधिकांश कार्य संपन्न होते हैं। इन क्षेत्रों में स्थापित कंपनियों को स्थानीय प्रशासन से अधिकांशतः पत्राचार हिन्दी में करना पड़ता है। न्यायालय, तहसील, नगरपालिका, विद्युत बोर्ड, कलेक्टरेट, कानून व्यवस्था संबंधी कार्यालयों से भी इन उद्योगों द्वारा पत्राचार हिन्दी में होता है। हिन्दी भाषी क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के अन्य कार्यालयों से भी पत्राचार हिन्दी में करना अनिवार्य है। प्रशासन न केवल बाहरी कंपनियों

एवं उस क्षेत्र में स्थित राज्य सरकार के कार्यालयों से बल्कि अपने संगठन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने में अहम भूमिका निभाता है। प्रशासन द्वारा संगठन के लिए आवश्यक लेखन-सामग्री तथा विभिन्न मदों के क्रय के संबंध में की जाने वाली कार्रवाई हिन्दी में होती है और नाम पट्ट, रबड़ की मुहरें आदि हिन्दी में बनवाए जाते हैं। वाहन क्रय हेतु आवश्यक अग्रिम, यात्रा भत्ता स्वीकृत करना, वाहन क्रय, वाहन अल्प अवधि के लिए ठेके पर लेने के संबंध में कार्रवाई, संपदा से संबंधित कार्रवाई जैसे भूमि अर्जन, आवासीय क्वार्टरों के आबंटन संबंधी आदेश हिन्दी में निकाले जाते हैं। संपदा के अनुरक्षण से संबंधित कार्य भी हिन्दी में संपादित किए जाते हैं। केन्द्रीय प्रेषण अनुभाग, जो प्रशासन का मुख्य अंग है, में अन्य स्थानों को भेजे जाने वाले पत्रों पर पते आदि हिन्दी मे लिखे जाते है। संचार माध्यम बेतार, में भी रोमन लिपि में हिन्दी में संदेश भेजे जाते हैं। केन्द्रीय भंडार का कार्य भी प्रशासन के अंतर्गत आता है। इसके द्वारा अनेक मदों का वितरण संगठन के विभिन्न विभागों को किया जाता है। इनके अलावा संगठन में प्रशासन के क्षेत्र अनेक हैं जिन पर नीचे प्रकाश डाला जा रहा है।

प्रशासन के अन्य क्षेत्रः

प्रशासन के अन्य क्षेत्रों में संगठन के कर्मचारियों से संबंधित स्थापना, कल्याण, औद्योगिक संबंध, सुरक्षा क्षेत्र भी आते हैं।

स्थापना

संगठन में प्रशासन जितना महत्वपूर्ण है उतना स्थापना में भी है। कार्यरत कर्मचारियों की वैयक्तिक नस्तियों को रखना, सेवा पुस्तिकाओं में हिन्दी में प्रविष्टियां, उनके लिए लागू सभी प्रकार की सुविधाओं तथा छुट्टी यात्रा रियायत, चिकित्सा सुविधा, संतान शिक्षा भत्ता, परिवार पेंशन योजना, जमा संबद्ध बीमा योजना, हितकारी निधि योजना, अर्जित छुट्टी, आकस्मिक छुट्टी के फार्म/कार्ड आदि में हिन्दी का प्रयोग होता है। अनधिकृत अनुपस्थिति एवं कार्य में लापरवाही को रोकने के लिए कर्मचारियों को "कारण बताओ सूचना" जारी करने एवं "जांच प्रक्रिया" आदि अनुशासनात्मक कार्यवाही हिन्दी में की जाती है। अदेयता प्रमाण-पत्र, स्थानान्तरण आदेश आदि हिन्दी में जारी किए जाते हैं। कर्मचारियों के वेतन संबंधी आंकड़े वेतन पर्ची हिन्दी में बनाए जाते हैं। इस तरह प्रशासन के कार्यक्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग होता है।

कल्याण क्षेत्र

संगठन में कार्यरत कर्मचारियों को कल्याण सुविधाएं प्रदान करना भी संगठन का दायित्व है। कल्याणकारी सुविधाओं के अन्तर्गत निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएं, आवागमन सुविधाएं, मनोरंजन सुविधाएं, क्रीड़ा सुविधाएं, कर्मचारियों की संतान हेतु शैक्षिणक सुविधाएं आदि आती हैं। इतना ही नहीं निकटतम विकास कार्यक्रम के अंतर्गत ग्रामीणों को पेयजल सुविधा, पहुंच मार्ग बनाना, पाठशाला भवनों का निर्माण, मुफ्त गणवेश वितरण संबंधी कागजातों में तथा मेधावी छात्र पुरस्कार वितरण तथा तत्संबंधी प्रमाण पत्रों में हिन्दी का प्रयोग होता है। राष्ट्रीय समारोहों में घोषणा हिन्दी में की जाती है तथा आयोजित क्रीड़ाओं के विजेताओं की सूची, परिपत्र इत्यादि हिन्दी में बनाए जाते हैं। राज्य सरकार के अधिकारियों से निकटतम विकास कार्यक्रम से संबंधित पत्राचार हिन्दी में किया जाता है तथा निकटतम विकास योजनाओं से संबंधित रिपोर्ट हिन्दी में बनायी जाती है। इन सबसे पता चलता है कि राजभाषा हिन्दी का प्रयोग सुचारू रुप से हो रहा है।

औद्योगिक संबंध क्षेत्र

संगठन कर्मचारियों से युक्त होता है और एक से अधिक व्यक्ति होने से विवाद की संभावना होती है। अतः हर संगठन में औद्योगिक संबंध के कार्य की भी महत्ता है जिनका संपादन हिन्दी के माध्यम से होता है। इस विभाग द्वारा श्रमिक संघों को मान्यता देना, विवाद उठने पर कचहरी में निपटान का कार्य, सहायक/क्षेत्रीय श्रमायुक्तों से संपर्क, कान्ट्राक्ट लेबर की नियुक्ति छात्रवृत्ति स्वीकृत करना, प्रबन्धन एवं श्रमिक संघों की बैठक का आयोजन, विभिन्न समितियों का गठन, शिखर संयुक्त परिषद आदि में प्रतिनिधियों की नियुक्ति, बैठकों का कार्यवृत्त बनाना, मासिक, तिमाही एवं वार्षिक रिपोर्टों को तैयार करना, सेवानिवृत्त कर्मचारियों को चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करना, कर्मचारियों को विशेष प्रोत्साहन देना, प्रबन्धन एवं श्रमिकों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए प्रयास करना, छुट्टियों की घोषणा, मुख्यालय द्वारा समय-समय पर प्राप्त नियमों, प्रक्रियाओं का पालन करना, सेवा शर्तों में परिवर्तन होने पर उन्हें कर्मचारियों को सूचित करना, निर्धारित समय में वेतन समझौते करना आदि कार्यों में हिन्दी का प्रयोग होता है।

सुरक्षा क्षेत्र

मानव जीवन अमूल्य है, सुरक्षा बहुमूल्य है। सुरक्षा के उपाय अपनाना, आवश्यक उपकरणों को प्रदान करना हर संगठन का कर्तव्य है। सुरक्षित कार्य के लिए सुरक्षा उपकरण जैसे सुरक्षा टोपी, जूते, चश्मे, दस्ताने, ईयर मफ इत्यादि मंगाने हेतु पत्राचार हिन्दी में किया जाता है और सुरक्षा सप्ताह के अवसर पर परिपत्र आदि हिन्दी में निकाले जाते हैं तथा हिन्दी के माध्यम से सुरक्षा स्मारिका का प्रकाशन भी होता है। यदि क्षेत्र कारखाना अथवा खनन क्षेत्र है तो सुरक्षा एवं पर्यावरण से संबंधित नारे जगह-जगह पर हिन्दी में लिखे जाने जरूरी है ताकि उन्हें आम आदमी भी समझ सके और सावधानी बरत सके।

उपसंहार

उपर्युक्त क्षेत्रों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को देखने से यह सिद्ध होता है कि राजभाषा हिन्दी का केन्द्रीय सरकार के संगठनों के सभी कार्य-व्यापारों में भाषिक माध्यम के रूप में अबाध गति से प्रयोग हो रहा है। राजभाषा के कार्य में लगे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उपर्युक्त क्षेत्रों से संबंधित विषय/प्रयोग में लायी जाने वाली शब्दावली का ज्ञान होना आवश्यक है तभी वे सफलतापूर्वक इन कार्यों को निपटाने में सहयोग दे सकेंगे। राजभाषा के क्षेत्र में कार्य, व्यापार एवं चिन्तन पद्धति में अन्वय-समन्वय होना नितान्त आवश्यक है।

राष्ट्र लिपि के रूप में देवनागरी लिपि

—डा॰ एस॰ जे॰ दिवाकर, डी॰ लिट्॰

जिस प्रकार किसी बहुभाषी राष्ट्र के लिए राजभाषा के रूप में कोई एक भाषा अपेक्षित है, उसी प्रकार बहुलिपि वाले राष्ट्र के लिए राष्ट्रलिपि अथवा अखिलदेशीय लिपि के रूप में एक लिपि भी अत्यन्त आवश्यक है। कहना न होगा कि भारत इसी प्रकार का एक बहुभाषी राष्ट्र है। स्वभावतः यह प्रश्न उठता है कि किस लिपि को भारत की राष्ट्रलिपि के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

भारत में प्रचलित प्रमुख प्राचीन तथा आधुनिक लिपियां हैं— ब्राह्मी खरोष्ठी, गुप्त, कुटिल, देवनागरी, शारदा, बंगला, तेलुगु, कन्नड़, कलिंग, तमिल, वहेलुतु, मलयालम, गुरूमुखी, गुजराती, मैथिली, मोड़ी, कैथी, महाजनी और उर्दू। अंग्रेजी के साथ हमें रोमन लिपि मिली है। इन समस्त लिपियों का किसी न किसी रूप में भारत का सम्बन्ध है।

इन लिपियों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। अप्रचलित अर्थात् प्राचीन लिपियां और प्रचलित लिपियां। अप्रचलित लिपियों में ब्राह्मी, खरोष्ठी, गुप्त तथा कुटिल लिपि को लिया जा सकता है, प्रचलित लिपियों में देवनागरी, बंगला, तमिल, गुरूमुखी आदि। अप्रचलित लिपियां आज की जनता से पूर्णतः दूर हैं और उनका प्रयोग आज लेखन में कोई नहीं करता है। उनकी जानकारी भी मात्र कुछ लिपि विशेषज्ञों या पुरातत्ववेत्ताओं के अलावा कदाचित और किसी को नहीं है। उनमें पुस्तकें भी नहीं छपती। ऐसी स्थिति में उन्हें राष्ट्रलिपि के रूप में स्वीकार करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। मातृभाषा की भांति उन्हें मातृलिपि ही कहा जा सकता है। प्रचलित लिपियों में महाजनी, कैथी, मोड़ी शारदा आदि सीमित क्षेत्रों में ही प्रचलित हैं और विशिष्ट लोगों द्वारा ही प्रयुक्त होती हैं। इस प्रकार उनका भी ज्ञान बहुत कम लोगों को है। राष्ट्र में उनको जानने वालों का प्रतिशत नगण्य है। इसलिए इन लिपियों में भी कोई राष्ट्रलिपि होने के योग्य नहीं है। अब भारत की वे प्रमुख लिपियां ही शेष रहती है जिनका प्रयोग प्रमुख एवं महत्वपूर्ण भाषाओं के लेखन में होता है।

देवनागरी लिपि का प्रयोग संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, मराठी और कोंकणी के लिखने में होता है। मणिपुरी भाषा-भाषी मणिपुरी भाषा के लिए बंगला को छोड़कर इसके प्रयोग पर विचार कर रहे हैं। भारत में सिंधी भी अरबी लिपि पर आधारित सिंधी को छोड़कर उसके स्थान पर देवनागरी लिपि को अपनाने के पक्ष में होते जा रहे हैं। बहुत सारी पुस्तकें भी देवनागरी लिपि में छप चुकी हैं। उर्दू भाषा के लिए भी देवनागरी लिपि के प्रयोग की बात कभी-कभार चलती-सुनती जाती रही है। उर्दू के प्रायः बहुत से प्रसिद्ध कवियों एवं लेखकों का साहित्य देवनागरी लिपि में प्रायः ज्यों-का-त्यों आ चुका है। उर्दू साहित्य तथा कुछ और उर्दू पत्रिकाएं भी देवनागरी में सफलतापूर्वक प्रकाशित होती रही है। पंजाबी भाषा लिखने में भी कुछ लोग देवनागरी का प्रयोग करते हैं। दक्षिण भारत की भाषाओं तथा बंगला आदि के भी कुछ ग्रंथ देवनागरी में प्रकाशित हो चुके हैं और होते जा रहे हैं। नेपाल की लिपि भी देवनागरी है।

इसके अतिरिक्त उड़िया लिपि, तमिल लिपि, तेलुगु लिपि, मलयालम लिपि, गुजराती लिपि, गुरूमुखी लिपि आदि इन्हीं भाषाओं के लिखने में ही

प्रयुक्त होती है। उर्दू या फारसी-अरबी लिपि उर्दू, कश्मीरी तथा अंशतः सिंधी भाषा के लेखन में प्रयुक्त होती है।

कश्मीरी भाषा के लेखन में पहले शारदा लिपि का प्रयोग होता था और अब केवल कुछ ब्राह्मण परिवार ही उसका प्रयोग करते हैं। इस प्रकार कश्मीरी भाषा की लिपि शारदा नहीं है। रोमन लिपि का प्रयोग अंग्रेजी लेखन में होता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि देवनागरी का प्रयोग ही सर्वाधिक होता है। इसी कारण देवनागरी का ही राष्ट्र लिपि या सम्पर्क लिपि के रूप में नाम लिया जा रहा है। यह उल्लेख्य है कि राष्ट्रलिपि के रूप में देवनागरी के नाम का आगे आना कोई नई बात नहीं है। आज से बहुत पहले एक ऐसे प्रदेश में यह आवाज सबसे पहले सुनाई पड़ी थी जो न तो हिन्दी या मराठी प्रदेश है और न जहां देवनागरी लिपि दैनिक काम-काज में ही प्रयुक्त होती है। वह प्रदेश बंगाल था और प्रायः यह सभी जानते हैं कि हिन्दी भाषा को अखिल भारतीय भाषा बनाने की आवाज़ उठाने वालों में जिस प्रकार बंगाल अग्रणी रहा है उसी प्रकार देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि बनाने की आवाज उठाने वालों में भी आगे रहा है। उसका कारण यह था कि यहां सामान्य प्रबुद्धता अन्य प्रान्तों की तुलना में प्रायः बहुत पहले आई। वहीं राजाराममोहन राय ने पहले-पहल राष्ट्रभाषा के लिए हिन्दी का नाम लिया और वहीं इस सदी के पहले दशक में कलकत्ता हाईकोर्ट के जस्टिस शारदाचरण मिश्र ने सबसे पहले देवनागरी लिपि को राष्ट्रलिपि के रूप में स्वीकार करने का सुझाव दिया। यों इस विषय में स्वामी दयानन्द सरस्वती पहले संकेत कर चुके थे। श्री शारदा चरण मिश्र की प्रेरणा से देवनागरी लिपि के देशव्यापी प्रचार-प्रसार के लिए एक लिपि-विस्तार परिषद् की स्थापना हुई और इस उदेश्य की पूर्ति के लिए देवनागर नामक पत्रिका निकाली गई जिसे देश के हर कोने से सहयोग प्राप्त हुआ।

देवनागरी के साथ ही कुछ कोनों से रोमन को संपर्क-लिपि या राष्ट्र-लिपि बनाने का स्वर भी कभी सुनाई पड़ता था। इन दो के अतिरिक्त किसी अन्य लिपि का नाम राष्ट्र-लिपि के रूप में कदाचित कभी भी नहीं लिया गया। इसका कारण है अन्य लिपियों का अपेक्षतया सीमित एवं मात्र क्षेत्रीय प्रचार एवं प्रयोग। अब विचारीय है कि देवनागरी और रोमन में राष्ट्र लिपि होने योग्य कौन-सी लिपि है जैसा कि अधिकांश लोगों का कहना है और कई दशकों से कहते आ रहे हैं यह स्थान देवनागरी ही ले सकती है।

किसी भाषा के लिए सबसे वैज्ञानिक लिपि वह है जिसमें उस भाषा में प्रयुक्त सभी या अधिकांश ध्वनियों के लिए अलग-अलग लिपि चिह्न या अक्षर हों। उस दृष्टि से रोमन लिपि बहुत पीछे रह जाती है। भारतीय भाषाओं में पचास से ऊपर ध्वनियां हैं जबकि रोमन में मात्र 26 अक्षर ही हैं और इनमें भी एक्स आदि कुछ ऐसे हैं जिन्हें ध्वन्यात्मक दृष्टि से स्वतंत्र अक्षर नहीं माना जा सकता है। इस प्रकार भारतीय भाषाओं को दृष्टि में रखने पर रोमन में अपेक्षित से मुश्किल से आधे अर्थात् 25 अक्षर हैं। इस प्रकार 25 रोमन अक्षरों के आधार पर 49-50 भारतीय ध्वनियों को अंकित करना कितना असुविधाजनक एवं अव्यावहारिक होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। तात्पर्य यह है कि रोमन लिपि कई दृष्टियों से भ्रामक एवं अवैज्ञानिक, ध्वनीय आवश्यकताओं की दृष्टि से अपर्याप्त है और देवनागरी लिपि की तुलना में भारत में अल्प अप्रचालित होने के कारण राष्ट्रलिपि के रूप में ग्राह्य होने के सर्वथा अयोग्य है।

देवनागरी लिपि रोमन लिपि की तरह विदेशी लिपि नहीं है अपितु पूर्णतः भारतीय है। उसकी उत्पत्ति और विकास भारत भूमि में ही हुई है। इस प्रकार इसकी जड़े देश के इतिहास और संस्कृति में हैं। भारत में जितनी भी लिपियां प्रचलित हैं उनमें देवनागरी लिपि को जानने वालों की संख्या सर्वाधिक है। रोमन लिपि के जानने वाले तीन-चार प्रतिशत से अधिक नहीं होंगे। बंगला, गुरूमुखी, उड़ीया, तमिल, तेलुगु आदि अन्य लिपियों को जानने वाले भी पांच प्रतिशत से लेकर आठ प्रतिशत के बीच में ही हैं किन्तु देवनागरी जानने वालों की संख्या पचास प्रतिशत से भी अधिक है और इस अधिकता के प्रमुख कारण हैं— देवनागरी लिपि पूरे हिन्दी प्रदेश में प्रयुक्त होती है और हिन्दी भाषी जनता भारत में हिन्दीतर भाषा-भाषी जनता से अधिक है। इसके अतिरिक्त मराठी तथा कोंकणी भाषा की लिपि भी यही है। असम के 'नेपाली' लोग नेपाली के लिए भी इस का प्रयोग करते हैं। ऐसे लोगों की भी संख्या पर्याप्त है जो इन भाषाओं को नहीं जानते। वे संस्कृत, पालि, अर्धमागधी आदि से न्यूनाधिक रूप से परिचित हैं, और देवनागरी लिपि से भी अपरिचित नहीं है क्योंकि इनके ग्रंथ प्रायः देवनागरी में ही मुद्रित हैं या फिर अपने प्राचीन सहित्य, संस्कृति या दर्शन आदि के अध्ययन के लिए जिन्होंने संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश आदि का अध्ययन किया है और इस प्रकार देवनागरी लिपि से पूर्णतः परिचित है। प्रमुखतः दक्षिण भारत या बंगाल में ये बातें बहुत अधिक हैं। इस प्रकार हिन्दी, कोंकणी और मराठी तथा नेपाली जनता के अतिरिक्त अन्य शिक्षित भारतीयों का भी एक अच्छा खासा प्रतिशत धर्म, दर्शन, पुरातत्व इतिहास, सहित्य आदि में अभिरूचि रखने के कारण देवनागरी लिपि से पूर्णतः अपरिचित नहीं कहा जा सकता।

भारत की प्रायः सभी लिपियां प्राचीन भारतीय लिपि ब्राह्मी से उद्भूत होने के कारण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से साम्य रखती है। देवनागरी लिपि मध्यदेशीय होने के कारण ब्राह्मी लिपि की सीधी परम्परा में है। साथ ही रूपात्मक दृष्टि से भी बीच में पड़ती है। इस तरह अन्यों की तुलना में अन्य सभी लिपियों के अपेक्षाकृत अधिक निकट है। इसी कारण गुजराती, बंगला आदि लिपियों के जानने वाले तो बिना सीखे मात्र अनुमान से ही देवनागरी के अधिकांश अक्षरों को पहचान सकते हैं। इसका आशय यह है कि अन्य भारतीय लिपियों की तुलना में लोग इसे सरलता से सीख सकते हैं।

यों तो सभी लिपियां अपने जानने वालों के लिए सरल होती हैं किन्तु यह बात छोड़ दी जाए तो यह कहा जा सकता है कि देवनागरी लिपि पर्याप्त सरल है। उसमें दक्षिण भारत तथा उड़िया आदि लिपियों की भांति जटिल अक्षर प्रायः नहीं हैं, उदाहरणार्थ यदि किसी विदेशी को तमिल मलयालम, कन्नड़, तेलुगु, उड़िया लिपि के साथ देवनागरी लिपि सिखलाई जाए तो वह देवनागरी अपेक्षताकृत कम समय में सीख लेगा। यह बात

केवल अनुमान पर नहीं कही जा रही है। इन पंक्तियों के लेखक ने एक फ्रांसीसी, एक कंबोडियन और एक अमेरिकन से अलग-अलग इस संबंध में प्रयोग करवाये जिसका निष्कर्ष इस प्रकार निकला—देवनागरी लिपि तमिल, तेलुगु कन्नड़, मलयालम और उड़िया लिपि से सरल है और कम समय में सीखी जा सकती है। देवनागरी बंगला और गुरूमुखी लिपियां लगभग समान हैं और गुजराती और ऊर्दू सबसे सरल है।

संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश के अध्ययन का मूलाधार होने के कारण भारत की प्रतिनिधि या प्रमुख लिपि के रूप में विश्व के सभी कोनों में कुछ न कुछ लोग देवनागरी को जानते हैं प्रमुखतः भाषा विज्ञान, दर्शन, प्राचीन इतिहास, भारतीय पुरातत्व एवं संस्कृति आदि क्षेत्रों के विद्वानों एवं अध्येताओं में यह पूर्ण प्रचलित है।

वैज्ञानिक लिपि में जिस भाषा के लिए वह प्रयुक्त हो, उसकी सभी आवश्यक ध्वनियों के लिए अलग-अलग चिह्न होने चाहिए। भारत में प्रचलित लिपियों में इस दृष्टि से सबसे अपूर्ण लिपि रोमन तथा उर्दू है। तमिल में भी स्थिति लगभग वही है क्योंकि उसमें कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग में देवनागरी की तरह पांच-पांच अक्षर न होकर मात्र दो-दो अक्षर हैं। देवनागरी में उस तरह की अपूर्णताएं नहीं है। कुछ ही नये अक्षरों को जोड़ देने पर यह सभी भारतीय भाषाओं को सरलता से लिख सकती है। इस प्रसंग में यह भी उल्लेख्य है कि भारत की ही नहीं विश्व की कोई भी लिपि ऐसी नहीं है जो बिना परिवर्धन के भारत की सभी भाषाओं में स्पष्टतापूर्वक लिख सके। थोड़ा बहुत परिवर्तन सभी में आवश्यक है। देवनागरी में जो परिवर्धन अपेक्षित है, वह विश्व की किसी भी लिपि से अधिक नहीं है बल्कि कम है। इस प्रकार उस दृष्टिकोण से भी देवनागरी लिपि राष्ट्रलिपि होने के सर्वथा उपयुक्त है।

इस प्रकार निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अन्य भारतीय लिपियों की तुलना में देवनागरी लिपि राष्ट्रलिपि होने के अधिक उपयुक्त है किन्तु इसे ज्यों की त्यों संपर्क लिपि या राष्ट्रलिपि नहीं बनाया जा सकता। उस दृष्टि से उसके समक्ष दो प्रमुख समस्याएं हैं। एक तो यह कि कुछ भारतीय भाषाओं में कुछ ऐसी ध्वनियां हैं जिनके लिए देवनागरी में लिपिचिह्न या अक्षर नहीं हैं। अतः उनके लिए नये अक्षरों को बनाने की आवश्यकता है और दूसरी यह कि उसमें कुछ अवैज्ञानिकताएं या कमियां हैं जिसमें सुधार अपेक्षित है।

इस प्रसंग में एक यह प्रश्न उठ सकता है कि राजभाषा हिन्दी का राष्ट्रलिपि से कम संबंध है? वस्तुतः हिन्दी जब राजभाषा है तो कभी न कभी सभी भारतीय भाषाओं के नाम, स्थान नाम, संस्था नाम आदि इसमें लिखने पड़ सकते है। ऐसी स्थिति में जब तक सभी भारतीय भाषाओं की ध्वनियों के लिए देवनागरी में लिपि चिह्न नहीं होंगे, वह सभी नामों को लिख नहीं सकती। इसीलिए देवनागरी का अखिल भारतीय रूप अनिवार्यतः आवश्यक है, उसे चाहे हम राष्ट्रलिपि कहें या अखिल भारतीय लिपि या परिवर्धित देवनागरी लिपि।

हिन्दी सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से विश्व की भाषाओं में महानतम स्थान रखती है।

- डॉ. अमरनाथ झा

हिन्दी हिमालय से लेकर कन्या कुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है।

- राहुल सांकृत्यायन

देश की भाषाओं को अपनाए बिना समृद्धि सम्भव नहीं।

- श्रीमती महादेवी वर्मा

राजभाषा विभाग में तकनीकी कक्ष की भूमिका

—डा॰ विजय गोयल,
—सुरेन्द्र कुमार

आज जहां भी हिन्दी के प्रयोग की बात होती है, कंप्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग का विषय अपने आप सामने आ जाता है। यदि हम कंप्यूटर पर हिन्दी शीघ्र नहीं ला पाए तो स्पष्ट है कि हिन्दी एक औपचारिकता ही रह जाएगी। हमारे सामने एक अहम् सवाल है कि कंप्यूटर पर हिन्दी को जल्द से जल्द कैसे लाएं जिससे हिन्दी-कंप्यूटरीकरण हमारी तमाम आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

कंप्यूटर पर हिन्दी में काम को लेकर कई गलत धारणाएं हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि भाषा की दिक्कत से हिन्दी भाषियों के लिए कंप्यूटर बेकार है। मानो कंप्यूटर की भाषा अंग्रेजी हो, ऐसा है नहीं। कंप्यूटर महज एक मशीन है जिस भाषा में उसे निर्देश दिए जाएंगे उसी में वह काम करेगा। असल में कंप्यूटर एक टीवी सैट की तरह है जिस पर हिन्दी या अंग्रेजी में कार्यक्रम देखना होता है तो चैनल बदला जाता है, उसी तरह कंप्यूटर पर हिन्दी या अंग्रेजी में काम सॉफ्टवेयर बदल कर किया जा सकता है। हिन्दी के ऐसे कई सॉफ्टवेयर हैं जिनमें हिन्दी में लिखाई, पत्र व्यवहार, आंकड़ों का रिकार्ड रखने, एकाउंटिंग, डिजाइनिंग, डीटीपी, प्रोग्रामिंग संभव है। इस साल के आखिर तक तो विंडोज का हिन्दी आपरेटिंग सिस्टम भी आ जाना है आपरेटिंग सिस्टम हिन्दी में आया नहीं कि सब कुछ बदल जाएगा। आईबीएम और एपल कंपनी पहले ही हिन्दी सॉफ्टवेयर में पहल कर चुकी है।

आई॰बी॰एम॰, टाटा ने हिन्दी में पी॰सी॰डॉस को भारतीय बाजार में लाकर एक महत्वपूर्ण कार्य किया है। जो निर्देश अभी तक कंप्यूटर को अंग्रेजी में दिए जाते थे, हिन्दी पी॰सी॰डॉस के बाजार में आ जाने से अब यह निर्देश कंप्यूटर को हिन्दी में दिए जा सकते हैं। यह 16 बिट पर आधारित ऑपरेटिंग सिस्टम है। इसकी खूबी है कि यह अकेला द्विभाषी ऑपरेटिंग सिस्टम है, जो हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी काम करता है। यह प्रयोगकर्ता की इच्छा है कि वह किस भाषा या मोड में काम करना चाहेगा। जिस प्रकार एमएस-डॉस (MSDOS) के साथ बुनियादी (BASIC) भाषा को एक कमांड के रूप में प्रस्तुत किया गया था ठीक उसी प्रकार पीसी-डॉस के अन्तर्गत रैक्स (REX) नामक एक उच्च स्तरीय प्रोग्रामिंग भाषा को बतौर कमांड के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस भाषा के अलावा पीसी-डॉस अपने प्रयोगकर्ता को एच-वर्ड (H-Word) नाम का एक शब्द संसाधक (Word Processor) भी उपलब्ध कर रहा है।

टाटा-आईबीएम के प्रबंधकों के अनुसार इस ऑपरेटिंग सिस्टम पर हम एमएस-डॉस के तहत चलने वाले सभी एप्लीकेशन सॉफ्टवेअरों को बिना किसी असुविधा के प्रयोग कर सकते हैं चाहे वह वर्ड स्टार, डीबेस, विंडोज 3.1 या विंडोज 95 जैसे सॉफ्टवेअर हों या फिर प्रयोगकर्ता की आवश्यकतानुसार बने एकाउंटिंग आदि के सॉफ्टवेअर हों।

कंप्यूटर पर कार्य मुख्य रूप से शब्द संसाधक (Word Prosse sing) व आंकड़ों पर आधारित डाटाबेस द्वारा होता है। शब्द संसाधक

कार्य के लिए तकनीकी विषय के रूप में आज बाजार में जिस्टाकर्ड/जिस्टशैल व अन्य हिन्दी सॉफ्टवेअर उपलब्ध हैं। जिस्ट कार्ड/जिस्ट शैल का निर्माण सी-डेक, पुणे ने किया है। अन्य कंपनियों द्वारा हिन्दी सॉफ्टवेअरों में लीप, शब्दरत्न, अक्षर, प्रकाशक, सुलिपि, आकृति, आलेख, ए०पी०एस० 2.0 इत्यादि उपलब्ध हैं। केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों के मंत्रालयों/विभागों, उपक्रमों तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों में किसी हद तक इनका प्रयोग होने भी लगा है।

कंप्यूटरीकरण का विकास विश्वभर में हो रहा है। फ्रांस, रूस, चीन तथा जापान आदि ने अपनी भाषा का महत्व समझा और अपना समस्त "कार्य-व्यवहार" अपनी भाषा में विकसित कर लिया है। उनके सामने न समस्याएं थीं न सवाल थे, सिर्फ थी एक दृढ़ इच्छाशक्ति और एक अटूट निश्चय। समस्या यह नहीं है कि कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य नहीं हो सकता लेकिन समस्या यह है कि हम करें क्यों। आज भले ही कार्यालयों में अनेक पी०सी० नजर आते हैं परन्तु उसमें हिन्दी सॉफ्टवेअर नहीं के बराबर उपलब्ध हैं।

राजभाषा विभाग में स्थापित तकनीकी, कक्ष, यांत्रिक तथा इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा हिन्दी में कार्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न मंत्रालयों/विभागों, उपक्रमों, बैंकों आदि से सम्पर्क स्थापित करता है तथा इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा हिन्दी में कार्य करने में आ रही कठिनाईयों को दूर करने का प्रयास करता है।

तकनीकी कक्ष की मुख्य भूमिका इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा हिन्दी में कामकाज करने के लिए उपलब्ध सुविधाओं का प्रचार-प्रसार करना तथा उसके लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करना है। इलैक्ट्रॉनिक क्षेत्र में हिन्दी में नवीनतम जानकारी देने हेतु दो पत्रिकाओं का प्रकाशन तकनीकी कक्ष द्वारा किया जा रहा है। इनमें एक है—"देवनागरी में यांत्रिक और इलैक्ट्रानिक सुविधाएं"। इस पत्रिका में उपलब्ध हिन्दी सॉफ्टवेअरों के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाती है। यह वर्ष में एक बार प्रकाशित की जाती है। दूसरी पत्रिका "परिदृश्य" नाम से प्रकाशित की जाती है, जो वर्ष में 2 बार मुद्रित करवाई जाती है। इस पत्रिका के द्वारा भी इलैक्ट्रॉनिक क्षेत्र में देवनागरी में उपलब्ध इलैक्ट्रॉनिक सुविधाओं के बारे में नवीनतम जानकारी दी जाती है। दोनों पत्रिकाएं भारत सरकार, एवं राज्य सरकारों के मंत्रालयों/विभागों, राष्ट्रीयकृत बैंकों तथा उपक्रमों को निःशुल्क भेजी जाती है।

तकनीकी कक्ष हिन्दी में कंप्यूटर प्रशिक्षण का आयोजन राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र के माध्यम से करवाता है। पिछले वर्ष में 11 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करवाया गया, जिसमें से 7 राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र द्वारा और 4 राजभाषा विभाग द्वारा प्रायोजित करवाए गए। राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों/विभागों के अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों में केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों/विभागों के अलावा उपक्रमों तथा बैंकों के अधिकारी/कर्मचारी भी भाग ले सकते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है, कि पूर्व में इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूचना मंत्रालयों/विभागों, उपक्रमों और बैंकों आदि में नहीं पहुंच पाती थी, जिससे इन कार्यक्रमों का लाभ पूर्णरूप से नहीं उठाया जा रहा था। पिछले वर्ष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों द्वारा करवाया गया। इस प्रचार के फलस्वरूप 9—13 मार्च, 1998 को रा०सू०वि० केन्द्र, नई दिल्ली में होने वाले प्रशिक्षण कार्यक्रम में 200 से अधिक अनुरोध प्राप्त हुए। प्रशिक्षणार्थियों की रुचि को देखते हुए राजभाषा विभाग ने ई०आर०टी०सी० आई०, नोयडा जो भारत सरकार के इलैक्ट्रॉनिक विभाग की एक संस्था है, के द्वारा मार्च, 1998 में 2 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करवाया गया। पहला कार्यक्रम 2 से 6 मार्च, 1998 को और दूसरा 23 से 26 मार्च, 1998 को सम्पन्न हुआ।

तकनीकी कक्ष के अनुरोध पर सी०एम०सी० लिमिटेड द्वारा भी 2-2 दिन के 2 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन जनवरी, 1998 और फरवरी, 1998 में किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रति रुझान को देखते हुए वर्ष 1998-99 में राजभाषा विभाग द्वारा प्रयोजित कार्यक्रमों की संख्या 4 से बढ़ाकर 22 करने का प्रस्ताव है। इनमें से 6 राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र के द्वारा और 8 ई०आर०टी०सी०आई०, नोयडा, 2 सी०एम०सी० लि० द्वारा और 6 सी-डेक, पुणे के द्वारा करवाए जाएंगे। इसके अलावा राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र 5 कोर्स आयोजित करेगा, जिसमें केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार के अधिकारी और कर्मचारी भाग ले सकेंगे। सी०एम०सी० लि० द्वारा भी 2 कार्यक्रम पांच-पांच दिन के और 4 कार्यक्रम दो-दो दिन की आयोजित करेगा।

वर्ष 1998-99 में विभाग लक्ष्य कम से कम 500 अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में कंप्यूटर प्रशिक्षण देने का है।

राजभाषा विभाग ने कुछ मल्टीमीडिया फिल्मों का निर्माण करवाया है। जैसे "नई सुबह की ओर", और "कम्प्यूटर की वाणी"। अभी हाल ही में "नई मंजिल की नई राहें" नामक फिल्म का निर्माण करवाया गया है जो दो भागों में है। पहले भाग में कंप्यूटर से परिचय करवाया गया है, जिसमें हार्डवेयर के बारे में जानकारी दी गई है और दूसरे भाग में उपलब्ध हिन्दी सॉफ्टवेअरों के बारे में जानकारी दी गई है।

तकनीकी कक्ष द्वारा समय-समय पर कार्यशालाओं और कंप्यूटर प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जाता है। जिसमें यांत्रिक तथा इलैक्ट्रॉनिक सुविधाओं के बारे में नवीनतम जानकारी दी जाती है।

इसके अलावा राजभाषा विभाग सी-डेक, पुणे के माध्यम से कुछ सॉफ्टवेअरों का भी विकास करवा रहा है।

राजभाषा विभाग ने सी-डेक, पुणे की सहायता से 'लीला-हिन्दी प्रबोध' नामक सॉफ्टवेअर तैयार करवाया है, जिसकी सहायता से कर्मचारी और अधिकारी कंप्यूटर प्रबोध स्तर तक की हिन्दी सीख सकते हैं। इस सॉफ्टवेअर से देवनागरी वर्ण की लखन विधि ग्राफिक्स के रूप में चित्रित होती है और देवनागरी के वर्णों की रचना-विधि (स्ट्रोक-बाई-स्ट्रोक) और उसके उच्चारण के संबंध में आवश्यक जानकारी मिलती है। इसकी मदद से पाठों में आए हुए वाक्यों, शब्दों तथा वर्णों का मानक उच्चारण प्रशिक्षणार्थी सुन सकता है और जितनी बार चाहे उतनी बार उनका अभ्यास कर सकता है। यह डॉस वातावरण में कार्य करता है। इस सॉफ्टवेअर को विन्डोज और यूनिक्स वातावरण में भी विकसित करवाया जा रहा है।

इसी प्रकार राजभाषा विभाग सी-डेक, पुणे की सहायता से 'लीला-हिन्दी-प्रवीण' नामक सॉफ्टवेअर को भी यूनिक्स और विन्डोज वातावरण में विकसित करवा रहा है, जिसके अंतर्गत प्रवीण स्तर के पाठ्यक्रम को इस सॉफ्टवेअर में डाला जाएगा। राजभाषा विभाग द्वारा प्राज्ञ स्तर के पाठयक्रम का भी एक सॉफ्टवेअर सी-डेक, पुणे से विकसित करवाया जा रहा है। यह सॉफ्टवेअर यूनिक्स और विन्डोज वातावरण में विकासित हो रहा है। निकट भविष्य में ये सॉफ्टवेअर बाजार में उपलब्ध हो जाएंगे, जिससे हिन्दी कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम को कंप्यूटरों के द्वारा सिखाने में सहायता मिलेगी।

राजभाषा विभाग द्वारा सी-डेक, पुणे की सहायता से "कंप्यूटर साथित अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद" नामक सॉफ्टवेअर भी विकसित करवाया जा रहा है। इसके प्रथम चरण का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा द्वितीय चरण का कार्य प्रगति पर है। इस सॉफ्टवेअर की सहायता से "प्रशासनिक क्षेत्र" के कार्यालयों ज्ञापनों, आदेशों, परिपत्रों का कंप्यूटर की सहायता से हिन्दी अनुवाद तुरंत मिल सकेगा। इस सॉफ्टवेअर का विकास अगले डेढ़ वर्ष में पूरा होने की आशा है।

- राजभाषा विभाग ने विभिन्न प्रकार की सूचना जैसेः राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम, राजभाषा हिन्दी के प्रयोग हेतु नियम पुस्तिका आदि "निकनेट" (NICNET) पर हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में उपलब्ध करवाई गई है। पूरे देश में फैले हुए राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्रों से राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना कंप्यूटर पर देखी जा सकती है।

राजभाषा विभाग द्वार हिन्दी का स्वराधारित कुंजीपटल सीखने के लिए एक "की-बोर्ड ट्यूटर" सॉफ्टवेअर तैयार करवाया गया है। जिसे जिस्ट कार्ड आधारित कंप्यूटरों पर स्थापित करके सीखा जा सकता है। इसे राजभाषा विभाग के तकनीकी कक्ष में एक फ्लापी भेजकर अथवा स्वयं फ्लापी लाकर निःशुल्क प्राप्त किया जा सकता है।

इसके अलावा राजभाषा विभाग द्वारा स्वराधारित कुंजीपटल सीखने के लिए पांच अध्यायों का निर्माण किया गया है, जिसकी सहायता से पांच दिन के अभ्यास से कर्मचारी/अधिकारी स्वयं टाइपिंग सीख सकता है।

यूनिक्स आधारित ऑपरेटिंग सिस्टम पर डाटा को अंग्रेजी से हिन्दी में रूपांतरित करने के लिए "लिप्यंतरण पैकेज" विकसित किया गया है। यह पैकेज मुख्यतः नामों और पतों को अंग्रेजी से हिन्दी में रूपान्तरित करने के लिए उपयोगी है। यह अंग्रेजी पाठ का हिन्दी में अनुवाद नहीं करता। इसे राजभाषा विभाग, तकनीकी कक्ष में स्वयं आकर तथा फ्लापी भेजकर निःशुल्क प्राप्त किया जा सकता है।

खूबसूरती को संवारते कुछ घरेलु इलाज

ब्लीचिंग या गोरापन लाने के लिए कच्चे आलू को छील कर पीस लें, इसको चेहरे पर 15-20 मिनट लगा कर धो लें। इससे चेहरा साफ और गोरा हो जाता है।

फैसियल के लिए चावल पिसा आटा और उसमें दूध डाल कर इसको इतना फेंट कर मिलाइए कि क्रीम की भांति बन जाए। इस पेस्ट को चेहरे पर 15-20 बार रगड़ कर मल लें, फिर चेहरे को साफ पानी से धो लें। इससे चेहरे पर रौनक आ जाती है।

मुहांसे के निशान मिटाने के लिए : कच्चे पपीते के टुकड़े चेहरे पर दिन में दो-तीन बार रगड़ने से निशान 15 से 20 दिन में साफ हो जाते हैं। कच्चे पपीते का रस निकाल कर दिन में दो-तीन बार रगड़ने से लाभ होता है।

चेहरे के धब्बे मिटाने के लिए: मसूर की दाल का बारीक पिसा आटा, उसमें दही मिला क्रीम बना लें। इस क्रीम को चेहरे पर लगाने से चेहरा साफ हो जाता है।

गर्मी में फुंसी (घमौरी) दूर करने के लिए गाढ़ा ठंडा छांछ, मट्ठा, मलने से आराम हो जाता है। इसके लिए मट्ठा लगाने के आधा घंटा बाद साफ पानी से नहा लेना चाहिए।

वर्तमान स्थिति में अनुवाद की आवश्यकता और व्यावहारिक अनुवाद

—डॉ॰ पुरुषोत्तम छंगाणी

"अनुवाद" की शाब्दिकता और उद्भव

अनुवाद शब्द का सम्बंध "वद्" धातु से है, जिसका अर्थ होता है—"बोलना" या "कहना"। "वद्" धातु में घक प्रत्यय लगाने स "वाद" शब्द बनता है और उसमें "अनु" उपसर्ग जुड़ने से "अनुवाद" शब्द निष्पन्न होता है। अनुवाद का मूल अर्थ है "पुनः कथन" या किसी के कहन के बाद कहना।

"शब्दार्थ चिंतामणि कोश में अनुवाद का अर्थ "प्राप्तस्य पुनः कथने, या ज्ञातार्थस्य प्रतिपादने" अर्थात् पहले कहे गए अर्थ को फिर से कहना" आदि दिया गया है। पाणिनी अष्टाध्यायी में भी अनुवाद का प्रयोग मिलता है:—अनुवादे चरणानाम्

अनुवाद सार्थक या प्रयोजनयुक्त पुनः कथन होता है। इस प्रकार अनुवाद पुनः कथन या पुनरअभिव्यक्ति ही प्रतीकतर का भेद है। इसमें इस भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के प्रतीकों का प्रयोग करते है।

एक भाषा की किसी सामग्री का दूसरी भाषा में रूपान्तर ही अनुवाद है। इस तरह अनुवाद का कार्य है—एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना। लेकिन यह "व्यक्त करना" बहुत सरल काम नहीं है। हर एक भाषा की अपनी विशेषताएं होती हैं, जो कि अन्य भाषा से कुछ या पूर्णतः भिन्न होती हैं। अनुवाद करते समय अनुवादक को यह ध्यान रखना होगा कि मूल भाषा के भाव को अनूदित भाषा में पूर्णतः उतारा गया हो। पूर्णतः भाव का मतलब है मूल भाषा की सामग्री व अनूदित भाषा की सामग्री पढ़ने से यह प्रतीत नहीं होना चाहिए कि यह अनूदत कृति है। कम-से-कम मूल भाषा व स्रोत भाषा में निकटता होना चाहिए। समानता की यह निकटता जितनी अधिक होती है अनुवाद उतना ही अच्छा और सफल होता है। उदाहरणार्थ लड़का गिरा, लड़का गिर पड़ा, लड़का गिर गया। गहराई से देखें तो इन तीनों वाक्यों के अर्थ में सूक्ष्म अंतर है। मान लें कि इसका अंग्रेजी में अनुवाद करना हो तो The boy fell या The boy fell down कहेंगे। यह केवल समानार्थक ही हैं। कहीं आइए, एक जगह आ जाइए, इसकी जगह तशरीफ लाइए, तीसरी जगह "तशरीफ ले आइए", कहा जाता है। इनमें समानता तो दिखाई दे रही है, लेकिन सूक्ष्मतः इनमें अंतर है। इसमें से केवल पहले वाक्यांश का अंग्रेजी में सटीक अनुवाद किया जा सकता है। कभी-कभी एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद के किए समान अभिव्यक्तियां नहीं मिलती है। कभी-कभी मूल भाषा से अनूदित भाषा में अनुवाद करते समय अनुवादक अपनी भाषा के मोह से यथावत लाने का प्रयास करता है।

उदा: The Man who fell from the tree died in the hospital.

बहुत सारे लोग इसका अनुवाद————

वह आदमी जो पेड़ से गिरा था, अस्पताल में मर गया"

लेकिन हमें इसे देखते ही मालूम हो जाता है कि इस वाक्य पर अंग्रेजी की छाया है। "पेड़ से गिरनेवाला आदमी अस्पाताल में मर गया था"।

अनुवाद की आवश्यकता

भारतीय संविधान द्वारा 18 भाषाएं स्वीकृत हैं। इन भाषाओं के अतिरिक्त कई बोलियां हैं। इन भाषाओं में निष्णात होना किसी भी मानव के लिए प्रायः असंभव है। परंतु आज के युग में इनको जाने बिना काम

नहीं चलेगा। इस असंभव को संभव बनाने में अनुवाद ही एक मूल मंत्र प्रतीत होता है।

अनुवाद की अनिवार्य उपयोगिता, हर युग, देश और जीवित समाज के लिए उसकी भावी प्रगति को समकालीन रखने के लिए सदा आवश्यक एवं महत्वपूर्ण मानी जाएगी।

विश्व साहित्य के चिरन्तन सार्वभौमिक साहित्य को, प्राचीन भाषाओं की शाश्वत गौरव कृतियों व वर्तमान अमूल्य रचनाओं को अनुवाद से ही जाना जा सकता है।

सामान्यतः अनुवाद चार वर्ग के पाठकों के लिए किया जाता है:

1. वह व्यक्ति जो मूल भाषा नहीं जानता और न आगे इसे सीखने का प्रयास करेगा।
2. वह व्यक्ति जो मूल की भाषा सीख रहा है और अनुवाद से सहायता लेना चाहता है।
3. वह व्यक्ति जो मूल भाषा जानता था किन्तु अब इसे भूल गया है।
4. वह व्यक्ति जो दोनों भाषाओं में दक्ष है।

निष्कर्षतः निम्नलिखित कारणों से अनुवाद की आवश्यकता है:

1. भावात्मक एकता
2. आपसी समन्वय
3. ज्ञान वृद्धि
4. अभिव्यक्ति में प्रसार
5. अन्य संस्कृतियों से परिचय
6. अन्य राष्ट्रों की जानकारी
7. सांस्कृतिक एकता
8. शोध कार्य
9. विधि/न्याय संबंधी गवेषणाएं
10. व्यापार-वृद्धि
11. परम्परा और संस्कृति की रक्षा

कार्यालयीन अनुवाद की भाषा व स्वरूप

कार्यालयीन अनुवाद की भाषा सरल, सुलभ एवं भावात्मक होनी चाहिए जो कि पाठक को पलक झपकते ही समझ में आए। भाषा संरचना में अनुवादक का पारंगत होना नितांत आवश्यक है। अंग्रेजी भाषा में लम्बे-लम्बे संश्लिष्ट और कर्मवाच्य वाक्य होते हैं, जब कि हिन्दी में छोटे-छोटे और कर्तृवाच्य होते हैं। हिन्दी में कर्ता, कर्म व क्रिया क्रम में वाक्य निर्माण होता है। अंग्रेजी में कर्ता, क्रिया व कर्म के अनुसार होता है। अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय अंग्रेजी के वाक्यों का हिन्दी भाषान्तरण छोटे-छोटे वाक्यों में हिन्दी की प्रकृति के अनुरूप करना चाहिए।

व्यावहारिक अनुवाद की समस्याएं

अनुवाद करते समय सामान्यतः निम्नलिखित स्थितियों में समस्याएं उत्पन्न होती हैं:—

1. अर्थ संबंधी
2. वाक्य संबंधी
3. रूप संबंधी
4. शब्द संबंधी

अर्थ संबंधी समस्याएं

1. **स्थानः** अनुवादक को स्थान के अनुसार अनुवाद करते समय परम्परा का पालन करना चाहिए। एक बार पाकिस्तान ने अमरीका से 80 हजार रेलवे स्लीपर खरीदे। अमरीकी रेलवे स्लीपर को टाई (Tie) कहते हैं, क्योंकि वह दोनों पटरियों को बांधे रहती है। पाकिस्तान ने बिना ध्यान दिए उस वार्ता को यथावत छाप दिया। इसे लोग समझ नहीं पाए।

अमरीका में चैक का अर्थ बिल होता है। बिल का अर्थ करेंसी नोट। अमरीकी प्रयोग में Fax को Cab, Petrol को Gasoth आर्थक वर्ष को Fisual Year, मोटर कार को Automobile, lift को एलिवेटर कहते हैं। Cinema को मूवी कहते हैं। इन शब्दों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद करते समय सावधानी से काम करना पड़ेगा।

2. **कालः** काल का ध्यान रखना भी अर्थ निर्धारण में सहायक होता है। भाषाओं के इतिहास में एक शब्द होता है तो कालांतर में उसकी विकृति ही पायी जाएगी।

जाग्रत— उजागर

देववाणी— आकाशवाणी

3. **संदर्भः** अर्थ निर्धारण में संदर्भ को प्रायः सब से महत्वपूर्ण कहा जाता है। संदर्भ से विहीन कर देने पर व्यंग्ययुक्त वाक्य व्यंग्य विहीन हो सकता है।

उदाहरणार्थः जैसे अंग्रेजी में बिछुडने के प्रसंग में so long तथा लम्बाई के लिए so long में अंतर है।

संस्कृत में सैंधव का अर्थ "नमक" व घोड़ा दोनों होते हैं।

4. **लिंग:** लिंग के आधार पर कई भाषाओ में अर्थ निर्धारण में सहायता मिलती है।

उदाहरणः संस्कृत में मित्र शब्द, लिंग के आधार पर "मित्र" शब्द के दो अर्थ हैंः सूर्य, दोस्त

लिंग के आधार पर मित्र शब्द यदि पुल्लिंग में प्रयोग हो तो सूर्य एवं नपुसंक लिंग में हो तो दोस्त कहा जाएगा।

5. **वचन:** कुछ भाषाओं में एक वचन में शब्द विशेष का अर्थ कुछ होता तथा बहुवचन में कुछ और।

उदाहरणः अंग्रेजी में Wood-woods, air-airs, water-waters, Iron-irons के अर्थों में फरख है।

हिन्दी में भी "ने" प्रयोग किए जाने वाले वाक्यों को सही ढंग से अनुवाद करना चाहिए।

उदाः मैंने उनके दर्शन किए।
मैंने आम खाए।

II वाक्य संबंधी समस्याएं

भाषा में अर्थ या भाव हमेशा वाक्य स्तर पर ही होते हैं। इसलिए अनुवाद भी वाक्य का ही होना चाहिए। इस संबंध में निम्नलिखित विषयों पर विचार किया जा सकता हैः—

1. बाह्य व आंतरिक संरचना

भाषाओं में सामान्यतः एक ही अर्थ होते हैं।

जैसे "राम जा रहा है" किन्तु कुछ वाक्य ऐसे भी होते हैं जिनके एकाधिक अर्थ होते हैं।

उदाहरणः राम गाएगा।
राम गानेवाला है।
राम गाने का काम करता है।

यहां पर दो अर्थ देनेवाले वाक्य हैं। एक हैः राम गाएगा जिसे राम गानेवाला है के रूप में कहा गया है और दूसरा है— "राम गाने का काम या व्यवसाय करता है"। इसे भी राम गानेवाला है के रूप में बताया गया है। आंतरिक संरचना में भेद के कारण ही ये दो अर्थ इसमें निहित हैं।

उदाः बाह्यः मुझे, तुम्हें दो रुपए देने हैं।

आंतरिकः 1. तुम मुझे दो रुपए दोगे।
2. मैं तुम्हें दो रुपए दूंगा।
3. तुम मेरे दो रुपए के कर्जदार हो।
4. मैं तुम्हारे दो रुपए का कर्जदार हूं।

2. **निकटतम अवयवः** वाक्य जिन विभिन्न पदों या खंडो से बनते हैं, उन्हें वाक्य के अवयव कहते हैं। इसलिए अनुवाद करते समय यह जानना जरुरी है कि किस अवयव का नजदीक अवयव कौन सा है।

उदाः राम का मित्र मोहन श्याम के घर है।

इनमें वाक्यों का आपसी संबंध जानना आवश्यक है।

जैसेः बैठो मत जाओ

इसे दो रूपों में लिया जा सकता है।

1. बैठो, मत जाओ। (sit, do not go)
2. बैठों मत, जाओ। (do not sit go)

उदाहरणः वह अपनी स्त्री के मुट्टी में हैं।

इसमें यदि अलग-अलग लेकर अनुवाद करें तो होगा।

He is under the thumb of his wife.

3. **सहप्रयोगः** किसी भी भाषा में अनुवाद करते समय वाक्यों के सह प्रयोग की जानकारी आवश्यक है। इसका मतलब है एक शब्द के साथ प्रचलित शब्द का ही प्रयोग करना।

उदाहरणः

1. बत्ती जलाओ।
   Burn the lamp (गलत)
   Light the lamp (सही)
2. उसने मैच में एक गोल किया।
   He Made a goal in the Match
3. डाक्टर ने मेरी नब्ज महसूस की (गलत)
   The Doctor felt My pulse
   डाक्टर ने मेरी नब्ज देखी।
4. बिस्तर बना दो (गलत)
   बिस्तर लगा दो।
   Make the bed

5. मैंने होटल के लिए टैक्सी की
I did taxi for the hotel (गलत)
I took a taxi for the hotel.

6. फूल तोड़ो
Break the flower (गलत)
Pluck the flower

7. वह खाना खा रहा है।
He is taking his Meal

लिंग वाक्यानुवाद में लिंग का भी महत्व होता है।

उदाहरणः She is a intelligent lady इसका अनुवाद हिन्दी में "वह बुद्धिमान महिला" है करना गलत है उसका सही अनुवाद "वह बुद्धिमति महिला है"

उदाहरण के लिए हिन्दी में जहाज, चांद, बसन्त, पतझड़ पुल्लिंग हैं। इसलिए अनुवाद में दोनों भाषाओं में लिंग निर्धारण की क्षमता होनी चाहिए।

5. वचन (Number) वचन के नियम के भी हर भाषा में अलग-अलग होते हैं। अंग्रेजी में Deer, Sheep, Coal आदि दोनों वचन में एक ही प्रयोग होता है।

Gandhi was a very good writer.
इसका हिन्दी अनुवाद (गांधी बड़े अच्छे लेखक थे)। इसी प्रकार वचन के लिए सर्वनाम, विशेषण, क्रिया में यह बात देखी जा सकती है।

Gandhi is very kind man
गांधीजी बुहत दयालु हैं।
वे आ रहे हैं। वैठक के अध्यक्ष चले गये
He is coming, Chairman of the Meeting has gone.
Father is coming.
पिताजी आ रहे हैं।

ऊपर के वाक्यों में कोई भी अनुवादक, दोनों भाषाओं के वचन परिवर्तन का ज्ञान होने पर, ही ठीक अनुवाद कर सकता है।

6. **कारक चिह्नः** भाषा की विधा के अनुसार अनुवादक को वाक्य में संदर्भानुसार कभी-कभी कारक चिह्नों को भी बदलना पडता है। जैसेः—

he is at the house, वह घर में हैं। यहां पर "at" के लिए पर होना चाहिए। लेकिन व्याकरणिक दृष्टि से "में" का प्रयोग ही सही है।

7. **पदक्रमः** हर भाषा में पदों का विशेष क्रम होता है। जैसेः अंग्रेजी में प्रमुखतः वाक्यों के पद क्रम में कर्ता-क्रिया-कर्म के रूप में होता है जब कि हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में पदक्रम कर्ता-कर्म-क्रिया के रूप में होता है। अतः अनुवादक इसके अनुसार ही अनुवाद करें।

8. **कालः** काल में भी प्रत्येक भाषा में असमानताएं होने के कारण अनुवादक को सावधानी बरतनी पड़ती है।

जैसेः he has taken का हिन्दी अनुवाद साधारणतया "उसने ले लिया" होना चाहिए। the birds sitting on the tree का हिन्दी अनुवाद होना चाहिए—'चिड़िया पेड़ पर बैठ रही हैं"। लेकिन व्यवहार्य यह ठीक नहीं है क्यों कि अपूर्ण वर्तमान को यह-पूर्ण वर्तमान में ही अनुवाद करना पडेगा 'चिड़िया पेड पर बैठी हैं"।

III. रूप परिवर्तनः-

अनुवाद में स्रोत भाषा के रूपों के स्थान पर लक्ष्य भाषा के अपेक्षित रूपों को समायोजित किया जाना है। दोनों भाषाओं की रूप संरचना से परिचित होना अनुवादक के लिए आवश्यक है। जैसे इसी के तहत "प्रभावशाली" नामक शब्द का बहुप्रचलन कम होने पर वहीं कालांतर में प्रभावी Infiltrator हेतु "घुसपैठिया"---filmage के लिए हिन्दी में" फिल्माना" शब्द गढ़ लिए गए हैं।

किसी भी भाषा के व्याकरणिक नियमों के साथ-साथ उनके अपवादों से भी परिचित होना जरूरी है। अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाएगा।

उदाहरणः हिन्दी में सभी धातुओं में आ,ई,ए,ई जोडकर भूतकालिक रूप बनाते हैं-----चला-----चली, चलें
पढ़ा------पढ़े, पढ़ी,
किन्तु कर, दें, ले, जा आदि अपवाद हैं।
कर----क्रिया, की, किए, की
दें---दिया, दी, दिए, दीं

इस प्रकार अनुवादक को ऐसी बातों की जानकारी होनी चाहिए। उसमें आवश्यकतानुसार कुछ नए समानार्थक शब्दों के गढ़ने का सामर्थ्य भी होना चाहिए।

4. **शब्द संबंधी समस्याएं:** शब्द विज्ञान भाषा विज्ञान की वह शाखा है जिसमें शब्दों का अध्ययन - विश्लेषण होता है। "शब्द" में भाषा की वे सारी मूल ईकाइयां आती हैं जो सार्थक और स्वतंत्र होती हैं। अनुवाद करते समय आवश्यकतानुसार हमें उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास आदि के द्वारा नए शब्दों की रचना करनी पड़ती है।

अनुवादक को शब्दों का चयन करते समय ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और वैज्ञानिक परिवेशों पर विचार कर उनका चयन करना पड़ता

है। जैसेः

कोई पुराने उपन्यास व नाटक का हिन्दी अनुवाद वर्तमान काल में करता है तो उसमें आधुनिकता के संदर्भ के अनुसार कई अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करना पड़ेगा।

उसी प्रकार अनुवादक अर्थ के आधार पर भी शब्दों का चयन करता है। संदर्भानुसार एक ही अर्थ के लिए अनेक रूपों में शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है।

कार्यालयीन अनुवाद का विश्लेषण

कार्यालयीन अनुवाद को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। पहली, स्थायी महत्व की सामग्री जैसे--- नियमावलियां, रजिस्टर, फार्म, कार्यविधि से संबंधित संहिताएं, मैनुअल आदि। दूसरी कोटि में वह सामग्री आती हैं जिसका स्थायी महत्व नहीं होता जैसेः संकल्प, सामान्य आदेश, अधिसूचनाएं, प्रेस विज्ञप्तियां प्रशासनिक रिपोर्ट आदि।

स्थायी कोटि की सामग्री को भी दो भागों में बांटा जा सकता है- एक सांविधिक जिसमें अधिनियम, अध्यादेश, बिल तथा सांविधिक नियमावलियों तथा उनके अंतर्गत बनाए गए फार्म शामिल हैं। दूसरा हैः अनुज्ञप्ति, करार, निविदा-सूचना आदि जो कि गैर सांविधिक हैं।

सरकारी साहित्य तथ्यात्मक होता है। इस साहित्य में कल्पना की उड़ान के अवसर नहीं मिलते। कार्यालयीन अनुवाद में प्रमुखतः पत्र, अर्ध-सरकारी पत्र, टिप्पणी आदि का समावेश होता है। इन के कुछ नमूनों पर उनके अनुवाद सहित नीचे चर्चा की जा रही हैः-

उदाहरणः

With reference to your letter No. dated _____ on the above subject. I am to inform you that now we are not interested to subscribe to the "Supreme court cases" from December, 95 i.e. the expiry period of our subscription to abstracts.

अनुवादः _____ दिनांक _____ उपर्युक्त संदर्भित विषय में मुझे आपको यह सूचित करना है कि दिसम्बर, 1995 से हम उक्त पत्रिका के अंशदान नवीकरण के इच्छुक नहीं है। हमारी अंशदान राशि की अवधि भी इस समय से समाप्त हो जाती है।

इसमें अनुवाद में अनुवाद के सामान्य ज्ञान का उपयोग न करते हुए पूर्णतः शाब्दिक अनुवाद किया है। इसका सरल और सटीक अनुवाद यों हो सकता है।

आपके उपर्युक्त संदर्भित पत्र सं॰ _____ दिनां _____ के विषय में यह सूचित किया जाता है कि ह अपने वार्षिक शुल्क की समाप्ति तिथि दिसम्बर, 1995 से ग्राहक बने रह के इच्छुक नहीं हैं।

उदाहरण 2:

"Post graduate Degree in physical organic Chemistr or a Degree in oil fats or paints and varnish or polymers' techanology or equivalents from recognise university / institute."

अनुवादः

"फिजिकल / आरगेनिक केमिस्ट्री में स्नातकोत्तर अथवा तेल चिकनाई अथवा पेंट्स और वारनिश में डिग्री अथवा मान्यता प्रा महाविद्यालय / संस्थान से पालिमर्स टेकनालजी अथवा समकक्ष"

इसमें आधी अंग्रेजी और आधी हिन्दी है। जिन अंग्रेजी शब्दों को इस प्रयुक्त किया गया है, उनके हिन्दी पर्याय सरल और प्रचलित है" यूनिवर्सिटी का पर्याय "महा विद्यालय" कर दिया गया है। उपर्यु अनुवाद को देखने से यह स्पष्ट होता है कि अनुवादक ने बहुत लापरवा से यह कार्य किया है, क्यों कि इनके शब्दों में आधी अंग्रेजी और आ हिन्दी विद्यामान है। अंग्रेजी शब्दों को यहां रखने का कोई औचित्य य प्रतीत नहीं होता है, क्यों कि जिन अंग्रजी शब्दों का यहां प्रयोग किया ग है उनके पर्याय सार्थक, बोधगम्य और प्रचलित हो चुके हैं। इतना ही न इसमें एक अक्षम्य विसंगति भी है, वह यह कि अनुवादक ने "यूनिवर्सिटी का पर्याय - महा विद्यालय कर दिया है जब कि - "यूनिवर्सिटी" पर्याय "विश्वविद्यालय" हैं।

अतः इसका सही अनुवाद इस प्रकार होना चाहिएः— "किसी मान्य प्राप्त विश्वविद्यालय / संस्थान से भौतिक / कार्बनिक रसायन में स्नातको उपाधि अथवा तेल / चिकनाई अथवा पेंट और वार्निश बहुलक तकनी में स्नातक अथवा समकक्ष उपाधि"

उदाहरण 3:

Whereas under article 343 of the Constitutio Hindi shall be the official Language of the Union a under article 351 there of it is the duty of the Uni to promote and the use spread of the Hindi La guage., serve as a medium of expression for all t elements of the composite culture of India,

अनुवादः

जब कि संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्द रहेगी उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिन्दी भाषा की प्रसार-वृद्धि कर

और उसका विकास करना ताकि भारत की सामाजिक संस्कृति के सब तत्वों की आभिव्यक्ति का माध्यम हो सके, संघ का कर्तव्य है।

_____वस्तुतः इस प्रकार के अनुवाद विधि संबंधी अनुवादों की कोटि में आते हैं क्यों कि इनकी भाषा बहुत संयत और नपी - तुली होनी है। यही बात इनके अनुवादों में भी आनी चाहिए।

उदाहरणः 4.

In supersession of this Deptt. office order No. 1677 issued under this Deptt. No. _____ dated _____ Sri X, Dy. Secretary (Admn.) will henceforth be the O & M officer of this Deptt. in place of Shri "Y"

अनुवाद :

दिनांक _____ का संत _____ के अधीन जारी किए गए कार्यालय आदेश सं॰ 16/77 का अतिक्रमण में श्री "क" उप सचिव (प्र) को श्री "ख" के स्थान पर इस विभाग का संगठन और पद्धति अधिकारी होंगे।"

यहां शब्दशः अनुवाद किया गया है, जो कि सर्वदा उपर्युक्त नहीं है। इसका अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता हैः-

"इस विभाग द्वारा दिनांक : _____ को सं॰ _____ के जरिए जारी कार्यालय आदेश सं॰ 16/77 का अधिक्रमण करते हुए श्री "क" उप सचिव (प्र) को श्री "ख" के स्थान पर इस विभाग का संगठन और पद्धति अधिकारी नियुक्त किया जाता है।

उदाहरण 5:

Please send your Quotation by 15-30 hours. on due date for the following stores subject to the terms and conditions mentioned overleaf:

कृपया निम्नलिखित सामान के लिए अगले पृष्ठ पर उल्लिखित शर्तों के अधीन अपनी दर नियत दिनांक को 15.30 बजे तक प्रेषित करें। _____ यह अनुवाद आदर्शतम हैं।

उदाहरणः 6 Applications are invited from the indian citizens for the under mentioned posts which are temporary but likely to be continued so as to reach the G.M. latest by _____ Applicants should furnish full particulars such as name, postal address, permanent address, date of birth, educational qualifications and experience.

अनुवादः निम्नलिखित पदों के लिए जो अस्थायी हैं, लेकिन उनके चलते रहने की संभावना हैं, भारतीय नागरिकों से आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते हैं ताकि वे जनरल मैनेजर के पास अधिक से अधिक _____ तक पहुंच जाएं। आवेदकों को पूरा विवरण जैसे नाम, डाक पता, जन्म तिथि, शैक्षिक योग्यता और अनुभव देना होगा।

_____ यद्यपि अनुवादक की भाषा सरल है। किन्तु वाक्य बड़-बड़े हैं और उन पर अंग्रेजी की छाप हैं। प्रथम दो पंक्तियां इस प्रकार अनूदित की जा सकती हैं:

"निम्नलिखित पदों के लिए भारतीय नागरिकों से आवदेन पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। उक्त पद अस्थायी हैं किन्तु चलते रहने की, संभावना हैं। आवेदन पत्र महाप्रबंधक के यहां दिनांक _____ तक या उससे पहले पहुंच जाने चाहिए।

उदाहरणः 7

Ref. your Quotation dated _____ against our enquiry No. _____ Dated (.) Whether your rates are still valid (.) Please confirm telegraphically (.)

अनुवादः

हमारी पूछताछ सं॰ ————————दिनांक _____ के संदर्भ में आपके कोटेशन के मूल्य क्या अभी तक वैध हैं (.) तार से पुष्टि कीजिए।

----उपर्युक्त अनुवाद की भाषा सरल हैं। लेकिन वाक्य निमार्ण से पूरा अर्थ नहीं निकलता है, इसका अनुवाद इस प्रकार कर सकते हैः-

हमारी पूछताछ सं॰_____ दिनांक _____ पर अपनी निविदा सं॰ _____ : _____ देखें (.) क्या आपकी दरें अब भी वैध है (.) तार द्वारा सूचना दें (.)

उदाहरणः 3:

It is unfortunate that inspite of our clarification that the matter regarding applicability of group incentive scheme to the non-essential indirect classified staff is actively under consideration of the Gvoernment, the newly registered office staff association has served fourteen days strike notice on _____ without following the position of code of discipline.

अनुवादकः

यह स्पष्ट किया जा चुका है कि अप्रत्यक्ष वर्गीकृत कर्मचारियों पर भी प्रोत्साहन योजना लागू करने के प्रकरण पर सरकार द्वारा सक्रियता से विचार

किया जा रहा है। यह दुर्भाग्यपूर्ण हैं कि हमारे इस स्पष्टीकरण के बावजूद भी हाल ही में पंजीकृत कार्यालय कर्मचारी संघ ने "अनुशासन संहिता" के प्रावधानों को अनदेखा करते हुए दिनांकः _____ को 14 दिन की हड़ताल की सूचना दी है।

————मूल में पूरा पाठ केवल एक ही वाक्य में हैं। लेकिन अनुवादक ने थोडी स्वतंत्रता लेकर अनुवाद को प्रभावपूर्ण और प्रवाहमय बना दिया है।

उदाहरण 9:

The undersigned stcares the concern of the residents of the campus on the increasing number of thefts/burglary, occurring in the colony.

As a first step, the following measures are suggested to control the movement of the outsiders in the residential area.

अनुवादः

अधोहस्ताक्षरी परिसर में बढ़ती हुई चोरियों की घटनाओं के प्रति कालोनी वासियों के साथ-साथ स्वयं चिंतित हैं।

पहले सुरक्षात्मक उपाय के रूप में निवास क्षेत्र में बाहरी व्यक्तियों के आवा गमन को रोकने के लिए निम्नलिखित सुझाव हैः-

————अनुवाद की भाषा में कहीं-कहीं क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग किया गया हैं। फिर भी अनुवाद सटीक एवं सही है।

इस प्रकार हमारा उद्देश्य यहां केवल हिन्दी के व्यावहारिक अनुवाद तक ही समिति है। यह स्पष्ट हो चुका है कि सरकारी अनुवाद की एक अलग विधा है और एक नियत सीमा भी।

सरकारी अनुवादक के पास जब कोई पत्रादि अनुवाद के लिए आता है तब उसके सामने सब से बड़ी समास्या यह होती है कि यह अनुवाद किस प्रकार किया जाए। मतलब यह है कि कुछ लोग शाब्दिक अनुवाद एवं कुछ लोग भावानुवाद करना पसंद करते हैं। इसमें भी और एक कठिनाई यह है कुछ शुद्ध, तत्सम भाषा के कट्टर पक्षपाती तो कुछ मिश्रित भाषा के पक्षधर होते हैं।

अधिकांश कार्यालयों में अनुवादकों" के पास अनुवाद के लिए समय का अभाव रहता है। यह अभाव केवल "अनुवाद" के संदर्भ में ही रहता है _____ कारण अंग्रजी में मूल रूप से बनने वाले मसौदे को सहायक के स्तर से विभागाध्यक्ष तक देखते हैं एवं सुधारते हैं। इस प्रक्रिया में 2-3 दिन लग जाते हैं। लेकिन मसौदे के अनुमोदन के तुरंत बाद "अति तत्काल" की ध्वजा फहराते हुए उन्हें अनुवादक के यहां केवल 2-3 घंटे का समय देकर भेज दिया जाता है। अधिकांश कार्यालयों में अनुवादक स्वच्छकार, रसोइया, ग्राहक आदि का काम अेकला करता है, तब उस बेचारे के अनुवाद कार्य का पुनरीक्षण कौन करें।

सरकारी साहित्य को अनूदित करने वाले अनुवादकों के संदर्भ में एक और व्यावहारिक कठिनाई है---- उनकी विषयगत योग्यता। प्रशासन संबंधी अनुवाद कार्य के लिए हिन्दी का सामान्य ज्ञान पर्याप्त है। लेकिन वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य के अनुवाद के लिए उक्त ज्ञान की भी जरूरत होती है, अन्यथा वह न्याय नहीं कर सकता।

इस प्रकार अनुवाद न तो मूल की प्रतिच्छया और न रूपान्तर, बल्कि वह तो रचनाकार की वह कल्पना है जो इस बात का बोध कराती है कि यदि मूल लेखक अनुवादक की भषा को जानता तो वह अपनी कृति इसी रूप में प्रस्तुत करता।

अनुवाद वास्तव में ऐसी आवश्यकता है जहां से समस्त विश्व की यात्रा घर बैठे ही सम्पन्न हो सकती है। " यात्रा विश्वम् भवति एक नीडम्' ।

अनुवाद के सहारे ही भिन्न भाषा-भाषी एक दूसरे के कंधे-से-कंधे मिलाकर एक दूसरे के सुख-दुख को अपनाकर तादात्म्य स्थापित कर विश्व को आगे बढ़ा रहे हैं। सारी विडम्बनाओं के बावजूद अनुवाद आज के युग की अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है। अनुवाद तो वह दीप है जो स्वयं जलकर दूसरों के लिए प्रकाश प्रदान करता है।

तकनीकी शिक्षा में हिन्दी का प्रयोग

—डा॰ नरेश कुमार

तकनीकी शिक्षा चाहे इंजीनियरींग की हो या चिकित्साविज्ञान से संबंधित हो, उसमें हिन्दी का प्रयोग नहीं हो पा रहा है। उत्तर एवं मध्य भारत के अधिकांश विद्यालयों में इण्टरमीडिएट/सीनियर सेकेण्डरी के स्तर पर शिक्षण का माध्यम हिन्दी है और हिन्दी भाषा छात्रों के विचार-विनिमय एवं अध्ययन की भाषा होती है, किन्तु तकनीकी संस्थानों में अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए छात्र को विवश होना पड़ता है। अंग्रेजी भाषा के अपूर्ण ज्ञान एवं अभ्यास के न होने के कारण छात्रों की प्रतिभा का विकास रूक जाता है और अपूर्ण स्थिति में रहता है। जब छात्र प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की शिक्षा हिन्दी भाषा के माध्यम से प्राप्त करता है और स्नातक स्तर की शिक्षा अंग्रेजी में प्राप्त करनी होती है तो नये माहोल में समायोजित करने में उसे निश्चय ही कठिनाई होनी है।

यद्यपि वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने हिन्दी में तकनीकी शब्दावली के अभाव को दूर करने का प्रयास किया है, किन्तु उसका प्रयोग किया जाना एक व्यावहारिक समस्या बनी हुई है। हिन्दी में तकनीकी व इंजीनियरींग शिक्षा की मानक पुस्तकों का अभाव बना हुआ है। विज्ञान की जिन पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद हुआ भी है, उनका प्रयोग अध्यापन-अध्ययन में नहीं होता। प्राध्यापक अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रशिक्षित होते हैं और हिन्दी की तकनीकी शब्दावली के प्रयोग से वे अधिकतर परिचित नहीं होते और न ही हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग कर पाते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि पारिभाषिक तकनीकी शब्दावली के संग्रह निःशुल्क तकनीकी संस्थानों के पुस्तकालयों में भेजे जाएं, विश्वविद्यालयों में कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए, जिनमें पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग की समस्या पर विचार किया जाए। हिन्दी में मौलिक तकनीकी साहित्य लिखने के लिए प्रोत्साहन दिया जाए। यदि हिन्दी भाषा में शिक्षण होगा, तकनीकी मानक ग्रंथों की रचना होगी, महत्वपूर्ण तकनीको ग्रंथों के सरल अनुवाद को प्रोत्साहित किया जाएगा, शब्दावली में आवश्यकतानुसार संशोधन, परिवर्द्धन लगातार होता रहेगा और उसका प्रयोग एवं अभ्यास निरंतर होगा, तभी पारिभाषिक शब्दावली की व्यावहारिक उपयोगिता सिद्ध होगी और शब्दावली की कठिनता एवं अप्रचलित होने की समस्या स्वतः हल हो सकेगी। साथ ही इंजीनियरींग एवं तकनीकी क्षेत्रों में प्रयुक्त किये जाने वाले कंप्यूटर में देवनागरी लिपि के प्रयोग को बढ़ाना आवश्यक है।

तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी को शिक्षण का माध्यम बनाने के लिए शिक्षकों को मानसिक रूप से तैयार करने की आवश्यकता बनी हुई है। तकनीकी क्षेत्र में पुस्तकों का हिन्दी में सृजन होता रहे और अनूदित ग्रंथ भी तैयार कर लिये जाएं, किंतु जब तक हिन्दी की शब्दावली का प्रयोग अध्यापक शिक्षण में नहीं करेंगे तब तक तकनीकी शिक्षण में हिन्दी माध्यम को प्रोत्साहन नहीं मिल सकेगा।

वैज्ञानिक-तकनीकी शब्दावली के हिन्दी रूपों के प्रचलन में व्यावहारिक बाधा उसकी क्लिष्टता के कारण आती है। उदाहरणार्थ, चलतुल्यावयता, वैदयुतौप्परंजन, वाषपरिकोष्ठित आदि शब्द सरलता पूर्वक बोधगम्य नहीं हैं। अतः व्यावहारिकता के पक्ष की उपेक्षा न की जाए और अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली से लिप्यंतरित शब्दों को ज्यों का त्यों अपना लिया जाना चाहिए। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित वृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रहों की शब्दावली का विश्लेषण किया जाना अपेक्षित है। नई

संकल्पनाओं के लिए जो मानक रूप निर्धारित किए गए थे, वे क्यों प्रचलित नहीं हो पाए, उनमें कहां संशोधन की आवश्यकता है, समय-समय पर इन सब समस्याओं पर विचार करने की आवश्यकता है। हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली को निरंतर विकसित करना होगा, नए-नए शब्दों को आयातित करना होगा और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयोग में आने वाले वैज्ञानिक शब्दों को लिप्यंतरित रूप में स्वीकार करना होगा।

हिन्दी-शिक्षण

आजकल माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर पर जहां छात्र शुद्ध और स्वच्छ रूप से हिन्दी के शब्द लिख नहीं सकते, वहां साथ ही उनके उच्चारण संबंधी दोष भी बने रहते है और न ही उनमें अभिव्यक्त करने की पर्याप्त क्षमता होती है। वे अनेक वर्तनी (spelling) संबंधी त्रुटियां करते हैं। कुछ छात्र हिन्दी के अध्ययन को गंभीरतापूर्वक इसलिए भी नहीं लेते क्योंकि यह उनकी मातृभाषा है। आज छात्रों को इस योग्य बनाना है कि वे साहित्यिक भाषा में शुद्ध रूप से अपने भावों को प्रकट कर सकें। स्वाध्याय के लिए प्रेरित करते हुए उनमें साहित्यिक रूचि उत्पन्न करने की आवश्यकता है, वहां काव्य के सौन्दर्य-तत्वों को पूर्ण एकाग्रता से रसास्वादन कराना है। उन्हें वाचन करने, वाद-विवाद करने में प्रवीण बनाने के अतिरिक्त उनके शब्दकोश में भी वृद्धि करना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। अंत्याक्षरी प्रतियोगिताओं के अंतर्गत छात्रों को देश-भक्ति की कविताएं कंठस्थ करने को कहा जाए। हिन्दी-भाषा के प्रश्नपत्र में जब छात्रों से किसी लेखक की भाषा-शैली के संबंध में टिप्पणी करने के लिए कहा जाता है तो, वे समान्यतया लिखते हैं कि 'अमुक लेखक की भाषा बहत अच्छी, सुंदर और मुहावरेदार है, भाषा में अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है।' इस प्रकार की टिप्पणी अनिश्चित ज्ञान का बोध कराती है। कहने का आशय यह है कि उदाहरण सहित विषय का प्रतिपादन करने की आवश्यकता है। तत्सम, तद्भव एवं देशज शब्दों का उदाहरण देना होगा, प्रयुक्त मुहावरों, कहावतों को प्रमाण सहित उद्धृत करना होगा। शैली के अंतर्गत प्रयुक्त वाक्यों को उद्धृत कर उदाहरण सहित विषय का प्रतिपादन करने के उपरांत ही उन्हें अच्छे अंक प्राप्त करने की आशा करनी चाहिए।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर हिन्दी (केन्द्रित) का पाठ्यक्रम सामान्यतया वाणिज्य और विज्ञान के छात्रों द्वारा अध्ययन किया जाता है। अतः इसके अध्यापन में भाव-संप्रेषण को महत्व दिया जाना चाहिए और बोलचाल की भाषा में विचारों को लिखने का अभ्यास कराया जाना अपेक्षित है। इसके पाठ्यक्रम में भी सुधार होना अपेक्षित है। लेखकों के साहित्यिक परिचय, विशिष्ट भाषा-प्रयोग, काव्य-सौन्दर्य, शब्द-सौन्दर्य, अलंकार-सौन्दर्य जैसे प्रश्नों के स्थान पर अपठित गद्यांश और पद्यांश को रखा जाना चाहिए। छात्रों को व्यावहारिक हिन्दी का ज्ञान कराया जाए। उदाहरणार्थ, भावों के संक्षिप्तीकरण, एवं भाव-वृद्धिकरण से संबंधित प्रश्नों को जोडा जा सकता है, जिसका ज्ञान व्यावहारिक जीवन में लाभ उठा सकें। निबंधों के अंतर्गत जीवन के अनुभवों से संबंधित विषय होने चाहिए और निबंध के अंतर्गत प्रश्न में कुछ संकेत-बिन्दु दिए जा सकते हैं, जिनकी सहायता से छात्र अपने विचार प्रकट कर सकें।

जे-235, पटेलनगर प्रथम गाजियाबाद-201001

☆☆☆

(नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने जर्मनी में "फ्राइज़ इण्डीज़ लिज़ों' नाम से 'आज़ाद हिंद संघ' का संगठन करके आज़ाद हिंद सरकार की घोषणा की थी, उन्हीं दिनों लिखा गया इन्कलाबी गीत)

हम हिन्द के बन्दे हैं कुछ करके दिखा देंगे।
जुलमत का जो परदा है, पलभर में उठा देंगे।।
गर जान भी जाय तो, देने से नहीं डरते।
हम भारत के लिए, सर अपना कटा देंगे।।
जब सामने आओगे, तब होगा पता ए इंग्लिश।
हम शेर हैं हिंद वाले, छक्के ही छुड़ा देंगे।।
शेरे हिन्द बनो यारो, कुछ करके दिखा डालें।
फिर अपने तिरंगे को, देहली पर लहरा देंगे।।

(" लोकशक्ति पुरुष नेता जी " पुस्तक से साभार)

विज्ञान एवं तकनीकी विषयों पर हिन्दी में मूल लेखन

—डॉ॰ अशोक दत्ता

मानव अस्तिव, मानव-जीवन एवं मानव सभ्यता को उन्नत बनाने में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका यों तो प्राचीन समय से रही है परन्तु आधुनिक युग में यह हमारे दैनिक जीवन का एक अनिवार्य पहलू बन गई है। आज व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विकास के सन्दर्भ में इसकी भूमिका कितनी अहम है, इससे हम सब भली-भांति परिचित हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जैसे महत्वपूर्ण विषय की एक सरल व लोकप्रिय भाषा होनी चाहिए जो मुख्यतः उस परिवेश से जुड़े आम लोगों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो जहां इस विषय-वस्तु का पठन-पाठन, लेखन-प्रलेखन व प्रयोग किया जाता है। एक लोकप्रिय, सरल व जनसम्पर्क भाषा का प्रयोग एवं प्रचलन कर निश्चय ही हम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की पहुंच आम लोगों तक ले जा सकेंगे और असंख्य युवा वैज्ञानिकों व अभियंताओं को स्वअभिव्यक्ति का माध्यम देकर विकास व शोध कार्य की मुख्यधारा से जोड़ सकेंगे।

यह तो निर्विवाद रूप से सत्य है कि स्वभाषा किसी विषय-वस्तु को पूर्णरूप से समझने व अभिव्यक्त करने का सर्वोत्तम माध्यम है तथापि किसी ऐसे राष्ट्र में जहां अनेक भाषाएं क्षेत्रीय व प्रांतीय स्तर पर लोकप्रिय हों, एक आम स्वभाषा का चयन, प्रयोग एवं प्रचलन अपने आप में एक जटिल कार्य है। यह एक सौभाग्य की बात है कि हमारी सरकार ने जनसंख्या, समृद्धता, सरलता व लोकप्रियता के आधार पर हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया। एक सरल व लोकप्रिय जनसम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी आज भी भारत के अधिकांश राज्यों में बोली व समझी जाती है, परन्तु शोध संस्थानों, उच्च शिक्षा संस्थानों, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में इसका प्रयोग व प्रचलन आशानुरूप नहीं हो पाया है। विगत कुछ वर्षों से विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा हेतु हिन्दी व अन्य प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग व प्रचलन बढ़ा है, जिसमें विशेष रूप से कुछ राष्ट्रीय शिक्षा एवं इससे जुड़े अनुसंधान संस्थानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनके प्रयत्न से हिन्दी भाषा में विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा की अनेक पुस्तकें उपलब्ध हो रही हैं। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय लोक सेवा आयोग तथा प्रान्तीय लोक सेवा आयोगों ने भी हिन्दी व अन्य प्रादेशिक भाषाओं को विभिन्न राष्ट्रीय व प्रान्तीय स्तरों पर आयोजित प्रशासनिक व तकनीकी सेवा परीक्षाओं का माध्यम स्वीकार कर इस दिशा में एक ठोस कदम उठाया है। इन प्रयासों को व्यापक व उदार बनाने की आवश्यकता है, तभी हिन्दी व अन्य प्रादेशिक भाषाओं को बढ़ावा मिलेगा।

यह सत्य है कि अंग्रेजी भाषा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में प्रयुक्त एक अन्तर्राष्ट्रीय माध्यम है। लगभग 50% वैज्ञानिक पत्र-पत्रिकाएं इसी भाषा में छपती हैं, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि जिन देशों में अंग्रेजी पढ़ी, लिखी व बोली नहीं जाती वहां विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का समुचित विकास नहीं हुआ है। उदाहरण के तौर पर जर्मनी, फ्रांस, रूस तथा जापान आदि ऐसे विकसित राष्ट्र हैं जिन्होंने अपनी भाषाओं को ही विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रचार-प्रसार व अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। इन देशों के वैज्ञानिक व अभियंता अपने मूल लेख स्वभाषाओं में ही लिखते हैं। ये इतनी प्रभावशाली भाषा में रचित होते हैं कि उन्हे अंग्रेजी में अनुवाद करके छापा जाता है। निष्कर्ष यह है कि ये भाषाएं (जापानी, फ्रेंच, रूसी एवं जर्मन) इतनी सशक्त हैं कि वे विज्ञान व तकनीकी लेखों के लिए किसी और विदेशी भाषा व अंग्रेजी का मुंह नहीं ताकतीं। यदि हिन्दी को भी उन जैसा ही विज्ञान तथा तकनीकी लेखन का सशक्त माध्यम बनाना है तो हमें हिन्दी को तकनीकी रूप से समृद्ध करना होगा। यह तभी संभव है जब

हम हिन्दी को सरल तकनीकी शब्दावली से समृद्ध करें ताकि तत्संबंधित लोग बिना किसी मानसिक दबाव के इसका प्रयोग तकनीकी मूल लेखन में खुलकर कर सकें। इसके साथ-साथ यह अत्यन्त आवश्यक है कि उनके मूल लेखन को छापने का माध्यम भी सरलता से उपलब्ध हो ताकि अधिक से अधिक वैज्ञानिक इन पुस्तकों को सस्ती दर पर खरीद कर पढ़ सकें। मैं यह समझता हूं कि इसकी पहल सरकार को ही करनी होगी और विभिन्न विज्ञान तथा तकनीकी विषयों पर वैज्ञानिक पत्रिकाएं शुरू करनी होंगी। साथ-साथ एक प्रणाली भी स्थापित करनी होगी जो इन वैज्ञानिक पत्रिकाओं को विदेशों में स्थित उच्च विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों को भेजे। इससे वैज्ञानिकों को यह संतोष होगा कि उनका कार्य एक बड़े वैज्ञानिक समुदाय तक पहुंच रहा है और हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन व विवरण को बढ़ावा मिलेगा। परन्तु यह तभी संभव हो सकेगा जब वैज्ञानिक व तकनीकी विशेषज्ञ यह दृढ़ संकल्प व निश्चय कर लें कि उन्हें यथासंभव हिन्दी को ही अपनाना है। इस दिशा में हमने कुछ उन्नति तो की है परन्तु और काफी आगे बढ़ना है।

मूल लेखन के अतिरिक्त आम जनता तक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को ले जाने के लिए यह आवश्यक है कि ऐसे लेख लिखे जाएं जिनका सीधा सम्बन्ध मानव अस्तित्व व मानव जीवन से हो। आज आर्थिक विकास एवं अन्तर्राष्ट्रीय औद्योगिक प्रतिस्पर्धा में शामिल भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र के साथ-साथ एक औद्योगिक राष्ट्र बनता जा रहा है। अतएव विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ औद्योगीकरण, शहरीकरण, जनसंख्या विस्फोट एवं वाहनों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक वनक्षय, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण तथा पेड़-पौधों व जीव-जन्तुओं की असंख्य जाति-प्रजातियों का उन्मूलन जैसी अनेक भयंकर समस्याएं पैदा हुई हैं। इनसे हमारे पूरे भारतवर्ष का पर्यावरण दिन-प्रति-दिन प्रदूषित होता जा रहा है। उदाहरण के तौर पर, जो दिल्ली कभी हरी-भरी व स्वच्छ थी आज विश्व की अति प्रदूषित राजधानियों की श्रेणी में चौथे नम्बर पर आंकी जा रही है। एक अध्ययन के अनुसार आज लगभग 1300 मीट्रिक टन प्रदूषक (Pollutants) केवल वाहनों द्वारा वायुमंडल में छोड़ा जा रहा है। अतः जनता को इस भयावह स्थिति से अवगत कराने व सावधान करने की आवश्यकता है, ताकि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार हो कि पर्यावरण का संतुलन बना रहे तथा मानव अस्तित्व को कोई खतरा न हो। इसके लिए हमें आम जनता के महत्व के विषय व पर्यावरण सुरक्षा हेतु प्रचार एवं जागरण कार्यक्रमों को हिन्दी व अन्य प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से जनता तक पहुंचाना होगा।

इस दिशा में शुभारंभ काफी समय से हो चुका है और भारत सरकार ने हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए अलग से राजभाषा विभाग व निदेशालय खोल रखे हैं, जो हिन्दी में विज्ञान एवं तकनीकी विषयों पर मूल लेखन, मुद्रण एवं प्रकाशन को लगातार बढ़ावा दे रहे हैं। विज्ञान को हिन्दी माध्यम से लोकप्रिय बनाने हेतु अनेक पुरस्कार योजनाएं भी चल रही हैं जिनके अच्छे परिणाम निकल रहे हैं। परन्तु मेरा विचार है कि इस कार्यक्रम को द्रुतगामी व व्यापक बनाने हेतु गैर सरकारी संस्थानों, प्रबुद्ध वर्गों, प्रख्यात् शिक्षाविदों, एवं वैज्ञानिकों को भी भागीदार बनाना चाहिए जिससे यह कार्यक्रम और भी तेजी से बढ़ व फैल सकेगा।

मैं पिछले तीन दशकों से रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन में चल रही अनेक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अनेक शोधकार्यों में सक्रिय रूप से जुड़ा रहा हूं। अपने इस कार्यकाल के दौरान मुझे भारत के विभिन्न प्रांतों में स्थित रक्षा विज्ञान प्रयोगशालाओं में कार्यरत वैज्ञानिकों व तकनीकी विशेषज्ञों के साथ गहन विचार-विमर्श करने का अवसर मिला। ये सभी वैज्ञानिक एवं तकनीकी विशेषज्ञ अपने कार्य में पूरी तरह निहित एवं राष्ट्र को रक्षा के क्षेत्र में स्वावलम्बी बनाने हेतु एकरत लगे हैं। हमारी रक्षा प्रणाली में वैमानिकी, प्रक्षेपकी, टैंक, पनडुब्बी आदि की अहम भूमिका है। इनका विकास एवं निर्माण राष्ट्र को रक्षा के क्षेत्र में स्वावलम्बी तथा सुदृढ़ बनाता है। बमवर्षक विमानों, टैंकों, प्रक्षेपास्त्रों, पनडुब्बियों आदि सामरिक महत्व के सामग्री के विकास से निर्माण तक की प्रक्रिया अत्यन्त जटिल होती है। ये आयुध अनेकानेक प्रौद्योगिकी के सम्मिश्रण होते हैं जो एक स्थान पर उपलब्ध नहीं हो सकते हैं। लिहाजा इनके उप प्रणालियों (सब सिस्टम) का विकास राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, सरकारी, अर्ध सरकारी, एवं निजी क्षेत्रों के वैज्ञानिक संस्थानों में किया जाता है। इन विभिन्न संकायों में सामंजस्य और तालमेल की बड़ी आवश्यकता होती है। आज इस तरह के बहुमुखीय विकास में अंग्रेजी भाषा का

प्रयोग हो रहा है, जबकि तकनीशियन एवं दूसरे कार्मिक का काफी समुदाय अंग्रेजी भाषा को भली भांति समझ भी नहीं पाता है। यद्यपि विभिन्न स्तरों पर तकनीशियन एवं वैज्ञानिक आदेश देने व आदेश ग्रहण करने व वार्तालाप हेतु हिन्दी व अन्य प्रान्तीय भाषाओं का प्रयोग करते हैं, परन्तु प्रस्तुतीकरण अंग्रेजी में ही होता है। अधिकांश लोग शायद लेखन व प्रलेखन हिन्दी भाषा में इसलिए नहीं करते क्योंकि उन्हें हिन्दी में लिखने की आदत नहीं है। अधिकतर प्रसंग अंग्रेजी से प्रारंभ होते हैं अथवा उनके पास सही तकनीकी शब्द आसानी से उपलब्ध नहीं होते। इन्हीं कारणों से प्रायः लोग हिन्दी व अन्य भाषा में कार्य करने से हिचकिचाते हैं। मेरे विचार से हिन्दी या अन्य स्वभाषा में वैज्ञानिक व तकनीकी मूल लेखन का प्रारूप ऐसा होना चाहिए जिससे वैज्ञानिक की कलम सरलता से चले और लेखन प्रक्रिया के दौरान उन्हें किसी प्रकार का अतिरिक्त मानसिक बोझ व तनाव महसूस न हो। इसको लोकप्रिय बनाने हेतु अल्पकालीन (एक या दो दिवसीय) संगोष्ठियां आयोजित की जाएं तो प्रारंभिक हिचकिचाहट और अनिच्छा को दूर किया जा सकता है।

अधिकतर वैज्ञानिक व तकनीकी विशेषज्ञ चाहते हैं कि उनके मूल लेखन व शोध पत्र ऐसी पत्रिकाओं में छापे जाएं जिनका पठन-पाठन एक वृहत् वैज्ञानिक समूह करता हो। अस्तु प्रयास रहता है कि उनके लेख प्रलेख व शोध पत्र अंग्रेजी भाषा पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में छपें क्योंकि हिन्दी व अन्य प्रान्तीय भाषाओं में ऐसी पत्रिकाएं न के बराबर हैं। अतः आवश्यकता है कि हिन्दी में भी कुछ राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की वैज्ञानिक पत्रिकाओं का शुभारंभ हो ताकि वैज्ञानिक स्वेच्छा से हिंदी में लिखने के लिये प्रेरित हों। किन्तु ऐसा करने के लिये एक ऐसा समानान्तर बंदोबस्त होना चाहिये जो इनके सारांश का अंग्रेजी में अनुवाद कर एब्सट्रेक्ट रूप में सूचीबद्ध करे तथा कुछ प्रख्यात व जाने-माने वैज्ञानिकों एवं तकनीकी विशेषज्ञों को प्रेरित कर इस कार्य में संलग्न करे। इससे धीरे-धीरे हिन्दी भाषा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रकाशन के एक सशक्त माध्यम के रूप में अवतरित हो जाएगी।

मेरा विचार है कि यदि योजनाबद्ध प्रयास किये जाएं तो निश्चय ही एक बड़ा वैज्ञानिक व तकनीकी विशेषज्ञ समुदाय लेखन, प्रलेखन हेतु हिन्दी भाषा में कार्य करने को प्रेरित होंगे। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित प्रयत्न किये जाने चाहियेः

1. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के तकनीकी शब्दों का सरल व समृद्ध शब्दकोश उपलब्ध कराया जाए। यदि सरल व ग्राह्य हिन्दी रूपान्तर उपलब्ध न हों तो उन्हें वैसे का वैसा ही ग्रहण कर लिया जाए। इसे यथार्थ में पूरे मनोयोग से अपनाया जाए न कि केवल मौखिक रूप से।

2. हिन्दी आशुलिपि का कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर प्रारम्भ में मुफ्त व मुक्त रूप से उपलब्ध कराया जाए।

3. मूल लेख व शोधपत्रों का सारांश हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी हो ताकि कॉमकल अब्सट्रैक्ट आदि महत्वपूर्ण अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाए उसका उपयोग कर सकें।

4. उच्च शिक्षा, लोकप्रिय विज्ञान व तकनीकी पुस्तकों के संस्करण अंग्रेजी की भांति हिन्दी में भी सस्ते मूल्य पर व्यापक रूप से उपलब्ध कराए जाएं।

5. हिन्दी लेखन व प्रलेखन हेतु जो प्रोत्साहन चल रहे हैं उन्हें और भी व्यापक व उदार बनाया जाए।

निदेशक, पर्यावरण एवं विस्फोटक सुरक्षा केन्द्र

☆☆☆

(नेताजी के सारे पूर्वी एशिया के दौरे के बाद मलाया आने पर कुआलालम्पुर के स्वागत-समारोह में गाया गया गीत)

चलो देहली चलें ऐ भाई, चलो देहली चलें ऐ भाई
चलो देहली चलें ऐ भाई।
चल भाई क्या सोच रहा है, समय यह है अनमोल,
जाग अंधेरा दूर हुआ है, अब तो आंखें खोल।
जीत के मोती रोल,
छोड़ दे टाल-मटोल
मोती आज़ादी के तोल।
गौर से सुन ले संदेशा मेरा,
कुछ तो होश संभाल,
दुविधा से क्या काम है तेरा,
ऐ भाई आस को मन में पाल।।
नवयुग आया दुनिया जागी,
क्यों तुमने है देर लगाई
चलो देहली चलें ऐ भाई,
चलो देहली चलें ऐ भाई।
चलो देहली चलें ऐ भाई।।

(" लोकशक्ति पुरूष नेता जी " पुस्तक से साभार)

उड़िया कविता

नागरी लिप्यंतरण — मायाधर मानसिंह — हिंदी अनुवाद

ताहारे स्मर भाई

क्षुद्र लाभे चित्त येवे हुए अंधीभूत,
क्षमता आशे धर्म्म पथु चरण हुए च्युत,
श्रेष्ठ येवे दलित हुए सामान्यर पाइ
ताहारे स्मर, ताहारे स्मर, ताहारे स्मर-भाई!

केतन तार उड़ाअ येहु सैनिक सामन्ते
मथारे तार माल्य देइ, दल ना तार मते!
कर ना पाप-कर्म्म ये ते पुण्य ता नाँ गाइ,
स्मरण कर वचन तार, पालन कर भाई।

पशु के सिना नाशिला तार पंक-माटि-घट,
भक्त ठारू पाउछि से ये गोइठा अविरत!
छद्मवेशे अधिक तारे हत्या कर नाहिं,
सामान्यरे आदेश तार पालन कर भाई!

अस्त से कि चिरु आजि अगस्ट पन्दरे,
परेड आउ वक्तृतारे, मेला उत्सवरे?
ताकुइ टिके प्रवेश दिअ मनर मन्दिरे
ए महादिनर सृष्टा सेंह प्राणर बापूजी रे।

उसका करो स्मरण भाई!

क्षुद्र-लाभ-चिन्ता से जब मन त्रस्त हो उठे धर्म भूलकर सत्ता-लोलुप पाव पंथ पर व्यस्त हो उठे जब नगण्य के पद में नत हो श्रेष्ठ तुम्हारा उसका करो स्मरण भाई, ऐसे क्षण में वही सहारा!

उसका विजयकेतु फहराने वाले सैनिक और सामन्तो मूर्ति पूजते हो तुम उसकी, कुचलो मत उसकी सन्मति को उसका पुण्य नाम ले-लेकर पढ़ो न केवल पाप-पहाड़ा उसका करो अनुसरण भाई, शक्ति वही है वही सहारा

माटी का नश्वर घट उसका भले किसी पापी ने फोड़ा किन्तु निरन्तर क्या तुमने उसकी आत्मा को नहीं झंझोड़ा अधिक हनो मत उसकी आत्मा छोड़ो छद्म-कपट-छल-सारा उसके उपदिश्टों को, मानो वही सत्य है वही सहारा

है स्वातन्त्र्य-पर्व पर सब कुछ सैन्य-प्रदर्शन, भाषण मेला किन्तु स्वयं वह कहीं नहीं है उनमें यह कैसी अवहेला मन को स्वच्छ करो अन्तर में छिटकाओ उसका उंजियारा इस महान दिन का वह सृष्टा प्राण हमारा और तुम्हारा!

नागरी लिप्यंतरण

धरित्रीर 'बापु'

बैकुंठनाथ दास

पुणि से आसिछि पुण्य वासर जनम लगन वेला
भग्न बुकुर नग्न मुकुरे, कारा छवि रचे खेला!

कि ए पुणि आज कलान्त गगने कान्त किरण ढालि
जीवन पद्म विकशित करे कि ए से अंशुमालि तरु छाड़ हीन पराण
मरुरे उद्यान रचे कि ए
ओतप्रोत तट कथा पद के अमृत टोपा दिए
काशर मोहन बाँशुरी सुने जागे स्वर-वेला!

त्रेतायुगे कला दानव दमन अमोघ ब्रह्मशरे
धरम धरणी थापिला द्वापरे राजनीति कौशले अति अद्‌भुत शक्ति
कमाण पेषिला अराति वुके
टोपिए रक्त न ढालि भूतले समर जिणिला सुखे
गोरिए शरीरे धरिला कोटिए शक्ति-भेला!

हिंसा अनले असहयोगर ढालि जान्हवी जल
मानव पीरति निगुढ़े बान्धे हिंस्र दानव बल
आजि कलियुगे पीरति आंशुरे उद्धरिधरे पापु-युगे-युगे सेहु जनम
धेनइ धरित्रीर बापु
पुणि से आसिछि पुण्य वासर जनम लगन वेला
मगन बुकुर नगन मुकुरे काहा छवि रचे खेला!

हिन्दी अनुवाद

विश्व के 'बापू'

पुण्य दिवस फिर आया
भग्न हृदय के स्वच्छ मुकुर में प्रतिबिम्बित तव छाया!

क्लान्त गगन-भर कांत रश्मियाँ फिर से छूट रहीं हैं
जीवन शतदल की कलिकाएं अभिनव फूट रही हैं
दुर्वादल से हीन प्राण मरु के फिर हुये हरित हैं
आज तुम्हारी शब्द-सुधा के निर्झर पुनः झरित हैं
पुनः तुम्हारी मोहक वंशी की हर कण पर माया!

तुम सौ वर्ष पूर्व आए थे किन्तु नहीं कब आए
उतरे थे त्रेता में तुम ही, द्वापर में तुम धाए
तुम अमोघ ब्रह्मास्त्रपाणि तुम शांति धर्म के नेता
कुशल नीति के तुम अन्वेषक व्यूढ़ानीक विजेता
तुम दुर्बल तुम सबल शत्रु को सौंपा स्नेह सवाया!

हिंसा की ज्वाला पर डाला असहयोग का पानी
परम द्वेष को जीत सकी तव चरम स्नेहमय वाणी
राष्ट्र-पिता ही नहीं विश्ववादी तुम विश्व-पिता हो
बहुजन नहीं तुम्हारी यह तिथि बापू सर्वहिता हो
तुमसे वंचित चिर लांछित ने गौरव का सुख पाया!

पुण्य दिवस फिर अया
भग्न हृदय के स्वच्छ मुकुर में प्रतिबिम्बित तव छाया!

नागरी लिप्यंतरण

विश्वमय भगवान

वीरकिशोर दास

देश लागि जार देह कान्दि उठे
जाति लागि कान्दे मन
लोड़ा नाहिं तार जोड़ि घोड़ा-गाड़ि
(अबा) कुआँर पुनेइ जन्ह!
उआँस अन्धार तार बिदुबती
जार हृदे भरा भीकर शकति
हातकड़ि तार मल्लिफुल हार
सुधा सम अनशन

निज नामकु से न करे बिकिरि
अहमिका ताकु लागे बिषपीर
द्वीपांतर तार दिल्ली सिंहासन
फाशी बइकुण्ठ धाम

देहकु भावे से देबता मन्दिर
जीबनकु भावे देशबासींकर
शत अविश्वास बाधारे से देखे
विश्वमय भगबान

हिन्दी अनुवाद

स्नेह मूर्ति

देह देश के लिये प्राण मानवता के लिये
बिना किसी ऐश्वर्य मोह के
जीवन-भर तुम जिए!

अंधकार को किरण; दैन्य को दीप्त शक्ति दी
फूलों तक को हथकड़ियों की ओर भक्ति दी
अनशन को गुण सौंप दिया तुमने अमृत का
निकष बनाया तुमने ऋत को अपने कृत का!

तुमने कीर्ति, प्रतिष्ठा, पद को कभी न चाहा
अहंकार को विष ही माना
विनय-भाव को सदा सराहा
सौंप दिया अमरत्व मृत्यु को, फांसी चढ़ना खेल हो गया
दिल्ली का सिंहासन जैसे भारत का हर जेल हो गया!

और मूल इस सबका यह है
था शरीर प्रभु-गेह तुम्हारा
आस्तिक मन सेवा में अर्पित
सकल विश्वमय स्नेह तुम्हारा!

पुस्तक समीक्षा

संघर्ष

[पुस्तकः संघर्ष (उपन्यास)] लेखिकाः श्रीमती बाला शर्मा; प्रकाशकः वातायान प्रकाशन, दिल्ली; मूल्यः अड़सठ रुपये]

'संघर्ष' श्रीमती बाला शर्मा का एक सामाजिक उपन्यास है। नाम के अनुरूप ही इसमें लेखिका ने सामाजिक संघर्षों का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। लेखिका इसमें यह चित्रित करना चाहती है कि आजादी के पचास वर्षों के बीत जाने पर भी सामाजिक, राजनैतिक परिवेश में कोई सुधार नहीं हुआ। अपितु आचरण एवं मान्यताओं में ह्रास ही हुआ है। हम इस स्थिति पर गर्व नहीं कर सकते।

यद्यपि उपन्यास सम्मत गुणों का इसमें पूर्ण रूप से प्रतिपादन नहीं हो पाया, कथा सुगठित न होकर विश्रृंखल सी प्रतीत होती है। लेखिका उसे बांध कर रखने में सफल नहीं हो पाई फिर भी राजनैतिक नेताओं एवं तथाकथित उच्च वर्ग की सारहीनता और औद्योगिक वर्ग के हथकंडों, कालिजों की गन्दी राजनीति, पुलिस के कारनामों तथा सामाजिक संघर्ष को दिखाने में उसे सफलता अवश्य मिली है तथापि उच्च और निम्न वर्ग के वर्ग संघर्ष को दिखाने में भी वह पीछे नहीं रही है कि ग्रामों में अब भी जमींदार वर्ग निम्न वर्ग को मन से स्वीकार करने को प्रस्तुत नहीं है। यथार्थ को प्रस्तुत करते हुए उसने आधुनिक अफसर वर्ग के माध्यम से सुन्दर भविष्य की कल्पना भी की है। गांवों की स्थिति का अच्छा वर्णन है। "कही-कहीं पूरे इलाके में स्कूल, हस्पताल तक नहीं है तथा कच्चे, पक्के रास्ते हैं"। जहां पर समस्यायों के दिग्दर्शन में लेखिका सफल है परन्तु वाक्य विन्यास को वह सम्भाल नहीं पाई इसके लिए लेखिका को प्रयास करना होगा।

संवाद प्रायः ठीक हैं पर जो सजीवता चाहिए वह नहीं है। पात्रों का चित्रण सजीव नहीं है। लेखिका खुलकेर उनका चित्रण नहीं कर पाई हैं। इसमें, संकोच से काम लिया प्रतीत होता है।

सामाजिक वातावरण का प्रस्तुतीकरण सुन्दर है। लेखिका का यह कथन "शुंभुनाथ की चौथी पीढ़ी किन परिस्थितियों से जूझ रही है। सामाजिक एवं राजनैतिक पतन को झेलने को विवश हो रही है....." वातावरण का वर्णन सुन्दर बन पड़ा है पर कहीं-कहीं लेखिका इसमें संकोचशील हो गई है। खुल कर बात कह नहीं पाई।

उपन्यास की भाषा में यथा समय एवं यथा स्थान का ध्यान तो रखा गया है, परन्तु कई स्थानों पर भाषा ठीक नहीं बन पड़ी जैसे पृष्ठ 48 "स्वयं को हर स्तर पर अनस्थापित महसूस करती थी" "देख निरख" "सार सम्भाल" "पीयूष को बेटा हुआ" आदि। ग्रामीण तथा स्थानीय भाषा का प्रयोग तो हो सकता है परन्तु इसके लिए संदर्भ का ध्यान रखना आवश्यक है।

सामाजिक वातावरण के दिग्दर्शन में लेखिका सजग अवश्य है। पर इसके लिए भाषा का सुशक्त एवं लेखनी को प्रभावी बनाना होगा। सुन्दर प्रयास के लिए लेखिका बधाई की पात्र है।

एम०एल० मैत्रेय,

35-सुखधाम अपार्टमेंट, प्लाट नं०-1 सेक्टर 9, रोहिणी, दिल्ली-85

संस्कृत लोकोक्तियों का उपयोगी कोश

[पुस्तकः संस्कृत लोकोक्ति कोश, लखिकाः डा॰ शशि तिवारी, प्रकाशकः प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली, मूल्यः 60.00]

प्रत्येक भाषा की लोकोक्तियां उसकी अमूल्य सम्पत्ति होती है। ये लोगों द्वारा सदियों से संचित किए गए अनुभवों की संवाहक होती हैं और बड़ी और गहरी बात को कम और सरल शब्दों में सामने ला देती हैं। समय पर बोली गई एक लोकोक्ति वक्ता के आन्तरिक विचारों और मनोभावों को कितनी सुन्दरता और सहजता से व्यक्त कर देती है इसका प्रमाण हमें अपने नित्यप्रति के वार्तालाप के दौरान मिलता ही रहता है। प्रायः लोग प्रसिद्ध कवियों के वाक्यों और मनीषियों के लघु वाक्यों का भी इसी अभिप्राय से प्रयोग करते हैं और वे सूत्ररूप उपयोगी और मधुर वचन भी लोगों की जिह्वा पर चढ़कर 'लोकोक्ति' बन जाते हैं।

संस्कृत भाषा भारत की प्राचीनतम और माधुर्यपूर्ण भाषा है। हमारी विचारधाराएं, परम्पराएं, मान्यताएं, संस्कृति, दर्शन, धर्म आदि सब कुछ इसमें अनुस्यूत हैं। इसके प्राचीन और प्रसिद्ध ग्रन्थों में सूक्ति वचनों का विशाल भंडार प्राप्त होता है। कवियों के कई वाक्य तो उनकी पहचान बन गए हैं। व्यक्ति, समाज, नीति, व्यवहार, अध्यात्म आदि सभी विषयों पर, लोकोक्तियां संस्कृत में मिलती हैं। आज का पाठक जिज्ञासु होते हुए भी अतिव्यस्त है। वह अपनी बहुमूल्य धरोहर से परिचित होना चाहता है—लोकोक्तियों को जानना और याद करना चाहता है। ऐसे में डा॰ शशि तिवारी द्वारा तैयार प्रस्तुत 'संस्कृत लोकोक्ति कोश' स्वागत योग्य एक महत्वपूर्ण और उपयोगी कोश है।

विदुषी लेखिका ने इसमें संस्कृत की प्रसिद्ध और लोकप्रिय सोलह सौ लोकोक्तियों को संकलित किया है, जो विभिन्न संस्कृत ग्रन्थों से चुनी गई हैं। साथ ही संस्कृत पढ़ने, बोलने और समझने वाले लोगों के द्वारा प्रायः बात-बात पर दोहराई जाने वाली अज्ञातनामा किन्तु लोकप्रिय उक्तियां भी इस संग्रह में सम्मिलित की गई हैं। पाठकों की सुविधा के लिए लेखिका ने बड़ी सूझबूझ से संकलित लोकोक्तियों को उनके मुख्य विषय के आधार पर दस खण्डों के अन्तर्गत सत्तावन शीर्षकों में विभाजित किया है। व्यक्ति परक, समाजपरक, वस्तुपरक, धर्मविषयक, भाव एवं गुणविषयक, काल विषयक, दर्शन विषयक, साहित्य विषयक, लोक नीति विषयक और विविध—ये दस खण्ड हैं। इनके अन्तर्गत शरीर, आरोग्य, कर्म, वाणी, मौन, दर्प, मान-अपमान, सत्पुरुष, दुष्ट, विद्वान, मूर्ख, गृह, परिवार, माता-पिता, पुत्र, पुत्री, पति, पत्नी, अतिथि, भाई आदि, नारी, मित्र, गुरुजन, परोपदेश, संगति, धन, भोजन, रत्न, विष, धर्म, सत्य, दया, क्षमा, दान, उपकार, विद्या, स्वभाव, कीर्ति अपकीर्ति, सुख-दुख, विश्वभावना, एकता, पराधीनता, गुण, बल, पुरुषार्थ, उद्यम, उदात्तभावनाएं, दुर्भावनाएं, काल, वसन्त ऋतु, दैव-भाग्य, भक्तिव्यता, विपत्ति, लोक नीति, अति, सर्व आशीर्वाद आदि शीर्षक उपलब्ध होते हैं। लगभग जीवन से सम्बद्ध प्रत्येक विषय में लोकोक्तियों की प्राप्ति उनकी उपादेयता को ही दर्शाती हैं।

लोकोक्तियों की सामान्य विशेषताएं संस्कृत की लोकोक्तियों में समान रूप से प्राप्त होती हैं। किन्तु इनका वैशिष्ट्य केवल लोकचिन्तन की अभिव्यक्ति तक ही सीमित नहीं है। संस्कृत की लोकोक्तियों के महत्व के दो प्रमुख पक्ष हैं—प्राचीन भारतीय चिन्तन के मुख्य विचारों का परिचय देना एवं भारत की सांस्कृतिक एकता के स्रोत का दिग्दर्शन कराना। अतः संस्कृत लोकोक्ति का संग्रहण सभी-भारतीयों के लिए उपादेय और अभिनन्दनीय है।

प्रस्तुत संकलन में विषयानुसार वर्गीकृत लोकोक्तियों को अकारादि क्रम से हिन्दी भावानुवाद के साथ प्रस्तुत किया गया है। उक्ति के मूल ग्रन्थ का निर्देश अधिकांश स्थलों पर हुआ है, जो अधिक जानकारी के इच्छुक पाठकों के लिए सुविधाजनक है। कई बार समकक्ष हिन्दी लोकोक्ति या कहावत भी साथ ही उद्धृत है, जो संस्कृत की उक्ति के भाव को अधिक स्पष्ट करने में सहायक है। पुस्तक को हाथ में उठाते ही यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि संकलन कर्त्री ने लोकोपयोगी, लोकप्रिय और सरल संस्कृत-लोकोक्तियों का सुरुचि पूर्ण ढंग से चयन कर लोकचिन्तन में निहित कल्याणभावना के प्रति अपनी आस्था प्रदर्शित की है। लोकोक्तियों के महत्व और स्वरूप पर प्रकाश डालने वाली भूमिका पुस्तक के प्रारम्भ में दी गई है। विश्व प्रसिद्ध विद्वान-डा॰ कर्णसिंह ने प्राक्कथन द्वारा कोश की प्रतिष्ठा को और बढ़ा दिया है।

प्रकाशन विभाग के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय पटियाला हाउस में 23 अगस्त 1996 को इस पुस्तक के लोकार्पण समारोह में लोकार्पण कर्त्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वी॰ आर॰ मेहता ने इस बहुमूल्य कृति की सराहना की और आशा व्यक्त की कि ऐसी पुस्तकें देश की सांस्कृतिक अखण्डता को मजबूत बनाने में सफल होंगी। उस अवसर पर मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के निदेशक डा॰ के॰के॰मिश्र ने प्रकाशन विभाग द्वारा संस्कृत में प्रकाशित इस पहली पुस्तक के लिए प्रकाशन-विभाग को बधाई दी। निस्संदेह पुस्तक का प्रकाशन कार्य स्तुत्य है, सुन्दर छपाई और आकर्षक कवर से इसके कलेवर में चार चांद लग गए हैं।

संस्कृत लोकक्तियों का प्रस्तुत कोश प्रत्येक दृष्टिकोण से संग्रहणीय और प्रशंसनीय है।

प्रो॰ अवनीन्द्र कुमार,

संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

भारत में अंग्रेजी: क्या खोया क्या पाया

[पुस्तक: भारत में अंग्रेजी: क्या खोया क्या पाया; लेखक; डा॰ तुलसी राम; प्रकाशक: किताब घर, 24, अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली-110002; पृ॰ सं॰: 319; वर्ष: 1997; मूल्य-146 रु॰]

भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् भी भारत में अंग्रेजी भाषा का बर्चस्व कम होने के बजाय निरन्तर बढ़ा है। संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने और सरकार द्वारा एक पृथक विभाग बनाए जाने के बावजूद अंग्रेजी के इस रोग से हम छुटकारा नहीं पा सके हैं बल्कि स्थिति तो यह हो गई है कि 'मर्ज बढ़ता गया ज्यूं-ज्यूं दवा की। आखिर यह विडम्बना क्यों है? इसको समझने के लिए हमें इतिहास के पिछले दो सौ वर्षों के घटना क्रम की ओर मुड़कर देखना होगा कि भारत में अंग्रेजी को क्यों लागू किया गया था? इस से हमें क्या उपलब्ध हुआ और क्या हानि हुई? इस पुस्तक के विद्वान लेखक डा॰ तुलसी राम ने बड़े विस्तार के साथ उन सभी कारणों और परिस्थियों पर प्रकाश डाला है, जिनके परिणामस्वरूप आज भारत को विदेशी भाषा के इस अभिशाप का सामना करना पड़ रहा है।

कहना न होगा कि संसार में भारत के अतिरिक्त शायद ही अन्य कोई देश ऐसा होगा, जहां उसकी अपनी भाषा के होते हुए भी कोई विदेशी भाषा राज और शिक्षा की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो। अंग्रेजी भारत में क्यों और कैसे आई? किन प्रेरणाओं और सम्भावनाओं को लेकर आई? कैसे जमी और कैसे फली और कैसे प्रबुद्ध वर्ग की मानसिक दासता और दुविधा के कारण अंग्रेजी राज के चले जाने के बाद भी स्वतन्त्र भारत में अनिश्चित काल के लिए टिकी हुई है। इस सब का सटीक चित्रण इस पुस्तक में किया गया है। पुस्तक में ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासकों की व्यापार संस्कृति और भाषा सम्बन्धी नीति और सदा-सदा के लिए भारत को अंग्रेजियत में रंगने की योजना का बड़े ही तार्किक ढंग से खुलासा किया गया है। मैकाले का विचार था कि "अंग्रेजियत के रंग में रंगा यह भारत सदा के लिए इंग्लैंड के साथ शासन सूत्र में बंधा रहेगा।" अंग्रेजों का उद्देश्य इस देश को शिक्षित करना नहीं था बल्कि अपने हितों के लिए एक सीमित वर्ग को अंग्रेजी पढ़ा कर शासन चलाना था। उसका लक्ष्य था 'भारतीयता का उन्मूलन और पाश्चात्य संस्कृति और शिक्षा का बीजा रोपण।" अंग्रेजी शिक्षा भारतीयों को उनके आचार-विचार, संस्कृति और सभ्यता से जोड़ेगी और मौलिक भारतीयता से तोड़ेगी। यहां अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य था 'शासित वर्ग का निर्माण।' मैकाले ने जो कल्पना की थी वह सारहीन नहीं थी, उसने सोच लिया था कि 'यदि भारत को स्वतन्त्रता प्रदान करनी ही पड़े तो वे कौन लोग होंगे जो इस देश की बागडोर को संभालेंगे और किस वैधानिक ढांचे में ताकि इंग्लैंड की जड़ें भारत में फिर भी पक्की बनी रहें और सम्बन्ध टूटें नहीं।' यही वह नींव है जिस पर अंग्रेजी की शिक्षा आज भी टिकी हुई है। इसी कारण हमारी स्वतन्त्रता का सूर्य ज्यों-ज्यों चढ़ता गया अंग्रेजी की छाया उतनी ही बढ़ती चली गई। यह सब मैकाले के मानस पुत्रों की ही देन है।

पुस्तक की विषय वस्तु 34 अध्यायों में समाविष्ट है। इसमें भारत में अंग्रेजी शिक्षा के तीन आयामों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

1. 1793 से 1854 तक अंग्रेजी का प्रतिष्ठापन, जिसके सूत्रधार थे चार्ल्स ग्रांट और प्रमुख कलाकार थे, लार्ड मैकाले।

2. 1854 से 1947 तक जिसमें अंग्रेजी के प्रचार-प्रसार की विस्तार से चर्चा की गई है। इसके अंतर्गत 1854 का 'वूड का डिस्पैच', कलकत्ता यूनिवर्सिटी कमीशन रिपोर्ट, हंटर के शिक्षा आयोग की रिपोर्ट, इंडियन स्टैच्युटरी रिपोर्ट आदि की समीक्षा के आधार पर भारतीय शिक्षा पद्धति का विश्लेषण किया गया है।

3. 1947 के पश्चात् आज तक की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए अंग्रेजी के प्रभुत्व का छायांकन प्रस्तुत किया गया है। इसके अंतर्गत स्पष्ट संकेत मिलता है कि किस प्रकार महात्मा गांधी, टैगौर, नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, राधाकृष्णन और विनोबा के सतत आग्रह के बावजूद हमारे शिक्षा शास्त्री येन-केन प्रकारेण अंग्रेजी के वर्चस्व को बनाए रखने की नीति पर चलते रहे। 1948 के विश्व विद्यालय आयोग, डा॰ दौलत राम कोठारी आयोग की रिपोर्ट आदि के द्वारा हमारी शिक्षा नीति की कमियों को उजागर किया गया है। 1963 के राजभाषा अधिनियम के बाद देश में राजभाषा की नींव ऐसे भंवर में आकर फंस गई है कि इस का उपाय सरल नहीं। स्थिति यह है कि जब तक हिन्दी न आए तब तक अंग्रेजी चले और जब तक अंग्रेजी चले तब तक हिन्दी न आए।'

यह पुस्तक राजभाषा से सम्बधित कार्यों में लगे कर्मचारियों और अधिकारियों के लिए तो उपयोगी है ही, भारतीय शिक्षा का अध्ययन करने वाले विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिए भी पठनीय है। भारतीय शिक्षा के इतिहास का बहुत ही सजीव चित्रण इस में उपलब्ध है। डा॰ तुलसी राम जी ने अंग्रेजी में **'ट्रेडिंग इन लैंग्वेज"** नामक एक पुस्तक लिखी थी जो बहुत लोकप्रिय हुई। हिन्दी में भी उसी विषय वस्तु पर आधारित यह पुस्तक लिख कर उन्होंने बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया है। हिन्दी में अभी तक भारत की राजभाषा समस्या और उसके ऐतिहासिक कारणों को लेकर जितनी भी पुस्तकें उपलब्ध हैं उनमें इतनी बारीकी से मौलिक चिन्तन, तर्क संगत और वस्तुनिष्ठ विश्लेषण शायद ही अन्य किसी ग्रन्थ में मिले। लेखक ने बड़ी ही स्पष्टवादिता के साथ रोगी का सही नब्ज पर हाथ रखा है।

यह पुस्तक और भी उपयोगी हो सकती थी यदि इसके अन्त में 'शब्दानुक्रमणिका' भी जोड़ दी जाती। हिन्दी ग्रन्थों में यह कमी सामान्यतया अक्सर देखने को मिलती है। फिर भी लेखक ने परिश्रम और ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर जिस सत्य का उद्घाटन करने का प्रयास किया है उसके लिए वे निश्चय ही बधाई के पात्र है। यह पुस्तक केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की वित्तीय सहायता से प्रकाशित हुई है इस लिए निदेशालय भी धन्यवाद का अधिकारी है।

डा॰ परमानन्द पांचाल,
232ए पाकेट-1, मयूर विहार फेज-1, दिल्ली-110091

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

[पुस्तकः सत्यम् शिवम् सुन्दरम् (काव्यसंकलन) कविः—पदमश्री डॉ॰ भरत मिश्र, प्रकाशकः आलो प्रकाशन आरा (भोजपुर), बिहार; पृ॰ सं॰: 132; मूल्यः 101 रुपये मात्र आकार-डिमाई, अजिल्द]

"सत्यम् शिवम् सुन्दरम" काव्य संकलन के रचयिता प्रज्ञाचक्षु पदमश्री डॉ॰ भरत मिश्र, राजनीतिशास्त्र के ख्यातिलब्ध विद्वान् हैं। राजनीतिशास्त्र से संबंध उनके अनेक संदर्भ ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी साहित्य में अपने विचारोत्तेजक निबंधों और कविताओं को लिखकर हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की है।

"सत्यम् शिवम् सुन्दरम" डॉ॰ मिश्र का तीसरा काव्य संकलन है। इससे पूर्व उनका "दोहा रामायण" हिन्दी पाठकों के बीच लोकप्रिय रहा है। समीक्ष्य काव्य संकलन की कविताएं भी प्रायः उनके "दोहा रामायण" में संकलित कविताओं के समान हैं। किनतु "दोहा रामायण" में जहां उनकी भक्त्यामक कविताएं हैं वहां इसमें भक्त्यात्मकता के अतिरिक्त जीवन के विविध पक्षों को उजागर करने वाली कविताएं भी हैं।

विषय की दृष्टि से इसमें भक्तिपरक गीत, देशभक्ति गीत, नीति और सूक्तिपरक गीत और कुछ उद्बोधन गीत हैं। भक्तिसंबंधी गीतों में गणेशवंदना, राम भजन, शिवस्तुति, कृष्ण भजन, हरि भजन, जगदीश भजन, हनुमान वंदना, दुर्गास्तुति, सरस्वती वंदना आदि में जहां भारतीय धार्मिक चेतना के अनुरूप देवी-देवताओं की अभ्यर्थना अर्चना और वंदना है, वहां उनके धार्मिक-सांस्कृतिक पक्ष को भी उद्घाटित किया गया है। कवि ने संघर्षशील मानव जीवन के लिए आध्यात्मबोध की अनिवार्यता को स्वीकार करते हुए मर्यादा, लोकादर्श और लोककल्याण के प्रति उत्प्रेरित किया है। जीवन केवल भौतिक तृप्ति के लिए नहीं हैं वरन् उच्चादर्शों को अपनाते हुए जन-जन की सेवाभावना, करुणा, दया, ममता, संवेदना, सहानुभूति और आध्यात्मिक चेतना जागृत करने के लिए है।

डॉ॰ मिश्र के भक्तिपरक गीत अपने समय और समाज के बदलते रूपों के अनुरूप हैं। संकलित स्तुति गानों में भक्त हृदय की निश्छलता और सात्विकता के साथ लोकोन्मुखी भी हैं। ईश्वर के प्रति समर्पित होते हुए भी ये कविताएं संसार से पलायन या वैराग्य की भावना को नहीं जगाती वरन् सांसारिक दायित्वों और कर्त्तव्यों को संवहन करने की प्रेरणा देती है। भारतीय धर्म साधना के बहुदेववाद में देवी-देवताओं को लोकशक्ति जागरण का आधार माना गया है। अनाचार-अत्याचार के विरुद्ध उठ खड़ा होने की प्रेरणा दी गई है।

संकलन के राष्ट्रीय गीतों में अपनी मातृभूमि के प्रति श्रद्धा-भक्ति के साथ भावनात्मक एकता पर बल दिया गया है। भारत महिमा, जन्मभूमि की जय, जन्मभूमि महिमा, देशगान, भारत की पुकार, भारत के जवान, गणतंत्र दिवस जैसी कविताओं में भारत की महिमा गरिमा का गुणानुवाद ही नहीं है वरन् उसकी समुन्नति और चतुर्दिक विकास के लिए सत्प्रेरणा भी है। इसी क्रम में डॉ मिश्र के उद्बोधन गीतों में आज के निराश्यपूर्ण जीवन से मुक्ति पाने के लिए सदुपदेश हैं। आत्मबोध, आत्मज्ञान जैसी कविताओं में जहां "स्व" को समझने का उद्बोधन है वहां उत्साह, हिम्मत जैसी कविताओं में नयी संचेतना और जागृति के स्वर भी है।

"विविधा" के अंतर्गत संकलित कविताओं में अपने वैयक्तिक जीवन तथा अंधत्व के अभिशाप की व्यथा व्यंजित हैं। आलो स्मृति में कवि ने पत्नी वियोग का करूणा जनित उद्गार पाठकीय संवेदना को अपनी समग्रता में व्यक्त किया है। विविधा की नीतिपरक कविताओं में सदुपदेश हैं।

इस प्रकार "सत्यम् शिवम् सुन्दरम" की कविताएं आदर्श मानव जीवन के विधि पक्षों को उजागर करते हुए सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। संकलित कविताओं की भाषा सरल, सुबोध होने से साथ प्रवहमान हैं।

निश्चय ही, डॉ॰ भरत मिश्र की कविताएं साम्प्रतिक जीवन की विभीषिका, असंतोष और अनीति के गर्त में पड़ी मानवता को जागृत करने तथा नई संचेतना भरने में सक्षम हैं।

डॉ॰ रामप्यारे तिवारी,
अध्यक्ष, एवं आचार्य, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा।

बाबा कानपुरीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

[पुस्तकः बाबा कानपुरीः व्यक्तित्व एवं कृतित्व (अभिनंदन ग्रन्थ); सम्पादकः उमाशंकर मिश्र, अशोक मधुप; मूल्यः 100/-; संस्करणः 1997; प्रकाशकः दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन (सनेही मंडल), नोएडा]

प्रस्तुत ग्रन्थ हास्य-व्यंग्य के परिचित कवि श्री बाबा कानपुरी के अभिनंदन ग्रंथ के रूप में दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन (सनेही मंडल), नौएडा द्वारा प्रकाशित किया गया है, जिसका सम्पादन उमांकर मिश्र और अशोक मधुप द्वारा किया गया है।

इस अभिनंदन ग्रंथ को प्रधानतः दो खण्डों में विभाजित किया गया है। ग्रंथ के प्रारंभ का अंश हास्यकवि बाबा कानपुरी के व्यक्तित्व पर विशद

प्रकाश डालता है। इस खंड में उनके जीवन-परिचय एवं व्यक्तित्व पर केन्द्रित अनेकशः सुप्रसिद्ध हिन्दी-विद्वानों के आशीर्वचन और सारगर्भित लेख समाविष्ट हैं, जो बाबा कानपुरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के रहस्यों को पंखानुपंख खोलते दिखाई पड़ते हैं। सुविख्यात कवि गोपालदास 'नीरज' अपने पत्र में लिखते हैं—"बाबा कानपुरी हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ व्यंग्यकार हैं और उनकी रचनाएं व्यंग्य-कविता के क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती हैं। लेकिन कवि होने के साथ-साथ वे एक सच्चे समाजसेवी और संगठन कर्ता हैं।" (पृष्ठ सं० 18) हास्य के प्रसिद्ध कवि श्री ओमप्रकाश आदित्य के मतानुसार' "वे व्यवहार में अत्यन्त मधुर, विनम्र और सहज-सरस हैं। कविता में भी उनकी शैली एवं काव्य अत्यन्त मधुर, विनम्र और सहज-सरस हैं। कविता में भी उनकी शैली एवं काव्य अत्यन्त हृदयग्राही, शिष्ट, सरल किन्तु अर्थपूर्ण हैं।" (पृष्ठ संख्या-19)

इस ग्रंथ के प्रथम खंड में, डा० राम प्रसाद मिश्र, आशारानी व्होरा, डा० रत्नाकर पाण्डेय, मधुर शास्त्री, कृष्ण मित्र, प्रो० सोमदत्त दीक्षत, डा० ब्रजनाथ गर्ग, डा० परमानन्द पांचाल, प्रेम जनमेजय, डा० देवेन्द्र आर्य, डा० यतीन्द्र तिवारी, डा० कुंअर बैचैन, डा० रमासिंह, डा० मधु भारतीय, डा० सत्य प्रकाश बजरंग, कालीचरण प्रेम और डा० बरसाने लाल चतुर्वेदी आदि लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकारों के भी लेख संस्मरण एवं समीक्षाएं सम्मिलित की गई हैं।

बाबा कानपुरी के सहज मैत्री भाव पर प्रकाश डालते हुए ओज के कवि कृष्णमित्र लिखते हैं—"परिचय के लिए बाबा कानपुरी को खास अभिनय नहीं करना पड़ता है, उनकी अधपकी दाढ़ी में जो प्रौढ़ता है उसी में उनकी विनम्रता भी है। विनय का संबंध सीधा बौद्धिकता की परिपक्वावस्था से है। बाबा कानपुरी में वह सब है।" (पृष्ठ संख्या-44) गीत और ग़ज़ल विधा के सशक्त हस्ताक्षर डा० कुंअर बैचैन बाबा जी के कथ्य और शिल्प के सराहनीय संयोग की आशंसा करते हुए लिखते हैं—"सामान्यतः व्यंग्यकार अतुकान्त कविताओं में ही अपनी बात कहते हैं, किन्तु बाबा कानपुरी छन्दबद्ध कविता करने के पक्षधर हैं। यही कारण है कि वे कभी कुडंलिया छन्द में अपनी बात कहते हैं और कभी दुमदार दोहों के रूप में, कभी अन्य विशिष्ट छन्द में काव्य रचना करते दिखते हैं तो कभी गीत में। छन्द का अच्छा ज्ञान होने के कारण वे अपने कथ्य को भी छन्दों में ऐसे ढाल देते हैं जैसे वे छन्द उन्ही के कथ्य के लिए बने हैं।" (पृष्ठ संख्या—66)

कालीचरण प्रेमी ने अपने लेख में बाबा कानपुरी के समेकित व्यक्तित्व का चित्रण बड़े कौशल के साथ किया है। प्रेमी जी बाबा कानपुरी के अन्यतम मित्रों में से हैं। प्रेमी जी बाबा कानपुरी के व्यक्तित्व पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए लिखते हैं—"सीधे-सादे, सौम्य, सरल और आकर्षक व्यक्तित्व के इंसान हैं बाबा। उनके चेहरे पर मन्द-मन्द मुस्कान सहज ही किसी को भी मोह सकती है। निजी तौर पर कहा जाए तो वे बड़े मिलनसार, मधुरभाषी, धीमा और नाप तोलकर बोलने वाले हैं। नोएडा क्षेत्र की साहित्यिक गतिविधियों के वे प्रमुख केन्द्र हैं। नौएडा के प्रायः सभी साहित्यकार उनकी आत्मीयता से जुड़े हैं। सही अर्थों में वे नौएडा की साहित्यिक गतिविधियों के अगुआ भी हैं और संचालक भी। वे सब साहित्यकारों की खैर-खबर रखते हैं। सभी के दुख-दर्द में मैंने उन्हें एक पारिवारिक सदस्य की तरह शरीक होते देखा है। ड्यूटी खत्म होने के बाद वे प्रति दिन सायं को बिना किसी औपचारिक कार्यक्रम के और बिना किसी खास प्रयोजन के किसी भी साहित्यकार के पास अचानक जा धमकते हैं। मेरे ख्याल से बाबा कानपुरी को नोएडा का नारद कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। (पृष्ठ-113)

रायबरेली जनपद के अन्तर्गत झूलपुर नामक स्थान में 21 जून, 1955 ई० को जन्में बाबा कानपुरी अपनी जीवन यात्रा के 42 बसन्त व्यतीत कर चुके हैं। आप प्रारंभ में "शीतल" उपनाम से लिखा करते थे। बाद में "बाबा कानपुरी" के नाम से हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में पदार्पण किया, काव्य-परम्परा के सुकवि सम्राट पं० गया प्रसाद शुक्ल' "स्नेही" आपके आदर्श गुरू हैं।

इस ग्रंथ के द्वितीय खंड में बाबा कानपुरी की कृतित्व-समीक्षा, कतिपय चयनित कविताएं और व्यंग्य-लेख, आलेख, निबन्ध, लघु कथा, एकांकी आदि प्रकाशित किए गए हैं, जिनसे अवगत होता है कि आपकी अब तक क्रमशः "बाबा कवि बर्राय", "पीछे से खुली खिड़की", "चौके छक्के", काव्य-पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें आपकी विविध प्रवृत्तिपरक रचनाओं के दर्शन किए जा सकते हैं। डा० बरसाने लाल चतुर्वेदी द्वारा लिखित 'पीछे से खुली खिड़की' की समीक्षा सिद्ध करती है कि बाबा कानपुरी सरस गीतों, गजलों का प्रणयन भी उतने ही कौशल के साथ करने में सक्षम है, जितना कौशल उनके द्वारा प्रणीत हास्य-व्यंग्य की रचनाओं में दिखाई देता है। इसी खण्ड में उनकी अप्रकाशित रचनाएं संकलित होने के फलस्वरूप उनके रचना-संसार का परिचय सुधी पाठकों को सहज ही मिल जाता है। बाबा कानपुरी के लेखन का क्षेत्र मात्र काव्य-विधा तक ही सीमित नहीं हैं। ग्रन्थ में उनके द्वारा लिखित स्वामी विवेकानन्द की जीवनी, पं० गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' और स्व० डी० राजकंवल विषयक शोध निबन्ध, 'आदमखोर' नामक व्यंग्य कथा, 'राशनकार्ड' नामक एकांकी आदि यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि बाबा कानपुरी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं, उनका रचना-संसार मात्र एक विधा तक सीमित नही हैं।

ग्रन्थ के प्रथम आवरण पर बाबा कानपुरी की पूर्व प्रकाशित कृति 'पीछे से खुली खिड़की' के बारे में आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन द्वारा प्रदत्त सम्मति निश्चय ही बाबा कानपुरी को एक विशिष्ट कवि का गौरव प्रदान करती है।

ग्रन्थ में प्रूफ की त्रुटियां और डा० यतीन्द्र तिवारी के लेख-'एक सच्चे संवेदनशील रचनाकर का अभिनन्दन' की पुनरावृत्ति खटकती है। (पृष्ठ संख्या 61 और 80) सम्पादन एवं मुद्रण स्तर पर ग्रन्थ को और भी स्तरीय बनाया जा सकता था।

डा० इन्द्र सेंगर
30/106, गली नं० 7, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032

कबिरा खड़ा बाजार में

[पुस्तकः कबिरा खड़ा बाजार में; गज़लकारः आचार्य सारथी; संपादकः डा० नगेन्द्र; प्रकाशकः आशीष प्रकाशन, 1 / 5786, बलबीर नगर चौक, शाहदरा, दिल्ली-32; मूल्यः 135/-, प्रथम संस्करणः 1997]

हिन्दी गज़ल यात्रा का श्रीगणेश भारतेन्दु ने किया था, लेकिन उसे नया आयाम दिया था दुष्यन्त कुमार ने। एक लम्बे समय तक हिन्दी गज़ल में हौच-पौच की स्थिति बनी रही। हिन्दी का नया कवि गज़ल-लेखक और गायक बनने के लिए हाथ पैर मारने लगा। गज़ल लिखने के लिए गज़लकार बनने वाले कवियों में गज़ल और गीत का अन्तर ही नहीं समझा और उन्होंने दोहा और शेखर को एक ही समझ लिया। अधिकांश हिन्दी गज़लकार उर्दू भाषा के मर्मज्ञ नहीं है, अतः उर्दू के शब्दों को उधार में लेने की परम्परा चल पड़ी। गज़ल लेखक से अधिक चर्चित गज़ल-गायक हो रहे हैं। यह स्थिति चिन्ता का विषय है। गज़ल की पहली शर्त है कि वह गज़ल बनी रहे। चाहे उसे किसी भाषा में लिखा जाये। हिन्दी गज़ल का भेद केवल लिपि का है।

इस पृष्ठभूमि में गज़ल संग्रह "कबिरा खड़ा बाजार में" की चर्चा की जा सकती है। हिन्दी गज़ल को आचार्य सारथी ने नये आयाम दिये हैं। उनकी गज़लों में फक्कड़पन , भाषा की नम्रता और भावों की गहराई है। गज़लों में दुख का स्पन्दन है। उनकी गज़लों से यह पता चलता है कि कबीर के जीवन के कटु अनुभवों को उन्होंने प्रतीक और भावों के रूप में ग्रहण किया है, अतः सारथी के यहां—**"दिन सुख-दुख के धागों से मन की चादर बुनते हैं।"**

आचार्य सारथी ने जन्मना जुलाहा हैं न कर्मणा। लेकिन पीड़ा ने उन्हें कबीर बना दिया है। उनकी गज़लों को समझने के लिए फकीरी स्वभाव की आवश्यकता है। दुख उनका प्राण है **"जो "आसूं" का यार रहा, वो मेरा हकदार रहा,।"** अतः "दर्द के रिश्तों में जीवन बंट गया है"।

गुरू की तलाश में कबीर ने गंगा तट पर कई बार रेत छानी थी। उसी का परिणाम था गुरु रामानन्द का आशीर्वाद। इसी अन्दाज़ में सारथी ने जिन्दगी की रेत पर गजलें लिखीं हैं, अतः **"रोशनी मेरे लिए मझधार साहिल हो गया"** यदि भाषा का फक्कड़ी रूप गज़लों में देखना है, तो सारथी की गज़ले पढ़िए।

अर्थ शब्द के भीतर हैं
हम-तुम अक्षर अक्षर हैं।

कबीर अपनी ज़मीन की उपज थे। यह स्वरूप उनकी रचनाओं में देखा जाता है। आचार्य सारथी का अनुभव भी कुछ इसी तरह का है—

खेतों की पगडण्डी से
महानगर फिर हारेगा।
तुझको तेरे भीतर से
तेरा गांव पुकारेगा।

"सबका ध्यान सहर में है, रात हमारे घर में है।"

कबीर ज़िन्दगी के हलाहल का नाम है। जन्म, जाति, वर्ण, नाम, समाज एवं गुरू अपेक्षाओं ने उनके जीवन को धारदार बना दिया था। आचार्य सारथी को भी अपनी गज़लों में इसी दर्द का अहसास है—

"कितने दर्द जुटाते हैं, तब थोड़ा सा गाते हैं।"

उनकी गज़लों में मानवीय संवेदनाओं की भरमार है—

"आदमी गूंगा हुआ है आज हंगामों के बीच।"

आज के युग में कबीर और गांधी आउट आफ फैशन हो गये हैं लेकिन आचार्य सारथी में खुद्दारी की बू है। **"जिनका लहू उबलता हो, वो परचम की बात करें।"** कबीर साहित्य में माटी का अपना दर्शन है सारथी भी मिट्टी से जुड़े गज़लकार हैं। **"इन्सां गीली मिट्टी-सा बनता है, मिट जाता है।"**

(पृष्ठ 2 पर जारी)

सीमित साधनों में जीवनयापन करने वाले कवि कबीर केवल अपने पुत्र 'कमाल' से हारे थे। एक ऐसा ही अहम प्रश्न गज़लों में **"मेरे बच्चों मत पूछो, मैंने हिम्मत हारी क्यूं।"**

आचार्य सारथी ने अपनी गज़लों में शब्दों के नये प्रयोग भी किये हैं—

"ये मिट्टी का खिलौना ज़िन्दगी को,
महज मिटटी समझ कर जी रहा है।"
"लुटेरों से बचा खुद को मुसाफिर,
बहुत नजदीक थाना आ गया है।"
"उसको एक नज़र देखा है,
जैसे गुलमोहर देखा है।"

कबीर काशी छोड़कर मगहर क्यों गए?

आचार्य सारथी भी अपने गांव चमरौआ को छोड़कर दिल्ली आये हैं। यह ज़मीर की बात है। "अशरीरी सौन्दर्य से प्रभावित उनकी गज़लों में कबीरी चादर का रंग बदला-बदला मिलेगा। कबीरी संघर्षों के प्रतीक आचार्य सारथी का अनुभव है—

"मैं खुद सबमें बोला था।"

समय ने उन्हें तराश दिया है। आचार्य सारथी ने इस संग्रह के माध्यम से हिन्दी गज़लों को एक पहचान दी है। लेकिन लोगों ने क्या उन्हें गम्भीरता से लिया है? आखिरी समय तक लोगों ने कबीर को भी नहीं पहचाना था। वे हिन्दू थे या मुसलमान? वे कवि थे या समाज सुधारक थे? काशी छोड़कर मगहर क्यों गये? आचार्य सारथी को भी कुछ इसी तरह के दर्द मिलें हैं। लेकिन उनकी तमन्ना है—

"मुझको गले लगाकर कोई
काश किसी दिन अपना कहता।"

हरि शंकर शर्मा,
बी० ई० बाजार, बरेली (उ० प्र०)

नारीत्व

पुस्तक का नामः नारीत्व, लेखकः शान्ति कुमार स्याल, प्रकाशकः आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 प्रथम संस्करणः 1998, मूल्यः 100/-

अद्वितीय गुणों की खान, विलक्षणीय चरित्र की स्वामिनी, ममतामयी मूर्ति और कोमलहृदयी नारी का इस पुरूष प्रधान समाज में एक विशेष और महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वास्तव में नारी के अस्तित्व के बिना इस सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

श्री शान्ति कुमार स्याल की हाल ही में प्रकाशित पुस्तक "नारीत्व" में नारी के गुणों की सर्वांगीण व्याख्या की गई है। इससे पूर्व श्री स्याल द्वारा नारी पर ही एक अलग पुस्तक "नारी मुक्ति संग्राम" प्रकाशित की गई है, जिसकी चतुर्मुखी सराहना और प्रशंसा हुई है। कवियों, लेखकों और साहित्यकारों ने नारी के अलग-अलग रूपों की व्याख्या की है। किसी ने इसे अबला कहा है, किसी ने इसे श्रद्धा का पात्र बताया है और किसी ने इसे वीरांगना के रूप में चित्रित किया है। प्रस्तुत पुस्तक में नारी में छिपी ममता, धर्मपरायण नारी, नारी का आदर्श रूप, प्रशासिका के रूप में नारी और राष्ट्र निर्माण में नारी आदि विषयों का निरूपण किया गया है। नारी के आदर्श रूप और उसके बहुआयामी चरित्र की व्याख्या करते हुए श्री स्याल ने महाभारत, मनुस्मृति, श्री स्कन्दपुराण, ऋग्वेद और रामचरित मानस आदि ग्रंथों से अनेक उदाहरण पाठकों के सामने प्रस्तुत किए हैं। नारी को ममता की देवी के रूप में निरूपित किया है और यह उल्लेख किया है कि नारी सामाजिक मूल्यों के अनुरूप अपनी संतान के मानसिक विकास करने, उसे सदाचारी, चरित्रवान, साहसी, बुद्धिजीवी, देशप्रेमी, पराक्रमी और तेजस्वी बनाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहती है।

आज की नारी अपने हितों के लिए संघर्षरत है। वह सर्वदा अपने परिवार, अपने समाज और अपने देश के लिए कुर्बानी देने हेतु प्रेरणा प्रदान करने की द्योतक रही है। क्रांतिकारी और स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी श्री राम प्रसाद बिस्मिल का उदाहरण देते हुए उन्होंने लिखा है कि जब उनकी माता उन्हें जेल में मिलने गई तो वे अपनी माताश्री को देखकर रो पड़े, परन्तु माताश्री बिना विचलित हुए पुत्र की आंखों में निहारते हुए बोली "मैं तो समझती थी कि मेरा पुत्र इतना बहादुर है कि उसके शौर्य के सामने अंग्रेजी हकुमत थर्राती है, लेकिन तुम तो रो रहे हो, मौत से डर लगता है क्या?" बिस्मिल ने कहा "मां, मैं मौत से नहीं डरता बल्कि मुझे तो तुम्हारी ममता रूला रही है।" माताश्री ने कहा "लेकिन बेटे, देशभक्तों के लिए अपनी एक मां का कोई महत्व नहीं रह जाता। उसके लिए तो देश की सभी जननियां उनकी माएं हैं।" बिस्मिल ने अपने आंसू पोंछकर कहा, 'तुम ठीक कहती हो मां।"

हिंदू समाज में नारी की उत्पत्ति लक्ष्मी के समान मानी जाती है और हिंदू धर्म में कोई भी धर्मिक अनुष्ठान तब तक पूर्ण नहीं माना जाता जब तक कि उस कृत्य में नारी की भागीदारी अथवा सहयोग प्राप्त न हो। डा० बाबा साहब अम्बेडकर ने नारियों के बारे में कहा था, प्रत्येक समाज और देश का दर्जा वहां की स्त्रियों के स्तर पर निर्भर करता है, जिस देश में स्त्रियों का मान और सम्मान होता है वह देश और समाज, विश्व में सभी अर्थों में प्रगतिशील माना जाता है। राष्ट्र निर्माण के प्रत्येक कार्य में नारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आज नारी एक कुशल प्रशासिका, प्रबंधक, संचालक और निर्णायक हो सकती है। विश्व में ऐसी नारियों के अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं।

पुस्तक में नारी के सकारात्मक गुणों का उल्लेख किया गया है, परन्तु नारी के नकारात्मक पहलुओं को लेखक ने नहीं छुआ। इसका उल्लेख उन्होंने स्वयं पुस्तक की भूमिका में करते हुए पाठकों को यह बताने का प्रयास किया है कि नारी के नकारात्मक गुणों का बखान करके वे उसके साथ अत्याचार नहीं करना चाहते। इस संबंध में नारी के प्रति स्वयं लेखक की परोक्ष मानसिक वृति का संकेत मिलता है। मैं श्री स्याल को बहुत करीब से जानता हूं। नारी के प्रति उनके मन में सदैव श्रद्धा और सम्मान रहा है। यही कारण है कि वे अपनी पुस्तक में नारी के नकारात्मक पक्ष को निरूपित नहीं करना चाहते और ऐसा करके उसे ठेस नहीं पहुंचाना चाहते। मैं उनके इस प्रयास को सर्वाधिक सफल प्रयास मानता हूं कि अपनी इस प्रस्तुत पुस्तक में नारी के रूप में एक ऐसी भारतीय महिला का सर्वांगीण चित्रण पाठकों के सामने प्रस्तुत कर दिया है जिसे अन्यत्र पाना न केवल मुश्किल है, बल्कि दुलर्भ भी है। इस सफल प्रयास के लिए मैं श्री शान्ति कुमार स्याल को साधुवाद देता हूं और यह अपेक्षा करता हूं कि वे भविष्य में भी नारी के समक्ष इस समाज में आने वाली अनके कठिनाइयों, मुसीबतों और समस्याओं का उल्लेख करते हुए एक नया ग्रंथ प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

फिर भी, जो कुछ श्री स्याल ने प्रस्तुत पुस्तक में बयान किया है, उसी के संदर्भ में यहां यह उल्लेख करना सर्वथा संगत होगा कि जहां आज की नारी का मानसिक विकास हुआ है, वह समाज में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है, फिर भी आज के परिप्रेक्ष्य में यदि भारत की स्थिति को ही लिया जाए तो विशेषतः बंगाल, उड़ीसा और बिहार के इलाकों में विधवा और बाल विधवा जिस प्रकार का जीवन बसर कर रही हैं, उसके लिए हम अपने समाज को ही दोषी समझते हैं, नारी को नहीं। परन्तु अपने जीवन यापन के लिए इन विधवाओं को काशी, प्रयाग और पुरी जैसे धार्मिक स्थलों में भिक्षावृति और वेश्यावृति को अपनाना पड़ रहा है जो हमारे समाज पर एक अभिशाप और कलंक है। आज भी नारी को वह स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है जो पुरूष को मिली हुई है। वह पति, भाई और अपने पुत्र के अधीन है और उनकी इच्छा के विपरीत कोई कार्य नहीं कर सकती। उसे इस पुरूष प्रधान समाज में कोई भी निर्णय लेने से पूर्व पुरूष की ओर ताकना पड़ता है और उनके लिए गए निर्णय के अनुसार ही विचरण करना पड़ता है।

—सुरेंद्र लाल मल्होत्रा,
उप संपादक।

कार्यशाला

विजया बैंक, अहमदाबाद,

क्षेत्रीय कार्यालय, विजया बैंक, अहमदाबाद की ओर से दिनांक 10, 19 व 20 फरवरी, 98 को लिपिकीय संवर्ग के लिए एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन वरिष्ट प्रबन्धक श्री ए॰ सी॰ त्रिवेदी ने किया। श्री त्रिवेदी ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि थोड़े से प्रयास से हिन्दी आसानी से सीखी जा सकती है और सरकारी कामकाज में इसका प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि भाषा का प्रयोग इस बात पर निर्भर करता है कि हम कितने जागरूक है न कि इस बात पर कि हमें कितनी अच्छी हिन्दी आती है।

कार्यशाला के अंत में लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया था जिसमें वेरावल शाखा के श्री नारायण जेठवानी को प्रथम, अलकापुरी बड़ौदा शाखा की कुमारी के॰ कामाक्षी को द्वितीय व पोरबन्दर शाखा के श्री जी॰ वी॰ बी॰ मूर्ति को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

कार्यशाला का संचालन राजभाषा अधिकारी श्री दिनेश कुमार मित्तल ने किया।

इंडियन बैंक, अहमदाबाद

इंडियन बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद (गुजरात) की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में बैंक के अधिकारी एवं कर्मचारी वर्ग के लिए तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुल ग्यारह प्रतिभागी एकत्र हुए। दिनांक 15.1.98 को कार्यालय के सहायक महा प्रबंधक द्वारा कार्यशाला का उद्घाटन किया गया।

दिनांक 17.1.98 को कार्यशाला के समापन समारोह के अवसर पर हमारे क्षेत्रीय कार्यालय के मुख्य प्रबंधक विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर समस्त प्रतिभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हमारा यह कार्यक्रम तभी सफल माना जाएगा जब आप अपनी-अपनी शाखाओं में हिंदी में काम करने व मानसिकता बनाकर यहां से जाएंगे, इस अवसर पर विजया बैंक, कार्पोरेश बैंक और पंजाब नेशनल बैंक, के अनुभवी एवं वरिष्ठ हिंदी अधिकारि को व्याख्यान देने हेतु विशेष रूप से आमंत्रित किया गया।

इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि हमारे बैंक के समा प्रतिभागियों पर उनके व्याख्यानों को ऐसी प्रभावपूर्ण प्रतिक्रिया हुई कि राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी जो संशयपूर्ण एवं संकुचित दृष्टि थी, उ व्यापक बनाने व दबी हुई राष्ट्रीय भावनाओं को उजागर करने के साथ-सा वे उनके भीतर राजभाषा हिंदी की गरिमा का दीप आलोकित करने में पू रूप से सफल रहे।

कुल मिलाकर कार्यशाला पूर्णतः सफल रही। अंत में हिंदी अधिकारी आभार-प्रदर्शन के साथ ही यह कार्यशाला संपन्न हुई।

लक्षद्वीप

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, राष्ट्रीय विमानपत्तन प्रभाग, दक्षिणी क्षे के अगात्ती हवाईअड्डा कार्यालय में दि॰ 22.12.97 से 26.12.97 त हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रशिक्षणार्थियों को राजभा संबंधी उपयोगी और प्रभावी जानकारी देने के उद्देश्य से कार्यशाला में 1 व्याख्यानों का सुनियोजन किया गया। हिन्दी कार्यशाला के संयोजन व कार्य दक्षिणी क्षेत्र के हिन्दी अधिकारी डॉ॰ चन्द्रपाल द्वारा किया गय

हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन समारोह अगात्ती हवाई अड्डा कार्याल के विशिष्ठ अतिथि कक्ष में दि॰ 20.12.97 को आयोजित किया गय उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता दक्षिणी क्षेत्र के क्षेत्रीय कार्यपाल निदेशक श्री एस॰सी॰ गोस्वामी द्वारा की गई। इस अवसर पर कार्यालय सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लि

सरकार द्वारा अनेक उपबंध, नियम और आदेश जारी किए गए हैं। इन नियमों और आदेशों का अनुपालन करना हम सब का कर्तव्य है। अतः हमें राजभाषा कार्यान्वयन के कार्य को गंभीरतापूर्वक करना चाहिए। भारत के महामहिम राष्ट्रपतिजी केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में सभी कार्य हिन्दी में करने के आदेश कभी भी जारी कर सकते हैं। अतः हमें उन आदेशों का अनुपालन करने के लिए स्वयं को तैयार रखने की आवश्यकता है। इस तैयारी के लिए ही लक्षद्वीप हवाईअड्डा कार्यालय में हिन्दी में कार्य करने से संबंधित सभी आशंकाओं और समस्याओं का हल अवश्य निकालें और प्रशिक्षण के बाद अपनी सीट पर पहुंचकर अधिक—से—अधिक कार्य हिन्दी में करें। उन्होंने आशा व्यक्त की कि हिन्दी कार्यशाला से प्रशिक्षणार्थियों को हिन्दी में कार्य करने की दक्षता अवश्य प्राप्त होगी।

हिन्दी कार्यशाला में राजभाषा संबंधी संवैधानिक उपबंध, नियम एवं तत्संबंधी अन्य महत्वपूर्ण आदेशों का व्याख्यान दक्षिणी क्षेत्र के हिन्दी अधिकारी डॉ॰ चन्द्रपाल द्वारा दिया गया। हिन्दी की मानक वर्तनी, छुट्टी संबंधी मामलें, आवेदन लिखना, परिभाषिक शब्दावली आदि विषयों के व्याख्यान स्थानीय शासकीय विद्यालय के हिन्दी अध्यापक श्री फतेहउल्ला द्वारा दिए गए। अन्य सभी व्याख्यान भी दक्षिणी क्षेत्र के हिन्दी अधिकारी और स्थानीय शास्कीय विद्यालय के हिन्दी अध्यापक द्वारा प्रभावी ढंग से दिए गए। सभी व्याख्यानों के अंत में प्रशिक्षणार्थियों को कार्यालयीन कार्य से संबंधित अभ्यास कार्य आदि देने की व्यवस्था की गई। कार्यशाला के अंतिम दिन प्रशिक्षणार्थियों की परीक्षा भी ली गई। जिसके आधार पर श्रेष्ठ प्रशिक्षणार्थी को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार देने के लिए चुना गया।

अगात्ती हवाईअड्डा कार्यालय में हिन्दी कार्यशाला का समापन समारोह दि॰ 26.12.97 को अपराह्न 16.00 बजे आयोजित किया गया। इस अवसर पर अगात्ती लक्षद्वीप के गणमान्य नागरिक भी उपस्थित थे। समापन समारोह की अध्यक्षता अगात्ती हवाईअड्डा कार्यालय के वरिष्ठ विमानक्षेत्र अधिकारी श्री एम॰ अयुब द्वारा की गई। हिन्दी कार्यशाला समापन समारोह के अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों द्वारा भी विचार व्यक्त किए गए। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने हिन्दी कार्यशाला प्रशिक्षण को अत्यंत उपयोगी और हिन्दी में कार्य करने के लिए विशेष सहायक बताया। हिन्दी कार्यशाला के प्रशिक्षणार्थियों ने कार्यालय में सभी कार्य हिन्दी में करने का संकल्प व्यक्त किया। अगात्ती हवाईअड्डा कार्यालय के वरिष्ठ विमानक्षेत्र अधिकारी द्वारा हिन्दी कार्यशाला के श्रेष्ठ प्रशिक्षणार्थी का पुरस्कार अग्निशमन एवं बचाव प्रचालक श्री शौक़तअली को दिया गया। वरिष्ठ विमानक्षेत्र अधिकारी ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि अगात्ती लक्षद्वीप में इस पहली हिन्दी कार्यशाला के आयोजन से हमारी सभी आशंकाएं और हिन्दी में कार्य करने की झिझक आदि दूर हो गई है और हम सब को हिन्दी में कार्य करने की आदत डालनी होगी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों से अनुरोध किया कि वे हिन्दी कार्यशाला प्रशिक्षण में प्राप्त जानकारी का अधिक से अधिक उपयोग करें और हिन्दी कार्य को अधिक से अधिक बढ़ावा दें। हिन्दी अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन सहित हिन्दी कार्यशाला का समापन हुआ।

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग महालेखाकार (लेखा परीक्षा), राजस्थान

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) प्रथम एवं द्वितीय की वर्ष 1997-98 की चतुर्थ हिन्दी कार्यशाला दिनांक 02.03.98 से 06.03.98 तक आयोजित की गई।

इस कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर श्री प्रभाकर जोशी, हिन्दी अधिकारी ने प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए हिन्दी भाषा की व्यवहारिकता एवं किस प्रकार उसे अपने निजी एवं कार्यालय के कार्यों में प्रयोग किया जा सकता है आदि के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किए। उनके द्वारा इस तथ्य पर जोर दिया गया कि यद्यपि हिन्दी के प्रयोग में प्रारम्भ में कुछ कठिनाइयां आती हैं लेकिन निरन्तर अभ्यास एवं लगन से इन कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है।

एक सप्ताह तक चली इस पूर्णकालिक कार्यशाला में 22 प्रशिक्षणार्थियों को 30 कार्यघण्टों का गहन प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया। प्रशिक्षकों द्वारा हिन्दी के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों का निराकरण किस प्रकार किया जा सकता है, के बारे में जानकारियां दी गई। 15 प्रशिक्षकों के द्वारा कार्यालय के विभिन्न समूहों की कार्यप्रणालियों तथा उनमें निहित हिन्दी के प्रभावी प्रयोग के अवसरों के बारे में प्रशिक्षणार्थियों को जानकारियां दी गई। प्रशिक्षण के दौरान राजभाषा अनुभाग के सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी श्री देवेन्द्र मोहन शर्मा द्वारा सामान्य लेखा परीक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में हिन्दी के प्रयोग सम्बन्धी जानकारियां देते हुए हिन्दी में कार्य करने सम्बन्धी विभिन्न प्रोहत्साहन योजनाओं से अवगत कराया।

दिनांक 6.3.98 को समापन समारोह में श्री आर॰पी॰ कटारिया, ने सभी प्रशिणार्थियों को उत्साहपूर्वक कार्यशाला में भाग लेने पर अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए कार्यालय में हिन्दी के अधिक से अधिक प्रयोग पर बल दिया। उनके द्वारा हिन्दी भाषा की सरलता तथा अंग्रेजी भाषा के उपयोग में उत्पन्न कठिनाइयों पर भी चर्चा की गई। उनके द्वारा सभी प्रशिक्षणार्थियों से यह आशा की गई कि भविष्य में प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी कार्यालय के समस्त कार्य हिन्दी में ही करेंगे। कार्यक्रम के अन्त में हिन्दी अधिकारी द्वारा अनुरोध किया गया कि अगर सभी प्रशिक्षणार्थी अपने मन में यह संकल्प कर ले कि वे कार्यालय का सभी कार्य हिन्दी में ही करेंगे तो राजभाषा हिन्दी का प्रयोग स्वतः ही बढ़ता जायेगा।

इस समारोह में श्री आर॰पी॰ कटारिया द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। अन्त में सभी को धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी कार्यशाला का दिनांक 6.3.98 को समापन हुआ।

आकाशवाणी चेन्नै-4

कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने की रूचि बढ़ाने के लिए इस केन्द्र में दिनांक 23.2.98 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गयी।

कार्यक्रम की शुरूआत में हिंदी अधिकारी ने उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत किया। श्री बी०आर० कुमार, केन्द्र निदेशक ने अपने उद्घाटन भाषण में कर्मचारियों से हिंदी में कार्य करने के लिए अनुरोध किया। अधीक्षक अभियंता ने अपने भाषण में कर्मचारियों से यह अनुरोध किया कि इस अवसर का सदुपयोग करते हुए अपने दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

कार्यशाला के पूर्वाह्न सत्र में दक्षिण रेलवे के उप मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री अशुतोष मनुज ने संविधान में राजभाषा हिंदी से संबंधित प्रावधानों पर भाषण दिया। उन्होंने वार्षिक कार्यक्रम के मुख्य अंशों भी विचार विर्मश किया।

अपराह्न के सत्र में, श्रीमती गीता जोन्स, सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना ने सामान्य व्याकरण पर भाषण दिया। उन्होंने प्रतिभागियों से अभ्यास भी करवाया।

प्रसार भारती आकाशवाणी : भुज (कच्छ)

आकाशवाणी, भुज द्वारा दिनांक 19.2.98, 20.2.98 और 23.2.98 तक त्रिदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला की शुरूआत में अपने वकतव्य में केन्द्र निदेशक श्री जयन्तीलाल जोशी ने उपस्थित कर्मचारियों का स्वागत करते हुए इस कार्यशाला के प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला का उद्देश्य न तो कर्मचारियों को देवनागरी लिपि सिखाना है और न ही अनुवाद की कला। मूल उद्देश्य तो सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली राजभाषा के व्यावहारिक पक्ष को उजागर करना है, जिससे कार्यशाला में सम्मिलित होनेवाले कर्मचारी स्वतः प्रारूप, टिप्पणी, मसौदे वगैरह लिख सकें।

अपनी बात को विशेष रूप से स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि यद्यपि हमारे कार्यालय के अस्सी प्रतिशत से ज्यादा कर्मचारी राजभाषा का कार्यासाधक ज्ञान रखते हैं व बहुत से अधिकारी एवम् कर्मचारी प्रावीण है तथापि कार्यालयीन कामकाज में उत्तरोत्तर प्रगति की स्थिति हॉसिल करने के लिए यह जरूरी है कि सभी कर्मी राजभाषा के प्रयोग संबंधी संशय एवम् झिझक दूर कर इसमें कार्यरत हों। इसी आशय को लेकर इस कार्यशाला का आयोजन है।

राजभाषा का काम जनता एवम् सरकार के बीच सेतू बनना है। अतः इसके बारे में कार्यालयों में लागू भाषा प्रावधानों की जानकारी से कर्मचारियों को भली भांति परिचित होना चाहिए। इसलिए भी यह कार्यालय समय समय पर ऐसी कार्यशालाएं आयोजित करता आया है और आगे भी करता रहेगा।

तत्पश्चात् आपने प्रथम दिवसीय कार्यशाला के अतिथि वक्ता डॉ० सुरेन्द्र शर्मा का परिचय देकर उनसे "केन्द्र सरकार की राजभाषा नीति" विषय पर व्याख्यान देने के लिए प्रार्थना की।

डॉ० शर्मा ने बड़े रोचक ढंग अपने विषय का निर्वाह करते हुए सरकार की राजभाषा नीति एवम् उसके कार्यान्वयन में रत कर्मचारियों की भूमिका को उजागार किया। आपने सरल हिन्दी के प्रयोग के साथ-साथ सही शब्दों के चयन पर भी बल दिया। इनकी चिताकर्षक शैली ने उपस्थित कर्मचारियों का मन जीत लिया।

दूसरे दिन दिनांक 20.2.98 को "पत्राचार, तार, मसौदे, प्रारूप एवम् टिप्पणी" विषय पर अपने सोदाहरण व्याख्यान में दूसरे अतिथि वक्ता श्रीयुत् वालमुकुन्द व्यासजी ने कार्यशाला में प्रतिभागी सदस्यों की शंकाओं को दूर किया। आपने प्रत्येक मद की प्रस्तुति के विभिन्न तरीकों पर प्रकाश डालते हुए प्रस्तुति वैविध्य एवम् उनके अव्याप्ति तथा अतिव्याप्ति दोषों का परिहास कैसे किया जाय, इसके बारे में बताया।

कार्यशाला के तीसरे व अंतिम दिन दिनांक 23.2.98 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव एवम् देना बैंक के हिन्दी अधिकारी श्री शिवशंकर वर्मा ने "राजभाषा कार्यशाला क्यों? व कैसे? विषय पर अपनी चुटीली एवम् सधी हुई शैली में मननीय तथ्य रखें।

इस त्रिदिवसीय कार्यशाला में कार्यालय के अधिकारियों एवम् कर्मचारियों ने सोत्साह हिस्सा लिया।

प्रशिक्षुओं के उत्तरोत्तर बढ़ते उत्साह एवम् राजभाषा में कार्य करने के उनके रूझान की अध्यक्ष महोदय ने भूरी-भूरी प्रशंसा की एवम् आपने राजभाषा के काम को राष्ट्रसेवा का ही एक प्रकार बताते हुए सभी से इसके लिए सदैव समर्पित रहने का साग्रह अनुरोध किया। साथ ही साथ कार्यशाला के सुयोजन एवम् साफल्य के लिए आपने सभी सम्बद्ध कर्मचारी/अधिकारी तथा अतिथि वक्ताओं को धन्यवाद दिया।

"राजभारती में साथियों
कार्यालय का काम रहे।
अपने कर्तव्यों के जरिए
भारत माँ का नाम रहे।"

भारतीय जीवन बीमा निगम मण्डल कार्यालय, वाराणसी

भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय, वाराणसी द्वारा दिनांक 19 जनवरी 1998 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन मण्डल परिसर स्थित सम्मेलन कक्ष में किया गया। इस कार्यशाला में अधीनस्थ शाखाओं में राजभाषा कार्यान्वयन से सम्बन्धित कर्मचारियों को आमंत्रित किया गया था। केवल सैदपुर शाखा व बांसडीह शाखा को छोड़कर शेष सभी शाखाओं के नामित प्रतिनिधियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला का उद्घाटन, वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक के मुख्यालय से बाहर रहने के कारण प्रभारी श्री पुरूषोत्तम चौबे, प्रबन्धक (विक्रय) सं०प्र० द्वारा दिनांक 19 जनवरी, 98 को पूर्वान्ह 10.30 बजे किया गया। अपने उद्बोधन में श्री चौबे ने कार्यालय कार्य अधिकाधिक हिन्दी में ही करने का अनुरोध किया। मण्डल कार्यालय, वाराणसी को राजभाषा अध्यक्षीय शील्ड से विभूषित किए जाने पर हर्ष व्यक्त किया और कहा कि हमें आगे भी इसी तरह मण्डल को सर्वोच्चता के शिखर पर बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहना है।

उद्घाटन एवं परस्पर परिचय कार्यक्रम के पश्चात् श्री जगदीश नारायण राय ने कार्यशाला में आये प्रतिनिधियों के समक्ष भारत सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम, 1963, राजभाषा नियम, 1976 यथा संशोधित, 1987, राजभाषा संकल्प, 1968 आदि पर विशद एवं प्रभावी चर्चा की। श्री राय ने मण्डल कार्यालय, वाराणसी में निगम की स्थापना के समय हिन्दी की स्थिति से लेकर मण्डल किस प्रकार क्रमशः राजभाषा कार्यान्वयन के दुरूह पथ पर चलता हुआ। अध्यक्षीय शील्ड जैसे सर्वोच्च, सम्मान तक पहुंचा, का रोमांचक शब्दचित्र प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् अतिथिवक्ता के रूप में राज्य हिन्दी संस्थान, वाराणसी के सहायक निदेशक डा० मुन्नी लाल विश्वकर्मा को व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया गया। उन्होंने "हिन्दी भाषा एवं नागरी लिपि की विशिष्टता तथा पत्राचार के विविध प्रारूप एवं उनका व्यवहार" विषय पर प्रतिभागियों को विशद जानकारी दी। अपने व्याख्यान में उन्होंने देवनागरी लिपि की सरलता, सहजता एवं वैज्ञानिकता का विशद निरूपण किया तथा स्वर एवं व्यंजनों के बारे में शासन द्वारा निर्धारित मानकीकरण के बारे में बताया। कार्यालयी पत्राचार जैसेः— शासकीय, अर्थशासकीय एवं सामान्य पत्राचार के सम्बन्ध में विभिन्न प्रारूप का उदाहरण सहित प्रयोग बताया।

डा० विश्वकर्मा के सम्बोधन के पश्चात् राजभाषा अधिकारी श्री विजय बहादुर लाल ने कार्यालय में किए जा रहे हिन्दी कामकाज से सम्बन्धित विभिन्न औपचारिकताओं को सम्यक ढंग से कैसे निष्पादित किया जाय, इसकी जानकारी प्रतिभागियों को दी। श्री लाल ने बताया कि शाखाओं में सब काम हिन्दी में होते हुए भी अपेक्षित औपचारिकताओं के अभाव में हमें न केवल निरीक्षण दल के विपरीत टिप्पणियों का सामना करना पड़ता है बल्कि हम तमाम प्रकार के पुरस्कारों, सुविधाओं से भी बंचित हो जाते हैं।

आकाशवाणी, कटक

आकाशवाणी, कटक केंद्र द्वारा दिनांक 17.2.98 से 19.2.98 तक एक त्रिदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में आकाशवाणी, कटक केंद्र के अधिकारियों, कर्मचारियों के साथ ओड़िशा स्थित अन्य आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन दिनांक 17.2.98 को आकाशवाणी, कटक केन्द्र के निदेशक, श्री हृषी केश-पाणि ने किया। उन्होंने प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हिन्दी हमारी राजभाषा है। यह सारे हिन्दुस्तान में समझी और बोली जाती है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को स्वागत करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति को सही ढंग से अनुपालन को उपदेश दिया।

उद्घाटन सत्र में सम्माननीय अतिथि आकाशवाणी के अधीक्षक अभियंता, श्री राम नारायण चौधरी ने कहा कि, हिन्दी हमारी राजभाषा होने के नाते हम सबको हिन्दी में कार्यालययीन काम-काज करना चाहिए। दिनांक 17.2.98 को उद्घाटन सत्र के अवसर पर भुवनेश्वर के अध्यापक श्री लक्ष्मीधर दास ने प्रशिक्षार्थियों को हिन्दी व्याकरण पर सम्यक ज्ञान प्रदान किया।

दिनांक 17.2.98 के दूसरे सत्र में हिन्दी शिक्षण योजना कटक की प्राध्यापिका डॉ० वीरोत्तया पावर ने हिन्दी टिप्पण लेखन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने टिप्पण विभिन्न लेखन के पहलुओं पर प्रकाश डाला तथा कुछ टिप्पणियों का उदाहरण भी प्रस्तुत किया।

दिनांक 18.2.98 प्रथम सत्र में हिन्दी शिक्षण योजना, कटक की प्राध्यापिका डॉ० वीरोत्मा पातर ने हिन्दी व्याकरण पर व्याख्यान दिया। उसी दिन दूसरे सत्र में लघु उद्योग सेवा संस्थान, कटक के हिन्दी अधिकारी श्री घनश्याम तांती ने हिन्दी प्रारूप-लेखन पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने पत्राचार, ज्ञापन, परिपत्र, आदेश आदि पर चर्चा की। उन्होंने प्रारूप के कई नमूने भी पेश किए।

दिनांक 19.2.98 को प्रथम सत्र में आकाशवाणी, कटक केंद्र के हिंदी

अधिकारी श्री बासुदेव सिंह ने हिन्दी साहित्य पर संक्षिप्त परिचय बड़े ही रोचक ढंग से प्रदान किया।

दिनांक 19.2.98 को दूसरे सत्र में कार्यशाला का समापन समारोह का आयोजन किया गया। प्रारम्भ में हिन्दी अधिकारी श्री बासुदेव सिंह ने सबका स्वागत किया एवं तीन दिन की कार्यशाला का विवरण सभा में प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, कटक के सहायक केन्द्र निदेशक, श्री मुरलीधर साहू। उन्होंने कहा कि, तीन दिन कार्यशाला में हमने जो ज्ञान अर्जित किया हैं उसे कार्यालय में प्रयोग में लाना चाहिए। । उन्होंने इस ज्ञान को जीवन के हर क्षेत्र में प्रयोग में लाने पर ज्यादा जोर दिया।

समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रेवेंशा महाविद्यालय, कटक के हिन्दी विभागाध्यक्ष, रीडर, डॉ॰ अजय पटनायक ने कहा कि, हिन्दी हमारी राजभाषा है। एक आजाद राष्ट्र के लिए एक संविधान, एक झंडा, एक राष्ट्रगान एवं एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि, आजादी से पहले हिंदी राष्ट्र की भाषा रही है। और आज भी है। हिन्दी देश को एक सूत्र में पिरोने की माध्यम है। उन्होंने कहा लाठी चार्ज, घेराव आदि कई शब्द हिंदी से भी अंग्रजों ने लिए हैं। उसी प्रकार सारी भाषाओं से शब्द लेकर हिंदी समृद्ध हुई है। आप लोग कार्यशाला में प्रशिक्षित हुए हैं। मैं कार्यशाला को यज्ञशाला मानता हूं। इसमें पाये ज्ञान को जरूर व्यवहार में लाने की कोशिश करें।

☆☆☆

(नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का नारा "चलो दिल्ली" पर आधारित गीत)

देहली चलें, देहली चलें, देहली चलेंगे
नौजवाने हिन्द हम देहली चलेंगे
हां, हां हम दिल्ली चलेंगे

मज़हब के इख़लाफ़ थे सारे वह हट गये
बन कौमी हिंदी एक सब, मैदां में डट गये
नारा "आज़ादी" बोलते हम आगे बढ़ेंगे
हां, हां हम दिल्ली चलेंगे
ठहरे न कोई सामने हम ऐसे चलेंगे, हां हम ऐसे चलेंगे
देहली चलें, देहली चलें, देहली चलेंगे
हां, हां हम दिल्ली चलेंगे
दुख-दर्द औ मुसीबत को पार करेंगे
गर मौत सर पर आ गई तो भी न डरेंगे
नेताजी के फरमान को हम पूरा करेंगे
हां, हां हम दिल्ली चलेंगे
आज़ाद बनकर हिन्द में, हम ऐसे चलेंगे, हां हम
ऐसे चलेंगे

देहली चलें, देहली चलें, देहली चलेंगे
नौजवाने हिन्द हम ऐसे चलेंगे

—रामदास

(" लोकशक्ति पुरूष नेता जी " पुस्तक से साभार)

विविधा

समाचार दर्शन

हिन्दी सॉफ्टवेअर व उसके निर्माता

संस्थान/कंपनी का नाम व पता	सॉफ्टवेअर का नाम	विवरण
1	2	3
राजभाषा विभाग, तकनीकी कक्ष, द्वितीय तल, बी-विंग लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 दूरभाषः 4619860, 4617695	लीला-हिन्दी-प्रबोध	इस सॉफ्टवेअर की सहायता से कोई भी अहिन्दीभाषी व्यक्ति कंप्यूटर की सहायता से प्रबोध स्तर तक की हिन्दी सीख सकता है। इस सॉफ्टवेअर में देवनागरी वर्ण की हिन्दी और वर्णों की रचना विधि भी इसकी मदद से सीखी जा सकती है।
सी-डेक, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे-411007 दूरभाषः 352461	जिस्ट कार्ड	जिस्ट कार्ड को किसी भी पी०सी० में लगा कर सभी अनुप्रयोग तथा कस्टम सॉफ्टवेअरों में अंग्रेजी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं में कार्य किया जा सकता है।
	जिस्ट शैल	यह जिस्ट कार्ड का एक सॉफ्टवेअर विकल्प है इसके द्वारा भी सभी अनुप्रयोग तथा कस्टम सॉफ्टवेअरों में अंग्रेजी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं में कार्य किया जा सकता है।
	जिस्ट टर्मिनल	मल्टीयूजर वातावरण में जैसे यूनिक्स / जेनिक्स ऑपरेटिंग सिस्टम के अधीन चलने वाले सभी अनुप्रयोग सॉफ्टवेअरों जैसे फॉक्सबेस, प्रोफेशनल, लिरिक्स, ओरेकल आदि में अंग्रेजी के साथ-साथ सभी भारतीय लिपियों में कार्य किया जा सकता है।
	अल्प	डॉस और यूनिक्स वातावरण में शब्द संसाधन संबंधी कार्य करने के लिए उपलब्ध है और इसके द्वारा अंग्रेजी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं में कार्य किया जा सकता है।
	आई०एस०एम०	यह विन्डोज आधारित फोन्टसबेस पैकेज है, यह विन्डोज-3.11 तथा विन्डोज-95 के अधीन चलने वाले अंग्रेजी के सभी सॉफ्टवेअरों तथा देवनागरी लिपि के अतिरिक्त 10 अन्य भारतीय लिपियों में भी कार्य करता है।

	लीप ऑफिस	लीप ऑफिस मुख्यतः भारतीय भाषाओं के लिए तैयार किया गया शब्द संसाधक पैकेज है। इसके द्वारा प्रचलित विन्डोज आधारित अधिकांश एप्लीकेशन पैकेजों जैसे पेजमेकर एम०एस० ऑफिस एक्सल आदि में भारतीय भाषाओं में कार्य किया जा सकता है। इस पैकेज में हिन्दी, मराठी तथा गुजराती लिपि में स्पैल चेकर की सुविधा भी उपलब्ध है और सभी भारतीय भाषाओं के लिए समान कुंजी-पटल उपलब्ध है जिससे उच्चारण अनुसार टाइप किया जा सकता है।
मॉड्यूलर सिस्टम प्रा०लि०, 26, इलैक्ट्रॉनिक कॉपरेटिव सतारा रोड, पुणे-411007	श्रीलिपि	यह विन्डोज आधारित फोन्टसबेस पैकेज है, यह विन्डोज-3.11 तथा विन्डोज-95 के अधीन चलने वाले अंग्रेजी के सभी सॉफ्टवेअरों के साथ देवनागरी लिपि में भी कार्य करता है। यह विन्डोज आधारित फोन्टसबेस बहुभाषी पैकेज है, इसमें कुंजीपटल और विभिन्न विन्डोज आधारित पैकजों के लिए सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसमें हिन्दी और मराठी में स्पैल चेक की सुविधा उपलब्ध है।
	रूपा	रूपा एक मूलपाठ है जो विज्ञापनदाताओं, जॉब वर्क करने वालों के लिए तथा सामग्री को भली प्रकार प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त सॉफ्टवेअर है।
	सुचिका	इस पैकेज के द्वारा अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं में समान रूप से डाटाएंट्री की जा सकती है। इसमें रूपान्तरण की सुविधा भी है।
सोनाटा सॉफ्टवेअर प्रा०लि० यह 1/4, पहला तल, ए०पी०एस०, ट्रस्ट बिल्डिंग, वुल टैम्पल, रोड, वासवनगुंडी, बेंगलूर-560019 दूरभाषः 6610330, 6610867	प्रकाशक	यह विन्डोज आधारित फोन्टसबेस पैकेज है, विन्डोज- 3.11 तथा विन्डोज-95 के अधीन चलने वाले अंग्रेजी के सभी सॉफ्टवेअरों के साथ देवनागरी लिपि में भी कार्य करता है। यह 8 फोन्टस सहित विन्डोज, मैकेनतोश, और लेन पर उपलब्ध है।
एस०सी०ई०एस० कंसलटेन्ट्स, 36/37, यमुना बिल्डिंग, 292, एल०टी० रोड, धोबी तलाऊ, मुम्बई-400002 दूरभाषः 2023240	आकृति	यह विन्डोज आधारित फोन्टसबेस पैकेज है। यह विन्डोज-3.11 तथा विन्डोज-95 के अधीन चलने वाले अंग्रेजी के सभी सॉफ्टवेअरों के साथ देवनागरी लिपि में भी कार्य करता है। इसे नेटवर्किंग वातावरण से भी प्रयुक्त किया जा सकता है।
साफ्टेक प्रा०लि०, एम-42, ग्रेटर कैलाश-2, नई दिल्ली-110048	देवबेस	यह पैकेज डी-बेस 3 प्लस के सामनांतर हिन्दी में कार्य करने के लिए उपलब्ध है। यह सिर्फ हिन्दी और अंग्रेजी में कार्य करता है।
	अक्षर	यह डॉस आधारित शब्द संसाधक पैकेज है। यह सीखने में सरल है और इसकी कमाण्ड अंग्रेजी के लोकप्रिय सॉफ्टवेअर वर्डस्टार से मिलती जुलती है।
	अक्षर फोर विन्डोज	यह विन्डोज आधारित फोन्टसबेस पैकेज है, यह विन्डोज-3.11 तथा विन्डोज-95 के अधीन चलने वाले अंग्रेजी के सभी सॉफ्टवेअरों के साथ देवनागरी लिपि में भी कार्य करता है। इसके प्रयोगकर्ता हिन्दी के पाठों में शब्दों को ढूंढने और बदलने का कार्य भी कर सकते हैं। इसमें विन्डोज 3.11 या विन्डोज-95 के अधीन एम०एस० वर्ड को चलाने की क्षमता के समकक्ष कंप्यूटरों की प्रणाली अपेक्षित है।
सॉफ्ट रिसर्च प्रा०लि०, 35/311, दूसरी मंजिल, लेगफोड रोड़, बेंगलूर-560004	शब्दरत्न सुपर	यह डॉस आधारित शब्द संसाधक पैकेज है। इसमें अक्षरों को छोटा-बड़ा करने, कोलम प्रिन्टिग की भी सुविधा उपलब्ध है।

	विन्की	यह विन्डोज आधारित फोन्टसबेस पैकेज है, यह विन्डोज-3.11 तथा विन्डोज-95 के अधीन चलने वाले अंग्रेजी के सभी लोकप्रिय सॉफ्टवेअरों के साथ देवनागरी लिपि में भी वरता है।
सुमांत डाटा प्रोडक्ट प्रा०लि०, ए-18, हौजखास, नई दिल्ली-110066 दूरभाषः 6967830	इंडिका	विन्डोज और डॉस दोनों वातावरण में कार्य करता है।
आई०आई०आर० ग्रफिक, बद्रवरपैठ, लक्ष्मी रोड, पुणे-411002	शब्देश	पी०सी० और मैक का डी०टी०पी० सौफ्टवेअर है।
आर०के० कंप्यूटर रिसर्च फाउंडेशन, बी-36, जगपुर एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110014 दूरभाषः 4646051	सुलिपि	यह सॉफ्टवेअर डीबेस, लोटस, वर्डस्टार वलीपर फोक्सबेस, फोक्सप्रो, बेसिक तथा तैयार एप्लीकेशन साफ्टवेअर जैसे, वेतनपर्ची, वित्तीय खाता लेखन, विश्वविद्यालय इत्यादि के माध्यम से द्विलिपीय रूप से हिन्दी-अंग्रेजी रूप में शब्द संसाधन की क्षमता प्रदान करता है।
टाटा आई०पी०एम० लि०, गोल्डन एन्कलेव, एअरपोर्ट रोड, बेंगलूर-560014	हिन्दी पीसी डॉस	भारत में भाषा संबंधी अवरोध दूर करने के लिए टाटा आईबीएम ने एक द्विभाषी ऑपरेटिंग सिस्टम हिन्दी पीसी डॉस बनाया है जिसके माध्यम से अब कंप्यूटर को हिन्दी में भी कमाण्ड दी जा सकती है।
वी० सॉफ्ट प्रा० लि०, 217/शानि, इंडस्ट्रीय एक्सटेट, एस०एन०रोड, मुलन्द पश्चिम, मुम्बई दूरभाषः 5691642	ए०पी०सी० 2.0	यह विन्डोज आधारित फोन्टसबेस पैकेज है, यह विन्डोज-3.11 तथा विन्डोज-95 के अधीन चलने वाले अंग्रेजी के सभी सॉफ्टवेअरों के साथ देवनागरी लिपि में भी कार्य करता है। इस साफ्टवेअर के द्वारा पाठ प्रविष्टि सचिवालय की आवश्यकताओं को पूरा करता है। इसमें स्प्रैडशीट की सुविधा उपलब्ध है।
वैदिका सॉफ्टवेअर प्रा०लि०, 6, मैफेयनर रोड, 41-ओनर्स रोड, कलकत्ता-700049 दूरभाषः 2473810	फैक्ट	यह संपूर्ण बहुभाषी व्यापार एकाउंटिंग पैकेज है। यह पैकेज काउंटिंग रिसीएबल, पेएबल, इनवायिसिंग एवं इनवेन्ट्री की सुविधा देता है।
अवाकस कंप्यूटर्स लि०, ए-2/11, सफदरजंग एक्लेव, नई दिल्ली-110029 दूरभाषः 6192005	मौजैक	यह देवनागरी में उपलब्ध सम्पूर्ण डी०टी०पी० पैकेज है। इसमें पेजमेकर, शब्द संसाधन, डाटा संसाधन की सुविधा उपलब्ध है।
इंडियन कंप्यूर्स एंड ऑप्शन— प्रा०लि०, 213, अंजलि कॉम्प्लैक्स, 16, अंधेरी रोड, मुम्बई-400099 दूरभाषः 8205016, 8205267	चित्रलेखा	यह विन्डोज आधरित फोन्टसबेस पैकेज है, यह विन्डोज-3.11 तथा विन्डोज-95 के अधीन चलने वाले अंग्रेजी के सभी लोकप्रिय साफ्टवेअरों के साथ कार्य करता है।

संकलन : सुरेन्द्र कुमार, सहायक निदेशक (तकनीकी), राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) नई दिल्ली ।

होटल मैनेजमेंट में डिप्लोमा पाठ्यक्रम की प्रवेश परीक्षा में हिन्दी का विकल्प

दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स के 27.12.97 के अंक छपी एक सूचना के अनुसार नेशनल काउंसिल फार मैनेजमेंट एण्ड केटरिंग टैक्नॉलौजी, लाइब्रेरी एवन्यू, पूसा कम्पलैस, नई दिल्ली-110012 द्वारा देश के लगभग 20 बड़े-बड़े नगरों में स्थिल होटल मैनेजमेंट तथा केटरिंग के तीन वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम पढ़ाने वाले संस्थानों की संयुक्त प्रवेश परीक्षा 5 अप्रैल 1998 को आजोयित की जाएगी। इसमें अंग्रेजी भाषा के प्रश्न-पत्र को छोड़कर शेष सभी प्रश्न-पत्रों के उत्तर हिन्दी में भी दिए जाने का विकल्प होगा।

बिक्री अधिकारियों की भर्ती परीक्षा में हिन्दी का विकल्प।

साप्ताहिक रोजगार समाचार के 11 अक्तूबर 1997 के अंक में फर्टीलाइजर एण्ड कैमिकल्स ट्रावनकोर लिमिटेड, उद्योग मण्डल, केरल का एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ है जिसके अनुसार वे एक लिखित परीक्षा के आधार पर 24 बिक्री अधिकारियों की नियुक्ति की जाएगी। उक्त परीक्षा में हिन्दी का विकल्प होगा।

केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरों में उप निरीक्षकों की भर्ती परीक्षा में हिन्दी का विकल्प

साप्ताहिक रोजगार समाचार के 11 अक्तूबर 1997 के अंक में छपी एक सूचना के अनुसार सी॰बी॰आई॰ में उप निरक्षकों की भर्ती के लिए कर्मचारी चयन आयोग 8 फरवरी 1998 को एक परीक्षा लेगा। परीक्षा के भाग-एक प्रश्न-पत्र में 200 अकों के सामान्य वुद्धि तथा तर्क शक्ति, सामान्य जानकारी और संख्यात्मक योग्यता के प्रश्न होंगे। यह प्रश्न-पत्र हिन्दी तथा अंग्रेजी (द्विभाषी) रूप में छापे जाएंगे। परीक्षा के भाग-दो में अंग्रेजी भाषा का एक 200 अंकों का प्रश्न-पत्र भी होगा।

केन्द्रीय पुलिस बल में आशुलिपिकों/ टंककों की भर्ती परीक्षा में हिन्दी का विकल्प

दैनिक टाइम्स ऑफ इंडिया के 15 अक्तूबर 1997 के अंक में केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, का एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ है जिसके अनुसार 18 आशुलिपिकों और 185 टंककों के पदों के लिए आवेदन पत्र मांगे गये हैं। आवेदकों को आशुलिपि कला में 80 शब्द प्रतिमिनट हिन्दी अथवा अंग्रेजी में श्रुत लेख लिखने का विकल्प होगा और टंकण कला में हिन्दी में 30 शब्द प्रति मिनट अथवा अंग्रेजी में 40 शब्द प्रति मिनट टंकण करने का विकल्प होगा। इनका चयन एक लिखित प्रतियोगिता के आधार पर होगा जिसमें हिन्दी अथवा अंग्रेजी, सामान्य बुद्धि, गणना रुझान और लिपिकीय रुझान के प्रश्न-पत्र वस्तुपरक प्रकार के होंगे जो हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में छापे जाएंगे। इस प्रकार उक्त परीक्षा में हिन्दी का विकल्प दिया गया है।

कर्नाटक का अंग्रेजी पर पुनः प्रहार

दैनिक हिन्दुस्तान टाइम्स के 20 जून, 1997 के अंक में एक समाचार छपा है, जिसके अनुसार कर्नाटक सरकार के कन्नड़-विकास-अधिकरण के अध्यक्ष प्रो॰ चन्द्र शेखर पाटिल के नेतृत्व में कन्नड़ भाषा ब्रिगेड के कार्यकर्ताओं ने बंगलौर के निजी व्यापारिक संस्थानों द्वारा कन्नड़ की अवहेलना किये जाने के विरोध में छापे मारने आरम्भ कर दिये हैं। श्री पाटिल को कैबिनेट स्तर के मंत्री का दर्जा प्राप्त है। इन संस्थानों के केवल अंग्रेजी में बने नाम पट्टों आदि को हटाया जा रहा है। व्यपारिक घरानों और दुकानदारों को अपने बोर्ड 10 दिसम्बर 1997 तक कान्नड़ में सराए जाने के लिए समय दिया गया है। ऐसा सरकार के उस आदेश के अनुसार किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत कन्नड़ में नाम पट्टों का होना अनिवार्य है। प्रसंगवश, कन्नड़ सरकार ने कुछ वर्ष पूर्व सरकारी और गैर सरकारी प्राथमिक स्कूलों में अंग्रेजी की पढ़ाई बन्द करने के आदेश दिए थे जिनके विरोध में वहां के पब्लिक स्कूलों के संघ ने न्यायालय में याचिका दी थी। किन्तु उसे कर्नाटक के उच्च न्यायालय और फिर उच्चतम न्यायालय ने निरस्त कर दिया था। प्रो॰ पाटिल सरकारी और अर्द्ध-सरकारी कार्यालयों में कन्नड़ के प्रयोग सम्बन्धी सरकारी आदशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए अपने सहायकों के साथ विभिन्न कार्यालयों में अचानक छापे मारते हैं, इस प्रकार कन्नड़ के प्रयोग और अंग्रेजी के बहिष्कार के मामले में कन्नड़ सरकार की इमानदारी अन्य सभी सरकारों के लिए अनुकरणीय है। इस विषय में समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओंआदि में सूचनाएं और लेख तथा अग्र-लेख प्रकाशित करना-कराना भी आवश्यक है।

देश के विकास में अंग्रेजी सबसे बड़ी बाधा

दैनिक हिन्दुस्तान के 25 सितम्बर 1997 के अंक में तत्कालीन रक्षा मंत्री श्री मुलायम सिंह यादव का 24 सितम्बर 1997 को दिया गया एक भाषण छपा है जो उन्होंने सीमा सड़क संगठन द्वारा हिन्दी में प्रकाशित

विभागीय दिग्दर्शिका का विमोचन करते हुए दिया था। उनका कहना है देश को शक्तिशाली बनाने में अंग्रेजी सबसे बड़ी बाधा है। उन्होंने कहा कि आज़ादी के बाद से लेकर अब तक अंग्रेजी हमारे देश के सर्वांगीण विकास में सबसे बड़ी बाधा बनी हुई है। हिन्दी को क्षेत्रीय भाषाओं से कोई प्रतियोगिता नहीं है।

अंग्रेजी को गुलामी की भाषा बताते हुये श्री यादव ने कहा कि देश में एक तबका है जो इस बात की पैरवी करता रहता है कि अंग्रेजी दुनिया के देशों के बीच में एक संपर्क भाषा है। उनका मानना है कि यह भ्रामक प्रचार है। दरअसल अंग्रेजी उन्हीं देशों में प्रचलित है जो अंग्रेजी की गुलामी झेल चुके हैं। दुनिया में सिर्फ 6 देश हैं जहां अंग्रेजी का बोलबाला है। उन्होंने कहा कि जिस देश की अपनी भाषा और अपनी जबान नहीं वह देश कभी तरक्की नहीं कर सकता।

इन्हें भी आजमाइए (घरेलू नुस्खे)

कान का दर्द
- गेंदे के पत्तों का ताजा रस निकालकर कुछ बूंदें कान में टपकाएं।
- पुदीने के पत्तों का रस दो-तीन बूंद की मात्रा में कान में डालें।

दांत का दर्द
- सेंधा नमक, सफेद-जीरा, नीला थोथा व फिटकरी सबको पीसकर मंजन करें।
- अमरूद, शरीफे के 8-8 पत्ते, 8 लौंग व आधा चम्मच नमक को तीन कप पानी में उबालें. जब पानी आधा कप रह जाए तो उससे कुल्ला करें।

हाथ-पैर की खुजली
- नारियल तेल में कपूर या गंधक मिलाकर खुजली वाले स्थान पर मलें।

कील-मुंहासे झाइयां दूर करने के लिए
- आलू के रस में बेसन व कच्चा दूध प्रतिदिन लगाएं।
- केसर, कपूर और चंदन पीसकर लगाएं।
- मुल्तानी मिट्टी व कपूर को पीसकर लगाएं।
- त्रिफला के पानी से नियमित रूप से चेहरा धोएं।

सिर की जुएं व रूसी
- सीताफल के 8-10 बीज व 4-5 काली मिर्च, पानी में चटनी की तरफ पीस लें। इसे देसी घी में मिलाकर बालों व सिर की त्वचा पर मलें। 5-6 घंटे बाद सिर धो लें।

कट जाने पर खून बंद करने के लिए
- घाव पर गेंदे के पत्तों का रस लगाइए।
- उंगली कटने पर उसे मिट्टी के तेल में कुछ देर तक डुबोकर रखिए।
- कटे स्थापन पर पिसी हुई हल्दी लगाएं।

सिर दर्द
- माथे पर दालचीनी के अर्क का लेप करें।
- तुलसी के पत्तों को सुखाकर उसकी लुगदी बनाकर लेप करें।
- गर्मी से सिर दर्द होने पर जायफल को दूध में पीसकर लेप करें।
- सर्दी से सरदर्द होने पर अकरकरा पीसकर लेप करें।

आंखे दुखना
- त्रिफला के पानी से आंखों में छींटें दें।
- गर्मी से आंखे दुखने पर चिकनी मिट्टी को गीला करके उसकी टिकिया बनाकर आंखों पर लगाएं या मलाई लगाएं।

मुंह के छाले
- पपरिया कत्थे का लेप करें ।
- चमेली के पत्ते चबाएं।

फटे होंठ
- ग्लिसरीन व गुलाब जल लगाएं।
- त्रिफला को पानी में उबलकर या धनिया पीसकर उसके पानी से कुल्ला करें।

हिचकी
- एक माशा लौंग शहद में पीसकर चाटें।

खांसी
- सूखी खांसी होने पर एक माशा अदरक और दो माशे शहद मिलाकर चाटें।
- कफ वाली खांसी होने पर, सत मुलैठी तीन माशे, काली मिर्च तीन माशे और अंदाज का बूरा मिलाकर छोटी-छोटी गोलियां बनाकर सेवन करें।
- सर्दी की खांसी होने पर छः माशे मुलैठी, छः माशे अलसी, एक तोला मिश्री पानी में औटाएं और गुनगुना गर्म घोल पिएं।

पुरस्कार / प्रोत्साहन

भिलाई इस्पात संयंत्र दशम राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार वितरण समारोह

भिलाई इस्पात संयंत्र के राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित दशम राजभाषा प्रोत्साहन पुरस्कार वितरण समारोह 29 मार्च, 97 को सम्पन्न हुआ। भिलाई तकनीकी संस्थान के सभागार में आयोजित इस समारोह में मुख्य अतिथि संयंत्र के प्रबंध निदेशक श्री विक्रांत गुजराल एवं विशिष्ट अतिथि श्री रमेश नैय्यर, सम्पादक, "दैनिक भास्कर", रायपुर थे। अपने सम्बोधन में मुख्य अतिथि श्री गुजराल ने कहा कि हम एक ऐसे देश के वासी है जिसमें बहुत अधिक भाषाएं तथा बोलियां है तथापि हिन्दी भाषा एक ऐसा सूत्र है जो संविधान सम्मत है तथा हमारी एकता को अक्षुण्ण बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का लगातार निर्वाह कर रहा है। भिलाई लघु भारत का प्रतीक है। यहां पर हिन्दी के साधकों को सम्मानित किया गया, पुरस्कृत किया गया, उन्हें मैं बधाई देते हुए आग्रह करता हूं कि हिन्दी की सेवा में संलग्न रहें। हमें हिन्दी प्रचार कार्य को एक अभियान के रूप में लेना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि श्री रमेश नैय्यर ने अपने सम्बोधन में कहा कि आजादी के समय देखा गया स्वप्न आज आधी सदी बीतने के बाद भी साकार नहीं हो पा रहा है। हिन्दी को कभी भी राजाश्रय नहीं प्राप्त हुआ और अब हिन्दी को परवान चढाया जा रहा है। हिन्दी साधु-संतों, कबीर, मीरा और तुलसी की भाषा रही है। बीसवीं सदी के पहले दशक के उत्तरार्ध में पं० मदनमोहन मालवीय के प्रयास से यह संपर्क भाषा के रूप में स्थापित होने लगी थी। मन और वाणी से जब देश एक होगा तब ही हमारी आजादी पूरी होगी। हिन्दी को अन्य भाषाओं, लोक भाषाओं और बोलियों से अगर हम अलग करने लगे तो इसका स्वाभाविक विकास बाधित होगा। इस महासागर को झरनों, नालों तथा अन्य नदियों से काटना आत्मध्याती कदम होगा।

इस अवसर पर राजभाषा विभाग, भिलाई इस्पात संयंत्र के प्रतिष्ठित वार्षिक प्रकाशन "भिलाई भाषा भारती 1996-97" का विमोचन श्री रमेश नैय्यर द्वारा किया गया। विशिष्ट अतिथि श्री रमेश नैय्यर ने इस समारोह में 30 प्रतिशत से अधिक रोजमर्रा के कार्य हिन्दी में करने वाले 535 कार्मिकों में नकद राशि पुरस्कार के रूप में वितरित की। इसके साथ-साथ मुख्य अतिथि श्री विक्रांत गुजराल द्वारा विद्यालयीन प्रतियोगिताओं में 24 प्रतिभागी, संयंत्र स्तरीय नारा प्रतियोगिता में 20 एवं हिन्दी तथा हिंदीतर भाषी वर्ग भाषण प्रतियोगिता के 22 प्रतिभागियों को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया।

अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री विनय कुमार चतुर्वेदी, उप महाप्रबंधक (संपर्क प्रशासन व जन संपर्क) एवं राजभाषा अधिकारी ने कहा कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु "सेल" तथा केन्द्रीय शासन की अनेकानेक योजनाओं का लाभ संयंत्र के कार्मिकों को उपलब्ध कराया जा रहा है। इसी के तहत आज का यह दसवां आयोजन है। राजभाषा प्रगति प्रतिवेदन श्री करुणा शंकर तिवारी द्वारा प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर अधिशासी निदेशक (वित्त) श्री सी एम मूर्ति, महाप्रबंधक (का० व प्रशा०), श्री जी० उपाध्याय, महाप्रबंधक (शक्ति, ऊर्जा एवं पर्यावरण), श्री ओ पी धरनी, महाप्रबंधक (सुरक्षा), श्री एस के रस्तोगी, महाप्रबंधक (खदान), श्री डी पी बाजपेयी सहित संयंत्र के वरिष्ठ अधिकारी, यूनियन के पदाधिकारी तथा हिन्दी प्रेमी उपस्थित थे। डा० गिरीश जी० सिंघल, प्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया एवं श्री शैलेन्द्र श्रीवास्तव, वरिष्ठ प्रबंधक (संपर्क) ने अंत में आभार व्यक्त किया।

भारत तिब्बत सीमा पुलिस, केन्द्रीय अभिलेख कार्यालय क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं चालू की गई है। इसी क्रम में, राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में सर्वोत्कृष्ट कार्य करने वाले केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप, राजभाषा विभाग द्वारा प्रति वर्ष पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ये पुरस्कार क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलनों के अवसर पर प्रदान किए जाते हैं।

इस वर्ष अर्थात् वर्ष 1996-97 के लिए भारत तिब्बत सीमा पुलिस के दिल्ली स्थित केन्द्रीय अभिलेख कार्यालय को कार्यालयों की श्रृंखला में द्वितीय पुरस्कार के लिए चुना गया। भारत तिब्बत सीमा पुलिस का एक अन्य कार्यालय 22वीं वाहिनी जालंधर, पंजाब में स्थित है। यह कार्यालय वहां पर स्थित जालन्धर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का सदस्य है। यह समिति नगर में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सराहनीय कार्य कर रही है। राजभाषा विभाग द्वारा समिति को वर्ष 1996-97 में उत्तम कार्य निष्पादन के लिए द्वितीय पुरस्कार हेतु चयन किया गया। समिति के सदस्य सरकारी कार्यालयों में 22वीं वाहिनी भारत-तिब्बत सीमा पुलिस को द्वितीय पुरस्कार के लिए चयन किया गया।

राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 1996-97 के लिए क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन दिनांक 26-27 नवम्बर, 1997 को वाराणसी में डीजल रेल कारखाना के सभागार में किया गया। इस प्रकार भारत-तिब्बत सीमा पुलिस के दो भिन्न-भिन्न कार्यालयों को राजभाषा हिन्दी में सराहनीय कार्य निष्पादन हेतु वर्ष 1996-97 के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व भारत-तिब्बत सीमा पुलिस निदेशालय को वर्ष 1994-95 के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार योजना में राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ था।

आकाशवाणी पणजी में राष्ट्रध्वज तले राष्ट्रभाषा सम्मान

आकाशवाणी पणजी में गणतंत्र दिवस पर ध्वजारोहण पर स्टेशन इंजीनियर श्री सतीश चन्द्र गुप्ता ने राष्ट्रध्वज तले राष्ट्रभाषा हिन्दी के पुरस्कार प्रदान किए। हिन्दी अधिकारी श्री खगेश्वर प्रसाद यादव ने कार्यक्रम का संचालन किया। हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता के लिए श्रीमती संध्या अरविन्द शिरोडकर, श्री कमलाकान्त कालसेकर तथा श्रीमती स्वाती मावजेकर को प्रथम पुरस्कार तथा श्रीमती उमा नाईक, श्री दिलीप राजारामपंत पोहनेरकर को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री आई सुबानी साहेब, श्रीमती उषा नाईक, कुमार सिल्वीया लुईस, श्री दामोदार आठलेकर और श्री पी०वी० बशीर को भारत सरकार, राजभाषा विभाग की हिन्दी शिक्षण योजना की परीक्षाओं में सफल होने के कारण प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। इस अवसर पर स्टेशन इंजीनियर श्री सतीश चन्द्र गुप्ता ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 1950 को हमने भारतीय संविधान को लागू किया था जिसमें हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। इस राष्ट्रीय दिवस पर आकाशवाणी पणजी हिन्दी सेवियों का सम्मान कर हम गर्व का अनुभव करते हैं। आकाशवाणी पणजी राजभाषा समिति के सदस्य-सचिव श्री खगेश्वर प्रसाद यादव, हिन्दी अधिकारी ने गणतंत्र दिवस की शुभकामना के साथ कहा की राष्ट्रध्वज, राष्ट्र की भाषाएं हमारी राष्ट्रीयता की पहचान है। इस पर्व पर राष्ट्रध्वज के तले राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिन्दी के लिए सम्मानित होना राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करता है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जालंधर पुरस्कृत

जालंधर नगर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति श्रीमती एस०के० औलख, आयकर आयुक्त की अध्यक्षता में नगर में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने हेतु सराहनीय कार्य कर रही है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा 26-27 नवम्बर 1997 को वाराणसी में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान समिति को, वर्ष 1996-97 में उत्तम कार्य-निष्पादन के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। समिति के निम्नलिखित सदस्य कार्यालयों को भी पुरस्कृत किया गया:—

1. **सरकारी कार्यालय**
   आकाशवाणी जालंधर — प्रथम
   भारत-तिब्बत सीमा पुलिस — द्वितीय

2. **सरकारी बैंक**
   पंजाब एण्ड सिंध बैंक — प्रथम

3. **सरकारी निगम**
   भारतीय जीवन बीमा निगम — द्वितीय

भारतीय डाक विभाग

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल का कार्यालय, महाराष्ट्र सर्किल, मुंबई-400001

सर्किल कार्यालय के निम्नलिखित कर्मचारियों को दिनांक 1.4.96 से 31.3.97 तक की अवधि में 20 हजार या उससे अधिक शब्दों का हिन्दी टिप्पण/आलेखन में प्रयोग करने के लिए नकद पुरस्कार के रूप में दिये गये।

क्रम संख्या	कर्मचारी का नाम व पदनाम	मंजूर की गई राशि	पुरस्कार की श्रेणी
(1)	श्री वसंत धा० सावंत	रु० 400/-	प्रथम
(2)	श्रीमती इंदिरा अ० मोरे	रु० 400/-	प्रथम
(3)	श्रीमती मेधा रा० देशपांडे	रु० 200/-	द्वितीय

पद्मश्री डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे राष्ट्रीय विशिष्ट उपलब्धि सम्मान से विभूषित

नयी दिल्ली की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था मैनेजमेन्ट स्टडीस प्रोमोशन इंस्टीट्यूट ने कॉन्स्टीट्यूशन क्लब, नयी दिल्ली के स्पीकर सभागार में आयोजित अपने वार्षिक अखिल भारतीय भव्य तथा विशाल समारोह में उच्च शिक्षा तथा संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अवदान हेतु पद्मश्री प्रोफेसर लक्ष्मी नारायण दुबे को "आउट स्टेंडिंग एचीवमेन्ट नेशनल अवार्ड" से ससम्मान विभूषित किया। उनको यह राष्ट्रीय पुरुस्कार उत्तर प्रदेश तथा उड़ीसा के पूर्व राज्यपाल डॉ० बी० सत्यनारायण रेड्डी ने प्रदान किया जिसके अन्तर्गत स्वर्णिम प्रतीक चिन्ह, प्रशस्ति-पत्र तथा उपहार साम्री दी गयी।

पद्मश्री डॉ० लक्ष्मी नारायण दुबे ने अपने उद्बोधन में प्रबंधन को सर्वकल्याणकारी एवम राष्ट्र हित से जोड़ेने के प्रति आग्रह किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय उपभोकता कोरम के प्रमुख न्यायूमर्ति पी० सी० मल्होत्रा ने की।

हिन्दी में नोटिंग/ड्राफ्टिंग के लिए पुस्कार वितरण

एन० एच० पी० सी० में लागू विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं को रंगित जल-विद्युत परियोजना में भी यथावत लागू की गई है। उन योजनाओं में से हिन्दी में नोटिंग/ड्राफ्टिंग योजना के अन्तर्गत "ग" क्षेत्र के लिए निधारित 10,000 शब्द लेखन के अन्तर्गत वर्ष 1996 में हिन्दी में नोटिंग/ड्राफिटंग व पत्र लेखन आदि में 10,000 से अधिक शब्द लिखने पर निम्नलिखित अधिकारियों/कर्मचारियों को नकद पुरस्कार दिये गए:—

उपर्युक्त पुरस्कार परियोजना के मुख्य अभियंता श्री रमेश के कर कमलों द्वारा प्रदान किए गए।

	सर्वश्री	
1.	आर० एस० रावत, सहायक कार्य० प्रारूपकार	प्रथम
2.	एस० पी० विक्रम, कनिष्ठ अभियंता (सि०)	प्रथम
3.	एम० एम० मदान, वरि० प्रबंधक (सि०)	द्वितीय
4.	आर० एन० कश्यप, प्रबंधक (सि०)	द्वितीय
5.	ओंकार सिंह, चालक	तृतीय
6.	पी० के० साही	तृतीय
7.	एस० पी० दत्ता (यां)	तृतीय
8.	आर० के० पाण्डे, स० लेखा अधिकारी	तृतीय

महालेखा नियंत्रक, व्यय विभाग

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार सरकारी कामकाज में राजभाषा में हिन्दी के प्रति जागरूकता लाने तथा इसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से महालेखा नियंत्रक कार्यालय में 1 सितम्बर से 15 सितम्बर, 1997 तक हिंन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। इस दौरान कार्यालय में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपना अधिकांश सरकारी कामकाज हिन्दी में करने का अनुरोध किया गया। कार्यालय में दैनिक प्रयोग में आने वाले विभिन्न लेखा संबंधी शब्दांशों/वाक्यांशों के हिन्दी रूप तैयार किए गए और परिचालित किए गए।

स्वाधीनता की 50वीं वर्षगांठ और 'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर महालेखा नियंत्रक कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 15.9.97 को

सायं 4.00 बजे राजभाषा हिन्दी के संबंध में माननीय गृह मंत्री जी श्री इन्द्रजीत गुप्त का संदेश पढ़ा गया। इस अवसर पर महालेखा नियंत्रक महोदया ने कार्यालय में हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु 'हिन्दी निबंध' तथा 'हिन्दी वाद-विवाद' प्रतियोगिताएं आयोजित किए जाने की घोषणा की।

कार्यालय में दिनांक 25.9.97 को 'हिन्दी निबंध' प्रतियोगिता आयोजित की गई। 'हिन्दी निबंध' प्रतियोगिता में कार्यालय के 16 प्रतियोगियों ने भाग लिया। 'हिन्दी निबंध' प्रतियोगिता के हिन्दी एवं अहिन्दी भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार विजेताओं को क्रमशः 800 रु०, 500 रु०, 300 रु० एवं सभी प्रतियोगियों को 50 रु० के सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। हिन्दी भाषी प्रतियोगिता में श्री मलखान सिंह प्रथम, श्री प्रभु दयाल ने द्वितीय एवं श्री बी० एस० रावत ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। अहिन्दी भाषी 'हिन्दी निबंध' प्रतियोगिता में श्रीमती गीतामूर्ति प्रथम, श्री के० एस० राव ने द्वितीय एवं श्री ए० के० मजूमदार ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

कार्यालय की महालेखा नियंत्रक महोदया सुश्री निर्मला धुमे की अध्यक्षता में दिनांक 7.10.97 को 'हिन्दी वाद-विवाद' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल के लिए निदेशक (रा० भा०) राजस्व विभाग, श्री एस० के० मदान तथा श्री संदीप सक्सेना, सहायक महालेखा नियंत्रक को आंमत्रित किया गया। इस प्रतियोगिता में 9 प्रतियोगियों ने भाग लिया जिसमें श्री जगमोहन राणा प्रथम, श्री मलखान सिंह द्वितीय एवं श्री बी० एस० रावत तथा श्री वी० के० शर्मा ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए। एकमात्र अहिन्दी भाषी प्रतियोगी को 500 रु० का विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया तथा प्रत्येक प्रतियोगी को 50 रु० के सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए।

दिनांक 4.11.1997 को सायं 4.30 बजे 'हिन्दी निबंध' तथा 'हिन्दी वाद-विवाद' प्रतियोगिताओं के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजस्व विभाग के निदेशक (रा० भा०) श्री एस० के० मदान मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। कार्यालय की महालेखा नियंत्रक महोदया सुश्री निर्मला धुमे ने 'हिन्दी निबंध प्रतियोगिता तथा हिन्दी-वाद-विवाद' प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियों को सांत्वना पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। उन्होंने इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में होने वाली प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिक से अधिक कर्मचारी इन प्रतियोगिताओं में भाग लेंगे। पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि जिन्हें पुरस्कार नहीं मिला उन्हें अगले वर्ष ज्यादा तैयारी एवं उत्साह से इन प्रतियोगिताओं में भाग लेना चाहिए।

इस अवसर पर कविता पाठ तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस दौरान आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं विविध कार्यक्रमों का संचालन एवं संयोजन सहायक निदेशक (रा० भा०) श्रीमती विनीत कुलश्रेष्ठ ने किया।

लखनऊ अवार्ड काउन्सिल द्वारा केनरा बैंक को राजभाषा पुरस्कार

स्वतंत्रता की 50वीं वर्ष गांठ के उपलक्ष्य में लखनऊ अवार्ड काउन्सिल द्वारा आयोजित "एवार्ड अलंकरण समारोह" में केनरा बैंक को राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में उत्कृष्ट एवं सराहनीय योगदान के लिए राजभाषा एवार्ड से सम्मनित किया गया।

दिनांक 30 नवम्बर 97 को सायंकाल 5.00 बजे यह समारोह लखनऊ के राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह में आयोजित हुआ, जिसमें विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धियों हेतु उत्तर प्रदेश की 10 महान विभूतियों को सम्मानित किया गया। उक्त समारोह में श्री लालजी टण्डन, आवास एवं नगर विकास मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा हमारे उप महाप्रबंधक श्री के० वी० कृष्णमूर्ति को यह एवार्ड प्रदान किया गया।

हिन्दी वह धागा है, जो विभिन्न मातृ भाषाओं रूपी फूलों को पिरो कर भारत माता के लिए सुंदर हार का सृजन करेगा।

डॉ. जाकिर हुसैन

कार्यालय आदेश

संख्या 12024/5/97-रा०भा०(का०2)
भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग

लोक नायक भवन, खान मार्केट,
नई दिल्ली, दिनांक 27 फरवरी, 1998

कार्यालय ज्ञापन

विषयः—नई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन।

उपर्युक्त विषय के सम्बन्ध में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि राजभाषा विभाग ने देश के विभिन्न नगरों में पांच (5) नई नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का निर्णय लिया है। समितियों के नाम, अध्यक्ष एवं पता, बैठकें आयोजित करने के माह एवं समितियों को दी जाने वाली राशि के सम्बन्ध में विवरण निम्नलिखित है:—

समिति का नाम	अध्यक्ष का नाम, पदनाम एवं कार्यालय का पता	बैठकों के आयोजन हेतु निर्धारित माह	समिति को दी जाने वाली प्रति-पूर्ति राशि (रु० प्रति बैठक)
1. कोट्टयम	श्री के० जे० मैथ्यू, आई०ए०एस०, अध्यक्ष; रबड बोर्ड, पो० बा० नं० 280, सब जेल रोड, कोट्टयम-686002, केरल	सितम्बर/मार्च	रु० 1500/-
2. कासरगोड	श्री एम० के० नायर, निदेशक, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड-671124, केरल	जुलाई/जनवरी	रु० 1500/-
3. तुतुकडी	श्री एम०पी० महाजन, महाप्रबंधक, भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन, तमिलनाडु-628007	मई/नवंबर	रु० 1500/-
4. भंडारा	श्री अशोक कुमार मोहबे, जिला प्रबंधक, दूरसंचार विभाग, भंडारा-441904	मई/नवंबर	रु० 1500/-
5. सोलापुर	श्री विनोद दलवी, क्षेत्रीय प्रबंधक, बैंक आफ महाराष्ट्र, सोलापुर क्षेत्रीय कार्यालय, गायकवाड बिल्डिंग, प्लाट नं० 94, पुणे-रोड, सोलापुर-413002	जून/दिसम्बर	रु० 1500/-

2. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों से अनुरोध है कि अपने नगर में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि के वरिष्ठतम अधिकारियों के नाम/पदनाम एवं पतों की सूची तैयार करके उसकी एक प्रति राजभाषा विभाग को भिजवा दें।

3. समितियों की बैठकों पर होने वाले खर्च की प्रतिपूर्ति के रूप में प्रति समिति, प्रति बैठक 1500/- रु० (3000/- रु० वार्षिक अधिकतम) की राशि राजभाषा विभाग के सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों द्वारा, निर्धारित प्रपत्र में खर्च/उपयोग प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर, प्रदान की जाएगी।

4. समितियों के अध्यक्षों से अनुरोध है कि समितियों की बैठके निर्धारित माहों में आयोजित करवाने की व्यवस्था करें। बैठक की सूचना, बैठक के आयोजन की तिथि से कम-से-कम 15 दिन पूर्व राजभाषा विभाग (मुख्यालय), नई दिल्ली एवं सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्यान्वयन को भिजवाने की कृपा करें ताकि बैठक में राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। समिति के गठन के उद्देश्यों एवं कार्यकलापों से संबंधित एक स्वतः स्पष्ट टिप्पण इसके साथ आपकी जानकारी के लिए संलग्न किया जा रहा है। इस सम्बन्ध में अन्य किसी प्रकार के मार्गदर्शन के लिए राजभाषा विभाग (मुख्यालय) अथवा सम्बन्धित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय से सम्पर्क करें।

5. कृपया संलग्न प्रोफार्मा में समिति की गतिविधियों से संबंधित रिपोर्ट प्रत्येक बैठक की समाप्ति के बाद भिजवाने का कष्ट करे।

ह०/-
(ए०एस० गोदरे)
उप सचिव, भारत सरकार।
दूरभाषः 4618967

संख्या 11011/1/96-98-हिन्दी
भारत सरकार
पैट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय

शास्त्री भवन, नई दिल्ली
दिनांक 26 जनवरी, 1998

अधिसूचना

सा०आ०सं० _____ केन्द्रीय सरकार, राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए रयोग) नियम, 1976 के नियम 10 के उपनियम (4) के अनुसरण में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अधीनस्थ सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों के निम्नलिखित कार्यालयों को, जिनके 80 प्रतिशत कर्मचारी वृन्द ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, अधिसूचित करती है:—

आयल एण्ड नेचुरल गैस कार्पोरेशन

1. आयल एण्ड नेचुरल गैस कार्पोरेशन
   पश्चिमी क्षेत्र व्यापार केन्द्र कार्यालय
   बड़ौदा।

कोचीन रिफाइनरीज लि०

2. कोचीन रिफाइनरीज लि०
   अम्बलमुगल (केरल)

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन लि०

3. असारवा डिपो
   न्यू स्वदेशी मिल के सामने
   नरोड़ा रोड, अहमदाबाद।

4. नलिया ए एस एफ, इंडियन एअर फोर्स
   नलिया-370655 (गुजरात)

5. कोयाली टी ओ पी, गुजरात रिफाइनरी
   डाकघर-जवाहरनगर, जिला-बड़ौदा-391320

6. पुणे डिपो,
   1, आर बी एम रोड
   पुणे-01

7. नागपुर क्षेत्रीय कार्यालय,
   पोस्ट बाक्स नं०-8, दूसरा माला
   ओरिएन्टल बिल्डिंग, सरदार बल्लभ भाई पटेल मार्ग
   नागपुर-440 001

8. खापरी एल पी जी संयंत्र
   एल पी जी बाटलिंग प्लांट
   खापरी रेलवे स्टेशन के निकट
   नागपुर-440 003

9. खापरी डिपो
   वर्धा रोड, नागपुर

10. एल पी जी बाटलिंग प्लांट
    मंगलिया रेलवे स्टेशन के सामने
    मंगलिया, जिला-इंदौर-453771 (म०प्र०)

11. बल्क स्टोरेज डिपो,
    सेलारा यार्ड, रतलाम (म० प्र०)

12. जबलपुर ल्यूब डिपो
    रेलवे स्टेशन के पास
    जबलपुर (म०प्र०)

13. पी ओ एल डिपो
    मांगलिया गांव, इंदौर

14. सतना आई आर डी
    जिला-सतना-485001

15. प्रबंधक, समन्वयक कार्यालय
    गेल परिसर, विजयपुर
    जिला-गुना (म०प्र०)

16. सागर आई आर डी
    सागर (म०प्र०)

17. रायरू डिपो,
    ग्वालियर (म०प्र०)

हा०/-
(कृष्ण कान्त झा)
उप निदेशक (रा०भा०)

संख्या 11011/3/93-हिन्दी-II
भारत सरकार
कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन-मंत्रालय
(कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक अक्तूबर, 13, 1997.

अधिसूचना

का॰ आ॰ _____ राजभाषा नियम (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 (यथा संशोधित 1987) के नियम 10 के उपनियम (4) के अनुसार में केन्द्रीय सरकार, एतद् द्वारा, इस मंत्रालय के प्रशासनाधीन "कर्मचारी चयन आयोग" के निम्नलिखित क्षेत्रीय कार्यालय को, जिसके 80 प्रतिशत से अधिक कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्य-साधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, अधिसूचित करती है:—

कर्मचारी चयन आयोग, (उत्तर क्षेत्र)
ब्लॉक सं॰-12, सी॰जी॰ओ॰, कॉम्पलैक्स,
लोदी रोड, नई दिल्ली-110003.

ह॰/-
(ए॰के॰ भट्टराई)
निदेशक (प्रशासन)

संख्या ई-11012(1)/92-हिन्दी
भारत सरकार
उद्योग मंत्रालय
भारी उद्योग विभाग

नई दिल्ली, दिनांक 19-1-1998

अधिसूचना

का॰ आ॰ _____ केन्द्रीय सरकार, राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 के नियम 10 के उप-नियम (4) के अनुसरण में निम्नलिखित कार्यालय को, जिसके 80% कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, अधिसूचित करती है:—

(1) रिचर्डसन एण्ड क्रूडास (1972) लिमिटेड,
भारत सरकार का उपक्रम,
भारत यंत्र निगम लिमिटेड नियंत्रित,
एफ-3, एम॰आई॰डी॰सी॰ इंडस्ट्रीयल एस्टेट,
हिंगना मार्ग, नागपुर - 440 016.

ह॰/-
(पंकज अग्रवाल)
उप सचिव, भारत सरकार।

'हिन्दी भाषा की प्रसार वृद्धि करना, उसका विकास करना ताकि वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके तथा उसकी आत्मीयता में हस्तक्षेप किये बिना हिन्दुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप, शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए तथा जहाँ तक आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से तथा गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य होगा।'

– अनुच्छेद 351, भाग XVII, भारत का संविधान 1950

(साम्राज्यवादी गुलामी मिटाकर नव-निर्माण की दिशा में आज़ाद हिंद के फौज़ियों का तराना)

एक नया संसार बना लें, एक नया संसार.

आओ गायें नये तराने, आज़ादी के प्रीत के गाने
आज वसंत बहार देखो, आज वसंत बहार
एक नया संसार...
ऐसा एक संसार कि जिसमें धरती हो आधार
कि जिसमें जीवन हो आज़ाद
कि जिसमें भारत हो आज़ाद
जनता का हो राज जगत में, जनता की सरकार
जगे देश की गली-गली में, नवयुग का त्यौहार
एक नया संसार....
आज मन्दिरों की दीवारें डोल उठीं
आज मसज़िदों की मीनारें बोल उठीं
कहती बारम्बार पुकार-पुकार
बन्द करो मज़हब के झगड़े आपस की तकरार
एक नया संसार....
क्या तुम मेरे संग चलोगी, भारत दिशा की ओर
क्या तुम मेरे संग चलोगी, आज़ादी या हो मौत
मैं तुम्हारे संग चलूंगी, भारत दिशा की ओर
मैं तुम्हारे संग चलूंगी, आज़ादी या हो मौत !!
एक नया संसार....

(" लोकशक्ति पुरूष नेता जी " पुस्तक से साभार)

पं. सं. 3246/77

आई एस एस एन 0970-9398

(24 अक्तूबर, 1943 को आज़ाद हिंद फौज़ में 'रानी झांसी रेजीमेंट' की स्थापना के अवसर पर गाया गया गीत)

हम भारत की बेटी हैं, अब उठा चुकीं तलवार
हम मरने से नहीं डरतीं,
नहीं पीछे पांवों को धरतीं,
आगे ही आगे बढ़ती,
कस कमर हुई तैयार
हम भारत की बेटी हैं....

हम नये नहीं हैं लड़ाके
देखो इतिहास उठाके
हम क्षत्राणी भारत की
दिखला देंगी निज वार
हम भारत की बेटी हैं....

जब कर किरपान उठातीं
फिर काल रूप बन जातीं
रुधिरों से प्यास बुझातीं
थर्रा देती हैं संसार
हम भारत की बेटी हैं....

हम हरगिज दम न लेंगी
दुख-दर्द औ कष्ट सहेंगी
दुश्मन को चीर धरेंगी
कह रहीं पुकार-पुकार
हम भारत की बेटी हैं.....

जब तक बाहों में बल है
धमनियों में रक्त प्रबल है
दिल में नहीं पल भर कल है
बिना किये देश उद्धार
हम भारत की बेटी हैं.....

(" लोकशक्ति पुरुष नेता जी " पुस्तक से साभार)

राजभाषा विभाग, भारत सरकार, (गृह मंत्रालय) लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए उप संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार फोटोलिथो मुद्रणालय फरीदाबाद द्वारा मुद्रित ।